विषयानुक्रमणिका

1.	परिचय	7–10
2.	उद्देश्य	10–11
3.	कार्यक्रम एवं गतिविधियाँ	11
4.	मण्डल, समिति एवं अधिकारी	12
5.	कुलपति	13
6.	कुलसचिव	14
7.	वित्ताधिकारी	14
8.	छात्र कल्याण संकाय	14
9.	कुलानुशासक	15
10.	मुख्य सतर्कता अधिकारी	15
11.	सङ्काय एवं विभाग	15–45
	वेद–वेदाङ्ग–सङ्काय	
	साहित्य एवं संस्कृति सङ्काय	
	दर्शन सङ्काय	
	आधुनिक ज्ञान–विज्ञान संकाय	
12.	शोध एवं प्रकाशन–विभाग	45–48
13.	विभिन्न संगोष्ठियाँ एवं स्मारक व्याख्यानमाला	48
14.	अध्ययन पाठ्यक्रम	49–50
15.	छात्रवृत्ति	50
16.	परीक्षा–विभाग	50–51
17.	अन्य शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियाँ	51–58
18.	शैक्षणिक एवं गैर–शैक्षणिक पद	58
19.	आरक्षण एवं अन्य प्रावधान	58–60
20.	आन्तरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ	60–61
21.	कैरियर काउंसलिंग सेल	61
22.	महिला अध्ययन केन्द्र	62–63
23.	संगणक केन्द्र	63–64
24.	जन–सूचना अधिकार अधिनियम के अन्तर्गत प्राधिकृत अधिकारी	65–67
25.	आधार–संरचना एवं भवन	68–72
26.	ई–पीजी पाठशाला	72
27.	सेवानिवृत्तियाँ	73
28.	परिषदें, समितियाँ एवं विद्यापीठीय कर्मचारी	75–79
29.	अनुलग्नक 1,2,3	80–102

Dr. Justice Mukundakam Sharma
(Former Judge, Supreme Court of India)
Chairman
Vansadhara Water Disputes Tribunal

Off. : 5th Floor, Mohan Singh Place, Baba Kharak Singh Marg
New Delhi-110001 Ph.:
Ph.: 23368322, Fax : 23368327
Email : mukundakam@gmail.com

संदेश

श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ ने शैक्षणिक सत्र 2015-16 के दौरान एक महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया है । मुझे यह जानकारी देते हुए बड़ी प्रसन्नता हो रही है कि यह वर्ष विद्यापीठ के लिए बहुत सफल रहा है क्योंकि राष्ट्रिय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद (NAAC) की विशेषज्ञ समिति द्वारा परीक्षण एवं मूल्यांकन के आधार पर प्रदत्त संस्तुतियों को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रिय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद (NAAC) ने विद्यापीठ को द्वितीय चरण में 5 वर्षों के लिए 'ए' ग्रेड प्रदान किया है । विद्यापीठ ने सफलतापूर्वक, पूर्वस्नातक स्तर के पाठ्यक्रमों में विकल्पाधारित क्रेडिट प्रणाली लागू की है । मुझे यह भी ज्ञात हुआ है कि परीक्षा प्रणाली में भी विभिन्न सुधार किये गये हैं । विद्यापीठ की विभिन्न उपलब्धियाँ भी प्रतिवेदन में दी गई हैं । विशेषकर 15वें दीक्षांत समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें माननीय मानव संसाधन विकास मंत्री ने स्नातकों को सम्बोधित किया तथा विद्यापीठ के सम्बन्ध में हमारे स्वर्गीय प्रधानमंत्री-श्री लाल बहादुर शास्त्री के स्वप्न को साकार करने के लिए समुचित समर्थन देने का आश्वासन दिया । जो सफलता हमें अभी तक प्राप्त हुई है, वह हमारे शिक्षकों, छात्रों एवं कर्मचारियों के दृढ़ प्रयासों तथा विद्यापीठ की शासकीय संस्था- मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के सम्मानित सदस्यों के असाधारण समर्थन एवं मार्गदर्शन तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के सहयोग के बिना सम्भव नहीं हो पाती ।

विद्यापीठ, शास्त्री परम्परा एवं शास्त्रों की व्याख्या के अपने मुख्य उद्देश्यों की पूर्ति कर रहा है तथा वर्तमान समाज की विभिन्न समस्याओं के परिप्रेक्ष्य में उनकी उपादेयता स्थापित करने की दिशा में प्रयत्नशील है तथा ज्योतिष, वास्तुशास्त्र, पौरोहित्य इत्यादि क्षेत्रों में विशेषज्ञता प्रदान कर रहा है । विद्यापीठ, निरन्तर शैक्षणिक विकास, अनुसंधान एवं विकास, कार्यशालाओं के आयोजन, संगोष्ठी एवं व्याख्यानमालाओं के आयोजन द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में योगदान दे रहा है ताकि उच्चस्तरीय ऊँचाई प्राप्त कर, पारंपरिक शिक्षा की प्रक्रिया का स्तर बढ़ाया जा सके । विद्यापीठ की समर्पित प्रतिबद्ध समिति इस दिशा में कार्यरत है ।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि आने वाले कई वर्षों तक विद्यापीठ शास्त्रीय शिक्षा के संवर्धन एवं विकास के क्षेत्र में योगदान देता रहेगा तथा विश्वस्तरीय सार्वजनिक संस्था के रूप में फलता-फूलता रहेगा । मैं विद्यापीठ की उत्कृष्टता के लिए समर्पित इसके कुलपति, संकाय सदस्यों एवं स्नातकों के प्रति कृतज्ञ हूँ । मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार एवं विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के समर्थन के लिए भी आभारी हूँ एवं मुझे पूर्ण विश्वास है कि विद्यापीठ भविष्य में नई ऊँचाईयों को अवश्य प्राप्त करेगा । मैं इस प्रतिवेदन को संकलित करने के लिए सम्पादकीय मण्डल को शुभकामनाएं देता हूँ ।

मुकुन्दकाम शर्मा
(डॉ मुकुंदकाम शर्मा)

विद्यापीठ की प्रायोजक सोसाइटी की संचालक मंडल (शासी निकाय)

क्र.स.	नाम व पता
1	माननीय मंत्री मानव संसाधन विकास मंत्रालय शास्त्री भवन, नई दिल्ली
2	माननीय राज्य मंत्री मानव संसाधन विकास मंत्रालय शास्त्री भवन, नई दिल्ली
3	माननीय राज्य मंत्री मानव संसाधन विकास मंत्रालय शास्त्री भवन, नई दिल्ली
4	सचिव मानव संसाधन विकास मंत्रालय (उच्चतर शिक्षा विभाग) शास्त्री भवन, नई दिल्ली
5	संयुक्त सचिव एवं वित्तीय सलाहकार मानव संसाधन विकास मंत्रालय (उच्चतर शिक्षा विभाग) शास्त्री भवन, नई दिल्ली
6	कुलपति श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ, बी-4, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली-110016
7	कुलपति राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ, तिरूपति (आंध्र प्रदेश)
8	कुलपति राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान 56-57, इंस्टीट्यूशनल एरिया, जनकपुरी, नई दिल्ली
9	संयुक्त सचिव (केन्द्रीय विश्वविद्यालयों और भाषाएँ) मानव संसाधन विकास मंत्रालय (उच्चतर शिक्षा विभाग) शास्त्री भवन, नई दिल्ली

प्रबन्धन मण्डल के सदस्यों की सूची

क्रम स०	नाम एवं पता	पदनाम
1	डॉ. सुखबीर सिंह संधु संयुक्त सचिव मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, शास्त्री भवन, नई दिल्ली	अध्यक्ष (18/11/2014 से 8/4/15)
2	प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय कुलपति श्री ला.ब.शा.रा.सं. विद्यापीठ	अध्यक्ष (9/4/15 से आज तक)
3	श्री चमूकृष्ण शास्त्री वरिष्ठ सलाहकार, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, नई दिल्ली	सदस्य (22/12/14 से आज तक)
4	डॉ. चॉद किरण सलुजा निदेशक, संस्कृत पदोन्नति फाउण्डेशन नई दिल्ली	सदस्य (29/12/14 से आज तक)
5	प्रो. वी. कुटुम्ब शास्त्री कुलपति, सोमनाथ संस्कृत विश्वविद्यालय, गुजरात	सदस्य (22/12/14 से आज तक)

6	प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी पूर्व कुलपति, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली	सदस्य (22/12/14 से आज तक)
7	प्रो. कृष्णकान्त शर्मा आचार्य, वैदिक दर्शन, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी	सदस्य (22/12/14 से आज तक)
8	प्रो. वीर सागर जैन संकाय प्रमुख, दर्शन संकाय श्री ला.ब.शा.रा.सं. विद्यापीठ	सदस्य (29/5/2015 तक)
9	प्रो. इच्छाराम द्विवेदी संकाय प्रमुख, साहित्य एवं संस्कृति संकाय श्री ला.ब.शा.रा.सं. विद्यापीठ	सदस्य (31/5/15 तक)
10	प्रो. रमेश प्रसाद पाठक संकाय प्रमुख, आधुनिक ज्ञान-विज्ञान संकाय श्री ला.ब.शा.रा.सं. विद्यापीठ	सदस्य (11/9/15 से आज तक)
11	प्रो. हरिहर त्रिवेदी संकाय प्रमुख, वेद-वेदांग संकाय श्री ला.ब.शा.रा.सं. विद्यापीठ	सदस्य (11/9/15 से आज तक)
12	प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय प्रोफेसर (शोध एवं प्रकाशन) श्री ला.ब.शा.रा.सं. विद्यापीठ	सदस्य (1/6/13 से 31/5/15 तक)
13	प्रो. नागेन्द्र झा प्रोफेसर शिक्षाशास्त्र विभाग श्री ला.ब.शा.रा.सं. विद्यापीठ	सदस्य (14/9/15 से आज तक)
14	डॉ. संगीता खन्ना, सह-प्रोफेसर, सर्वदर्शन विभाग श्री ला.ब.शा.रा.सं. विद्यापीठ	सदस्य (20/4/15 से आज तक)
15.	डॉ. बीके. महापात्र कुलसविच श्री ला.ब.शा.रा.सं. विद्यापीठ	सचिव

अधिकारी गण

1. कुलाधिपति – न्यायमूर्ति डॉ. मुकुन्दकाम शर्मा
2. कुलपति – प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय
3. कुलसचिव – डॉ. बी. के. महापात्र
4. वित्ताधिकारी – श्रीमती कल्पना सिंह
5. संकाय प्रमुख – प्रो. रमेश प्रसाद पाठक, आधुनिक ज्ञान-विज्ञान संकाय
   प्रो. हरिहर त्रिवेदी, वेद-वेदांग संकाय
   प्रो. महेश प्रसाद सिलोड़ी, दर्शन संकाय
   प्रो. भागीरथि नंद, साहित्य एवं संस्कृति संकाय
6. छात्र कल्याण संकाय – प्रो. कमला भारद्वाज
7. कुलानुशासक – प्रो. प्रेम कुमार शर्मा

परिचय

अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन के कलकत्ता अधिवेशन में लिये गये निर्णय के अनुपालन में 8 अक्तूबर, 1962 को विजयदशमी के दिन दिल्ली में संस्कृत विद्यापीठ की स्थापना की गई। डॉ. मण्डन मिश्र को विद्यापीठ का विशेष कार्याधिकारी एवं निदेशक नियुक्त किया गया। सम्मेलन में लिये गए निर्णय के अनुसार **अखिल भारतीय संस्कृत विद्यापीठ** नाम से एक पृथक् संस्था स्थापित की गई। इसके संस्थापक अध्यक्ष तत्कालीन प्रधानमन्त्री श्री लाल बहादुर शास्त्री जी थे। विद्यापीठ के सर्वाङ्गीण विकास में तत्कालीन प्रधानमंत्री की प्रेरणा एवं मार्गदर्शन का महत्त्वपूर्ण योगदान है। प्रधानमन्त्री श्री लाल बहादुर शास्त्री जी ने संस्कृत विद्यापीठ को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की संस्था के रूप में विकसित होने की कामना की थी।

माननीय शास्त्री जी के आकस्मिक निधन के पश्चात् तत्कालीन प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने विद्यापीठ की अध्यक्षता स्वीकार की । उन्होंने घोषणा की कि 2 अक्तूबर, 1966 से विद्यापीठ को **श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ** के नाम से जाना जाएगा। भारत सरकार द्वारा 1 अप्रैल, 1967 को विद्यापीठ का अधिग्रहण किया गया। 21 दिसम्बर, 1970 को **श्री लाल बहादुर शास्त्री केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ**, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली (एक पंजीकृत स्वायत्त संस्था, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार) का अंग बन गया।

विद्यापीठ में संस्कृत वाङ्मय के पठन-पाठन, प्राचीन संस्कृत पाण्डुलिपि के संकलन एवं प्रकाशन, संस्कृत साहित्य की परम्परागत शिक्षण विधा को बनाये रखने और अनुसन्धान आदि कार्यों तथा इसके सर्वतोन्मुखी विकास से प्रभावित होकर मार्च, 1983 में भारत सरकार ने इसको मानित-विश्वविद्यालय का स्तर देने का प्रस्ताव रखा। अन्ततः आवश्यक परीक्षण एवं मूल्याङ्कन के पश्चात् भारत सरकार ने **विश्वविद्यालय अनुदान आयोग** की संस्तुति को दृष्टि में रखते हुये नवम्बर, 1987 में विद्यापीठ को मानित-विश्वविद्यालय का स्तर प्रदान किया।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की संस्तुति पर राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान से पृथक् एक संस्था **श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ** के नाम से तत्कालीन मानव संसाधन विकास मन्त्री श्री पी.वी. नरसिंह राव की अध्यक्षता में 20 जनवरी, 1987 को पञ्जीकृत की गयी । डॉ. मण्डन मिश्र 1989 में विद्यापीठ के प्रथम कुलपति नियुक्त हुए। विद्यापीठ ने 1 नवम्बर, 1991 से मानित-विश्वविद्यालय के रूप में कार्य करना प्रारम्भ किया।

विद्यापीठ में चार संकाय हैं- वेद-वेदाङ्ग सङ्काय, दर्शन सङ्काय, साहित्य-संस्कृति सङ्काय एवं आधुनिक ज्ञान-विज्ञान सङ्काय। प्रारम्भ के तीन सङ्कायों में विभिन्न शास्त्रीय विषयों में शास्त्री, शास्त्री (सम्मानित) नामक उपाधि हेतु त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम एवं स्नातकोत्तर उपाधि हेतु आचार्य नामक द्विवर्षीय पाठ्यक्रम के अध्ययन-अध्यापन की व्यवस्था की गई है। आधुनिक ज्ञान-विज्ञान सङ्काय में शिक्षा-शास्त्री नामक द्विवर्षीय अध्यापक-प्रशिक्षण-पाठ्यक्रम तथा शिक्षाशास्त्र में उच्च-स्तरीय अध्ययन हेतु शिक्षाचार्य नामक द्विवर्षीय पाठ्यक्रम

का प्रवर्तन किया गया है। उपर्युक्त चारों सङ्कायों में संस्कृत की विभिन्न शास्त्रीय शाखाओं एवं शिक्षाशास्त्र में शोधकार्य करने हेतु विशिष्टाचार्य, विद्यावारिधि एवं विद्यावाचस्पति पाठ्यक्रम की व्यवस्था है।

विद्यापीठ में संस्कृत शोध, पाण्डुलिपियों के प्रकाशन एवं संरक्षण के लिये एक स्वतन्त्र विभाग है। इस विभाग द्वारा न केवल प्राचीन पाण्डुलिपियों का अन्वेषण किया जाता है, अपितु संस्कृत-साहित्य के विद्वानों की उत्कृष्ट रचनाओं का प्रकाशन भी किया जाता है। साथ ही त्रैमासिक शोध-पत्रिका 'शोध-प्रभा' का प्रकाशन भी किया जाता है। विभागीय स्तर पर ज्योतिष विभाग द्वारा 'विद्यापीठ-पंचांग' और 'भैषज्य-ज्योतिषम्' नामक वार्षिक पत्रिका का प्रकाशन किया जाता है। वास्तुशास्त्र विभाग द्वारा प्रतिवर्ष वास्तु शास्त्र विमर्श नामक शोध पत्रिका प्रकाशित की जाती है। विद्यापीठ में संगणक केन्द्र और महिला अध्ययन केन्द्र स्थापित किया गया है। महिला अध्ययन केन्द्र द्वारा शोधपत्रिका "सुमंगली" का प्रकाशन किया जाता है।

विद्यापीठ में 1994-95 के सत्र से शास्त्री पाठ्यक्रम के साथ-साथ व्यावसायिक संस्कृत, व्यावसायिक हिन्दी एवं संगणक प्रयोग सम्बन्धी पाठ्यक्रम और विभिन्न प्रमाणपत्रीय पाठ्यक्रम को नियमित रूप से अध्ययन-अध्यापन में सम्मिलित किया गया है। विद्यापीठ के वर्तमान कुलाधिपति न्यायमूर्ति डॉ. मुकुंदकाम शर्मा और कुलपति प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय के कुशल नेतृत्व और प्रशासनिक दक्षता से शैक्षणिक के क्षेत्र में विद्यापीठ निरंतर प्रगतिपथ पर अग्रसर है।

15 वें दीक्षांत समारोह के अवसर पर मंच पर विराजमान माननीय मानव संसाधन विकास मंत्री, अन्य अधिकारी एवं अतिथि गण।

15 वें दीक्षांत समारोह के अवसर पर माननीय मानव संसाधन विकास मंत्री द्वारा विद्वानों को मानद उपाधि प्रदान की गई।

संस्कृत विद्यापीठ द्वारा अपने निर्धारित उद्देश्यों को दृष्टि में रखते हुये विशेष दीक्षान्त समारोह 3 दिसम्बर, 1993 को राष्ट्रपति भवन, नई दिल्ली में आयोजित किया गया । इस समारोह में भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. शङ्कर दयाल शर्मा को विद्यापीठ की मानद उपाधि 'वाचस्पति' प्रदान की गयी । विद्यापीठ का प्रथम दीक्षान्त समारोह 15 फरवरी, 1994 को विद्यापीठ परिसर में सम्पन्न हुआ, जिसमें राष्ट्रपति डॉ. शङ्कर दयाल शर्मा ने प्रथम दीक्षान्त भाषण दिया। विद्यापीठ का द्वितीय दीक्षान्त समारोह 11 जनवरी, 1996, तृतीय दीक्षान्त समारोह 11 जनवरी, 1999, चतुर्थ दीक्षान्त समारोह 11 फरवरी, 2000, पञ्चम दीक्षान्त समारोह 28 फरवरी, 2001, षष्ठ दीक्षान्त समारोह 17 फरवरी, 2002, सप्तम दीक्षान्त समारोह 11 नवम्बर, 2003, अष्टम दीक्षान्त समारोह 12 नवम्बर, 2005, नवम दीक्षान्त समारोह 10 नवम्बर, 2006, दशम दीक्षान्त समारोह 28 नवम्बर, 2007, एकादश दीक्षान्त समारोह 06 दिसम्बर, 2008, द्वादश दीक्षान्त समारोह 7 नवम्बर, 2009, त्रयोदश दीक्षान्त समारोह दिनांक 26 नवम्बर, 2010 तथा चतुर्दश दीक्षान्त समारोह 7 जनवरी, 2013 को सम्पन्न हुआ । पंद्रहवां दीक्षान्त समारोह 27 नवम्बर, 2015 को आयोजित हुआ जिसमें माननीय मंत्री श्रीमती स्मृति जुविन ईरानी, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार मुख्य अतिथि थी।

15 वें दीक्षांत समारोह के अवसर पर एन.सी.सी छात्रों द्वारा माननीय मानव संसाधन विकास मंत्री का स्वागत।

प्रो. पंकज चांदे की अध्यक्षता में सात सदस्यीय नैक समिति द्वारा दिनांक 12 मई 2015 से 15 मई 2015 तक विद्यापीठ का दौरा किया। नैक समिति द्वारा विद्यापीठ के बहुआयामी उपलब्धियों का मूल्यांकन किया गया तथा विद्यापीठ के कर्मचारी और अधिकारीगण से चर्चा की गई। समिति द्वारा विद्यापीठ के बहुआयामी उपलब्धियों का मूल्यांकन करने के पश्चात् विद्यापीठ को आगामी पॉच वर्षो के लिए 'ए' ग्रेड प्रदान किया गया।

नैक पीयर टीम के सदस्यों के साथ उपस्थित विद्यापीठ के कुलपति एवं अन्य अधिकारी गण।

श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ शास्त्रीय पारम्परिक विषयों के अध्ययनाध्यापन एवं गहन अनुसन्धान के द्वारा भारतीय शैक्षणिक परम्परा का संरक्षण करते हुये आज के इस संगणक युग में आधुनिक वैज्ञानिक शैक्षणिक परम्पराओं से समन्वय स्थापित करने का सार्थक प्रयास कर रहा है। संस्कृत स्नातकों को रोजगारपरक शिक्षण प्रदान करते हुये संस्कृत के कुशल शिक्षकों के निर्माण में शिक्षाशास्त्र विभाग के माध्यम से सतत प्रयत्नशील है । फलस्वरूप विद्यापीठ के छात्र एवं अनुसन्धाता देश एवं विदेश की प्रतिष्ठित संस्थाओं में अपनी प्रतिभा और कौशल के साथ कार्यरत हैं ।

२. उद्देश्य

श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली की स्थापना के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं:-

(क) शास्त्रीय परम्परा को संरक्षित करना ।

(ख) शास्त्रों की व्याख्या करना ।

(ग) आधुनिक परिप्रेक्ष्य में समस्याओं के समाधान के लिए संस्कृत भाषा में विरचित प्राचीन शास्त्रों का औचित्य स्थापित करना ।

(घ) अध्यापकों के लिए आधुनिक एवं शास्त्रीय ज्ञान में गहन प्रशिक्षण हेतु साधन उपलब्ध कराना ।

(ङ) उपर्युक्त सभी क्षेत्रों में प्रवीणता प्राप्त करना, जिससे विद्यापीठ का अपना एक विशिष्ट चरित्र हो।

उपर्युक्त उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु प्रयास करते हुए विद्यापीठ अधोनिर्दिष्ट क्षेत्रों में निरन्तर कार्य कर रहा है:-

1. पारम्परिक संस्कृत वाङ्मय के साथ-साथ उसके अतिविशिष्ट शाखाओं के ज्ञान हेतु शिक्षण सुनिश्चित करना ।
2. संस्कृत के अध्यापकों के प्रशिक्षणार्थ साधनों का सुलभीकरण और संस्कृत शिक्षा से सम्बद्ध प्रासङ्गिक पक्षों पर शोध ।
3. संस्कृत अध्यापन से सम्बन्धित एशिया की विभिन्न भाषाओं एवं साहित्य के गहन अध्ययन एवं गवेषणार्थ सुविधाओं का सुलभीकरण, जिनमें पाली, इरानी, तिब्बती, मंगोली, चीनी, जापानी आदि भाषाएं एवं साहित्य प्रमुख हैं ।
4. अध्ययन-अध्यापन हेतु विभिन्न विषयों के लिए पाठ्यक्रम का निर्धारण, भारतीय संस्कृति और मूल्यों पर विशेष ध्यान रखना तथा संस्कृत और संबद्ध विषयों में परीक्षाओं का सञ्चालन ।
5. संस्कृत के मौलिक ग्रन्थों, टीकाओं का अनुवाद। उनसे सम्बद्ध साहित्य का प्रकाशन, प्रकाशित एवं अप्रकाशित सामग्री का संवर्धन ।
6. शोध-पत्रिका एवं शोधोपयोगी अनुसन्धान-प्रपत्रों, विषय सूची और ग्रन्थ-सूची आदि का प्रकाशन ।
7. पाण्डुलिपियों का सङ्कलन, संरक्षण एवं प्रकाशन, राष्ट्रिय संस्कृत पुस्तकालय और संग्रहालय का निर्माण। संस्कृत पाण्डुलिपियों में प्रयुक्त लिपियों के प्रशिक्षण का प्रबन्धन ।
8. संस्कृत में आधुनिक तकनीकी साहित्य के साथ मौलिक संस्कृत ग्रन्थों के सार्थक निर्वचनों की दृष्टि से आधुनिक विषयों में शिक्षणार्थ साधनों की प्रस्तुति ।
9. पारस्परिक ज्ञानवर्धन के लिये आधुनिक एवं परम्परागत विद्वानों के मध्य अन्तःक्रिया का संवर्धन ।
10. शास्त्र-परिषदों, सङ्गोष्ठियों, सम्मेलनों और कार्यशालाओं का आयोजन ।
11. अन्य शिक्षण संस्थानों की उपाधियों, प्रमाण-पत्रीय पाठ्यक्रमों को विद्यापीठ की उपाधियों के समकक्ष मान्यता ।
12. विभागों एवं सङ्कायों की स्थापना और विद्यापीठ के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए आवश्यक मण्डलों एवं समितियों का गठन ।
13. स्वीकृत नियमों के अन्तर्गत छात्रवृत्तियों, अध्येतावृत्तियों, पुरस्कारों व पदकों का संस्थापन एवं वितरण।
14. विद्यापीठ के उद्देश्यों से पूरी तरह या अंशतः समान उद्देश्य वाले सङ्गठनों, समितियों या संस्थानों का सहयोग एवं उनकी सदस्यता तथा उनमें सहभागिता ।
15. विद्यापीठ के किसी एक या समस्त उद्देश्यों की पूर्ति के लिए प्रासङ्गिक, आवश्यक या सहायक कार्य-कलापों का सम्पादन ।

३. कार्यक्रम एवं गतिविधियाँ

विद्यापीठ के संस्थापित उद्देश्यों की पूर्ति हेतु अधोदर्शित कार्यक्रमों एवं गतिविधियों का सञ्चालन किया जा रहा है-

1. स्नातक, स्नातकोत्तर एवं शोध स्तर पर परम्परागत शैक्षणिक प्रविधियों के साथ-साथ आधुनिक पद्धतियों से संस्कृत वाङ्मय का अध्यापन ।

2. स्नातक व स्नातकोत्तर स्तर पर छात्राध्यापकों का प्रशिक्षण ।
3. विभिन्न विभागों में रोजगारोन्मुख प्रमाणपत्र, डिप्लोमा एवं अंशकालिक पाठ्यक्रमों का सञ्चालन ।
4. स्नातक, स्नातकोत्तर आदि उच्च शैक्षणिक स्तर की परीक्षाओं का सञ्चालन ।
5. समान-हित वाली संस्कृत योजनाओं में अन्य सङ्गठनों के साथ सहयोग ।
6. संस्कृत वाङ्मय पुस्तकालय का सम्वर्द्धन ।
7. पाण्डुलिपि संग्रह, दुर्लभ पाण्डुलिपियों एवं महत्त्वपूर्ण पुस्तकों का सम्पादन एवं प्रकाशन ।
8. शोधपत्रिका 'शोधप्रभा' एवं 'वास्तुशास्त्रविमर्श', 'भैषज्य ज्योतिषम्', 'सुमंगली' तथा 'पञ्चाङ्ग' का नियमित वार्षिक प्रकाशन ।
9. विविध व्याख्यानमालाओं एवं कार्यशालाओं का आयोजन ।
10. गोष्ठियों एवं सम्मेलनों का विभागीय स्तरों पर नियमित आयोजन ।
11. ज्योतिष, वास्तु, पौरोहित्य, योग और सङ्गणक में व्यावसायिक पाठ्यक्रमों का सञ्चालन ।
12. छात्रों के लिये विभिन्न शैक्षणिक क्रिया-कलापों का नियमित प्रवर्तन ।
13. शारीरिक शिक्षण, क्रीड़ा, खेल-कूद के साथ-साथ एन.सी.सी. और एन.एस.एस. आदि का सञ्चालन ।
14. संस्कृत सप्ताह, हिन्दी पखवाड़ा, संस्कृत दिवस, हिन्दी दिवस, सतर्कता दिवस, स्वच्छता दिवस जैसे विभिन्न साहित्यिक, शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक समारोहों का आयोजन ।

४. मण्डल, समिति एवं अधिकारी

1. प्रबन्ध मण्डल
2. वित्त-समिति
3. विद्वत्परिषद्
4. योजना एवं पर्यवेक्षण मण्डल
5. अध्ययन-मण्डल

समिति

1. शोध-मण्डल
2. परीक्षा मण्डल
3. विभागीय शोध समीक्षा एवं सलाहकार समिति
4. शैक्षणिक कैलेण्डर समिति
5. बिल्डिंग समिति
6. प्रवेश समिति
7. नीति एवं योजना समिति
8. छात्रावास-समिति
9. विद्यापीठ परिसर विकास-समिति
10. छात्रवृत्ति समिति
13. कुलानुशासक मण्डल
14. परिचय-नियमावली-समिति
15. हिन्दी राजभाषा कार्यान्वयन-समिति
16. रोस्टर समिति
17. शिकायत समिति

11. शोध एवं प्रकाशन-परामर्शदात्री-समिति
11. शोधप्रभा सम्पादक-मण्डल
12.. पुस्तकालय-समिति
18. अनुशासन समिति

अधिकारी गण

1. कुलाधिपति
2. कुलपति
3. संकाय प्रमुख
4. छात्र कल्याण संकाय प्रमुख
5. कुलसचिव
6. वित्ताधिकारी
7. परीक्षा-नियंत्रक
8. विभागाध्यक्ष
9. कुलानुशासक
10. छात्रावास-अधिष्ठाता
11. मुख्य सतर्कता अधिकारी
12. उप-कुलसचिव
13. सहायक-कुलसचिव

५. कुलपति

श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ (मानित विश्वविद्यालय) के वर्तमान कुलपति प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय हैं । विद्यापीठ के वरिष्ठतम आचार्य के रूप में प्रो. पाण्डेय ने दिनांक 09.04.2015 से कार्यकारी कुलपति का कार्यभार ग्रहण किया, तदुपरान्त मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के आदेश के द्वारा श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली के कुलपति पद पर प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय को नियमित कुलपति के रूप में अगले पाँच वर्षों के लिए नियुक्त किया गया । तद्नुसार प्रो. पाण्डेय ने दिनांक 28.08.2015 को नियमित कुलपति पद का कार्यभार ग्रहण किया ।

कार्यकारी कुलपति के रूप में कार्य करते हुए प्रो. पाण्डेय ने कुशल नेतृत्व प्रदान किया और नैक की पीयर टीम को मई, 2015 में विद्यापीठ के प्रत्यायन एवं मूल्यांकन हेतु आमंत्रित किया । पीयर टीम के मूल्यांकन एवं प्रत्यायन के आलोक में नैक द्वारा विद्यापीठ को अगले 5 वर्षों के लिये ए-ग्रेड प्रदान किया गया है । विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के दिशा-निर्देशों के अनुसार विकल्पाधारित क्रेडिट प्रणाली को क्रियान्वित करते हुये समस्त पाठ्यक्रमों में संशोधन किया गया और तद्नुसार कक्षाओं का संचालन किया गया । शैक्षणिक कैलेण्डर के अनुसार सत्रीय परीक्षाएं आयोजित की गयीं तथा परीक्षाफल शीघ्रतापूर्वक प्रकाशित किये गये ।

विद्वत्परिषद् और प्रबन्ध मण्डल की बैठकें आहूत कर नीति निर्धारण की दिशा में सक्रिय प्रयास किये गये । कई वर्षों से अध्यापकों की प्रोन्नति के लम्बित मामलों के संबंध में प्रो. पाण्डेय के कुशल नेतृत्व में परीक्षण समितियों एवं चयन समितियों का आयोजन किया गया । उनके कुशल नेतृत्व और प्रशासनिक दक्षता से शैक्षणिक क्षेत्र में

विद्यापीठ निरन्तर प्रगति पथ पर अग्रसर है। प्रो. पाण्डेय प्रसिद्ध शिक्षाविद् के रूप में इस विद्यापीठ के लिए ही नहीं, वरन् सम्पूर्ण देश में संस्कृत-भाषा-साहित्य के प्रचार-प्रसार और शास्त्रीय विधा के उन्नयन के लिये समर्पित हैं।

६. कुलसचिव

डॉ. बीके महापात्र वर्ष 2003 से विद्यापीठ के कुलसचिव हैं । कुलसचिव का पदभार ग्रहण करने के साथ ही डॉ. महापात्र ने विद्यापीठ परिसर को आकर्षक बनाने, नये भवनों के निर्माण, पठन-पाठन एवं छात्रावास की उन्नत व्यवस्था एवं शैक्षणिक परिवेश को समृद्ध करने की दिशा में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है । विधि स्नातक और पेशेवर प्रबंधन के एक विशेषज्ञ होने के नाते डॉ. महापात्र द्वारा विद्यापीठ के विकास में अपना कुशल योगदान दिया। उनके कुशल नेतृत्व एवं प्राशासनिक दक्षता से अध्यापकों एवं कर्मचारियों के बहुमुखी विकास एवं उन्नति में सहायता प्राप्त हुई ।

७. वित्ताधिकारी

दिनांक 04.10.2013 से श्रीमती कल्पना सिंह प्रतिनियुक्ति के आधार पर विद्यापीठ के वित्ताधिकारी पद पर कार्य कर रही हैं । विद्यापीठ के योजना एवं गैर-योजना सम्बन्धी समस्त आवश्यक व्यय व अनुदान के लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग तथा मानव संसाधन विकास मंत्रालय से निरंतर सम्पर्क बनाए रखकर उन्होंने वित्तीय प्रबंधन में योगदान दिया है । साथ ही साथ विद्यापीठ के पुनः प्रत्यायन एवं मूल्यांकन हेतु कुलपति महोदय द्वारा गठित समिति की संयोजिका भी रही हैं । विद्यापीठ के विगत पाँच वर्षों के शैक्षणिक एवं अन्य सम्बन्धित कार्यक्रमों के आधार पर स्व-अध्ययन प्रतिवेदन तैयार करने के लिए उन्होंने अत्यन्त कुशलतापूर्वक निर्देशन प्रदान किया है।

८. छात्र कल्याण संकाय

प्रो. कमला भारद्वाज, विभागाध्यक्ष, व्याकरण विभाग को विद्यापीठ का छात्र कल्याण संकाय प्रमुख नियुक्त किया गया है। प्रो. भारद्वाज व्याकरण विषय की आचार्या हैं तथा उन्हें कई शैक्षणिक संस्थानों, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, राज्य सरकार द्वारा संस्कृत साहित्य में योगदान के लिए सम्मानित किया जा चुका है।

शैक्षणिक सत्र 2015-16 में श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ की छात्रकल्याण संकायाध्यक्षा प्रो. कमला भारद्वाज के मार्ग निर्देशन में छात्रों के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करने के लिए बहुविध कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। प्रो. भारद्वाज द्वारा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग एवं मानव संसाधन विकास मन्त्रालय के निर्देशों का अनुपालन करते हुए विविध शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किये गये। विद्यापीठीय स्तर पर सद्भावना मार्च, अन्तर्राष्ट्रीय छात्र दिवस, सृजनात्मक लेखन, संस्कृत गान, वाद-विवाद, आशु भाषण आदि शैक्षणिक प्रतियोगिताओं में छात्रों ने सोत्साह भाग लिया तथा अपनी बहुविध प्रतिभा का परिचय दिया। राष्ट्रिय स्तर पर राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान की शलाका प्रतियोगिताओं के लिये राज्यस्तरीय प्रतियोगियों के चयन का दायित्व भी छात्र कल्याण संकाय ने वहन किया। छात्रों को शास्त्र संरक्षण के साथ-साथ व्यावहारिकता का प्रशिक्षण प्रदान करने हेतु छात्र-संसद एवं सुशासन दिवस सदृश व्यावहारिक विषयों से सम्बद्ध आयोजन भी किये गये। समस्त सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक गतिविधियों में संस्कृत एवं अन्यान्य मातृभाषाओं के सम्बन्ध का माहात्म्य प्रतिपादित करने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के उपलक्ष्य में मातृभाषा गायन, संस्कृत का मातृभाषा में अनुवाद, निबन्ध लेखन आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

छात्रों की समस्याओं को सुनना, सामान्य शिष्टाचार एवं व्यवहार को सुधारना तथा छात्रों के पारस्परिक संबन्धों में सांस्कारिक परिष्कार करना संकाय का विशिष्ट दायित्व है, इस दिशा में संकाय का सतत प्रयास रहा है कि छात्रों में शैक्षणिक व सांस्कृतिक शिक्षण के साथ-साथ शास्त्र व संस्कृति संरक्षण की प्रवृत्ति का भी विकास हो।

९. कुलानुशासक

प्रो. प्रेम कुमार शर्मा, ज्योतिष विभाग के वरिष्ठ आचार्य को कुलानुशासक के रूप में नियुक्त किया गया है। प्रो. शर्मा के कुशल नेतृत्व में विद्यापीठ परिसर का संरक्षण, सुरक्षा व्यवस्था एवं छात्र अनुशासन इत्यादि सुनिश्चित किया जाता है।

१०. मुख्य सतर्कता अधिकारी

प्रो. हरिहर त्रिवेदी, संकाय प्रमुख, वेद-वेदांग संकाय को मुख्य सतर्कता अधिकारी के रूप में नियुक्त किया गया है। प्रो. त्रिवेदी वैदिक साहित्य के विद्वान है। प्रो. त्रिवेदी पौरोहित्य विधा के मर्मस विद्वान हैं। विद्यापीठ में आयोजित होने वाले विभिन्न यज्ञ एवं पूजनादि कार्यक्रम उनके नेतृत्व में सम्पन्न किये जाते हैं। वे हमेशा छात्रों, अध्यापकों एवं कर्मचारियों को नैतिक और नैतिक मूल्यों से युक्त करने के लिए काम करते है।

११. सङ्काय एवं विभाग

विद्यापीठ में चार संकाय हैं। वेद-वेदांग संकाय की अध्यक्षता प्रो. हरिहर त्रिवेदी, दर्शन संकाय की अध्यक्षता प्रो. महेश प्रसाद सिलोड़ी और साहित्य एवं संस्कृति संकाय की अध्यक्षता प्रो. भागीरथि नन्द द्वारा की जा रही है। इन तीनों संकायों की स्थापना शास्त्र का अध्ययन-अध्यापन और विश्लेषणात्मक ज्ञान प्रदान करने के लिए की गयी हैं। आधुनिक ज्ञान-विज्ञान की स्थापना संस्कृत शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण पाठ्यक्रम संचालित करने के लिए की गयी है। आधुनिक ज्ञान-विज्ञान संकाय के अध्यक्ष प्रो. रमेश प्रसाद पाठक हैं। इन संकायों के अन्तर्गत 18 विभाग हैं । यह सभी विभाग वैदिक शास्त्र विषयों से संबंधित हैं जोकि भारतीय सांस्कृतिक विरासत और पारम्परिक ज्ञान के समृद्ध स्रोत हैं। इन विभागों द्वारा उच्च शास्त्रीय ज्ञान के विभिन्न पारम्परिक एवं आधुनिक विषयों की उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रमों का संचालन किया जाता है।

I
वेद-वेदाङ्ग-सङ्काय

वेद-विभाग

वेद विश्व का सबसे प्राचीन एवं ज्ञान-विज्ञान की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है। समस्त मानव जाति के सर्वाङ्गीण, सार्वकालिक विकास और संवृद्धि के लिए वेद मार्गदर्शक हैं। विश्व की संरचना, सम्पोषण एवं प्रगति के सभी विधानों का वर्णन वेदों में निहित है। शोषणरहित और समतामूलक समाज की स्थापना का मार्गदर्शन वेद करता है। मानव समाज में प्रकृति से तादात्म्य स्थापित कर जीवन को गतिशील बनाने की शैली वेदों की देन है। वस्तुतः

वेद जीवन दर्शन हैं। सनातन धर्मावलम्बी वेदों का ही अनुगमन करते हैं । वेद अपौरुषेय और अमर हैं । वेद मानव चरित्र को समुज्ज्वल बनाकर मानव में देवत्व की स्थापना करते हैं। आधुनिक युग में वेदाध्ययन की उपयोगिता बहुत अधिक है।

वेद-विभाग में पाठ्यक्रमानुसार छात्रों का विवरण :-

	सामान्य		अनुसूचित जाति		अनुसूचित जन जाति		विकलाङ्ग		अन्य पिछड़ा वर्ग		अल्पसंख्यक		
पाठ्यक्रम	पु०	म०	पु०	म०	पु०	म०	पु०	म०	पु०	म०	पु०	म०	कुल
शास्त्री प्रथम वर्ष	१०	०१	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	११
शास्त्री द्वितीय वर्ष	३	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	०३
शास्त्री ततीय वर्ष	५	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	०५
आचार्य प्रथम वर्ष	७	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	०७
आचार्य द्वितीय वर्ष	१०	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	१०
विशिष्टाचार्य	७	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	०७
विद्यावारिधि	२	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	०२
कुल	४४	०१	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	४५

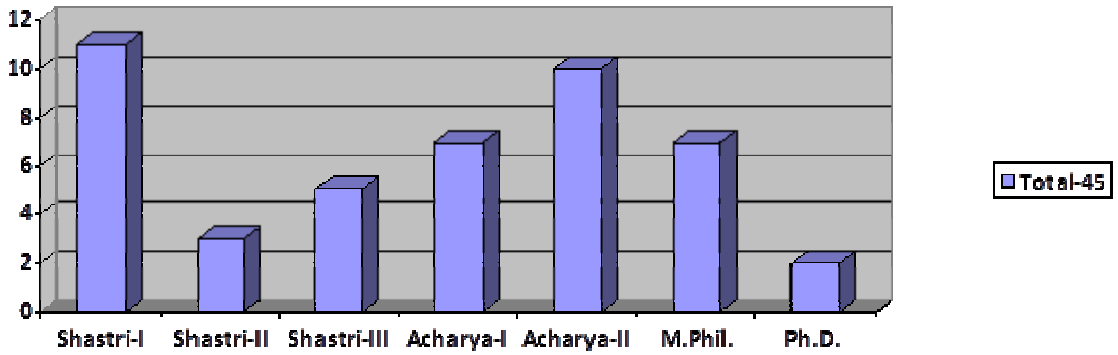

वेद-विभागीय आचार्य

1. डॉ. गोपाल प्रसाद शर्मा — सह प्रोफेसर
2. डॉ. रामानुज उपाधयाय — सह प्रोफेसर
3. डॉ. देवेन्द्र प्रसाद मिश्र — सहायक प्रोफेसर
4. डॉ. सुन्दर नारायण झा — सहायक प्रोफेसर

धर्मशास्त्र-विभाग

ऋषियों द्वारा धार्मिक आचार, व्यवहार, प्रायश्चित्त, भक्ति, इष्टपूर्त्ति, नैतिकमूल्यबोध, सामाजिक तथा वैयक्तिक कर्त्तव्याकर्त्तव्य की व्यवस्था हेतु धर्मशास्त्र का प्रणयन किया गया है । वेदविहित कर्मों के आनुपूर्व्य से कल्पनाशास्त्र रूपक कल्प का यह अङ्गभूत है । इस शास्त्र में मनु, याज्ञवल्क्य, पराशर, पारस्कर, गौतम, नारद, बृहस्पति, बौधायन, जीमूतवाहन, विज्ञानेश्वर, माधवाचार्य, कौटिल्य-प्रभृति सूत्र, स्मृति, भाष्य, तात्कालिक निबन्धात्मक प्राचीनग्रन्थों के अध्ययन के साथ ज्वलन्त युगोपयोगी एवं आधुनिकता के साथ सामञ्जस्य रखने वाले विषयों जैसे स्त्री-अधिकार, हिन्दूविधि, संस्कार, नैतिकशिक्षा, पर्यावरण, मानवाधिकार, राजधर्म, दण्ड, अपराध प्रभृतिय पर अध्ययन-अध्यापन किया जाता है, जिससे सामाजिक विधि-व्यवस्थाओं के उन्नत दर्शनों का अध्ययन और मानवीय मूल्यों के प्रणयन के साथ-साथ आत्मिक विकास होता है । धर्मशास्त्र विभाग द्वारा *'धर्मशास्त्रीयसंस्काराणांवैज्ञानिकपरिशीलनम्'* विषय पर दिनांक 30-31 मार्च, 2016 को दो दिवसीय राष्ट्रिय संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

धर्मशास्त्र-विभाग में पाठ्यक्रमानुसार छात्रों का विवरण :-

	सामान्य		अनुसूचित जाति		अनुसूचित जन जाति		विकलाङ्ग		अन्य पिछड़ा वर्ग		अल्पसंख्यक		
पाठ्यक्रम	पु०	म०	पु०	म०	पु०	म०	पु०	म०	पु०	म०	पु०	म०	कुल
शास्त्री प्रथम वर्ष	१	.	.	१	.	.	.	.	२	.	.	.	०४
शास्त्री द्वितीय वर्ष	१	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	०१
शास्त्री ततीय वर्ष	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	००
आचार्य प्रथम वर्ष	१	४	.	.	.	१	.	.	.	.	.	.	०६
आचार्य द्वितीय वर्ष	१	३	१	१	.	.	.	.	.	.	.	.	०६
विशिष्टाचार्य	१	१	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	०२
विद्यावारिधि	.	.	.	.	.	.	.	.	.	१	.	.	०१
कुल	५	८	१	२	.	१	.	.	२	१	.	.	२०

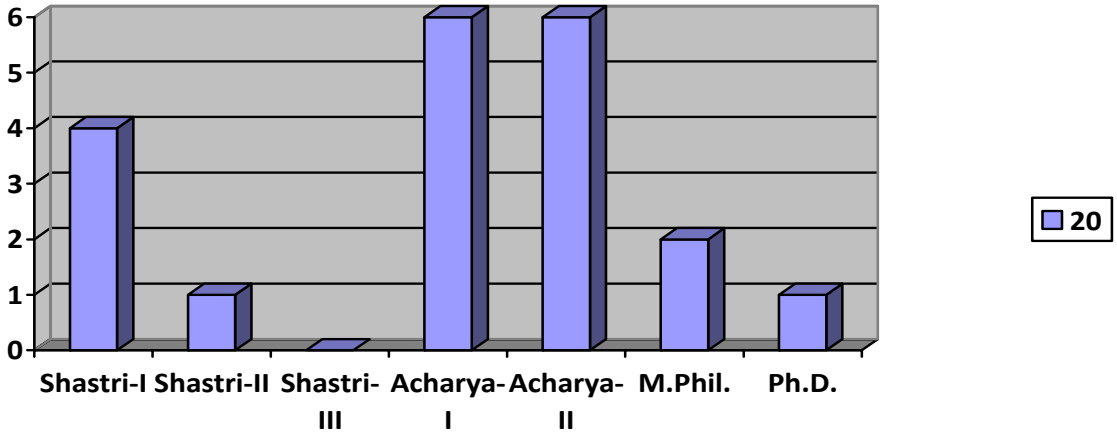

धर्मशास्त्र-विभागीय आचार्य

1.	डॉ. यशवीर सिंह	सह प्रोफेसर
2.	डॉ. सुधांशु भूषण पण्डा	सह प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष

व्याकरण विभाग

संस्कृत वाङ्मय के सम्यक् ज्ञान एवं अध्ययन के लिए व्याकरण-शास्त्र का अध्ययन किया जाता है। संस्कृत-व्याकरण की संवृद्धि एवं पुष्टता भाषा-विज्ञान की दृष्टि से अतुलनीय है । विश्व की समस्त भाषाओं में संस्कृत सबसे परिपूर्ण एवं उन्नत भाषा स्वीकार की जाती है, जिसका मूल कारण इसका व्याकरण सम्बन्धी पक्ष है। अपनी इस विशेषता के कारण ही यह वेद का सर्वप्रमुख अङ्ग माना जाता है । इसके मूलत: पाँच प्रयोजन हैं - रक्षा, ऊह, आगम, लघु और असन्देह। व्याकरण शास्त्र का बृहद् इतिहास है, किन्तु महामुनि पाणिनि और उनके द्वारा प्रणीत अष्टाध्यायी ही इसका केन्द्र- बिन्दु है। पाणिनि ने अष्टाध्यायी में 3995 सूत्रों की रचना कर भाषा के नियमों को व्यवस्थित किया, जिसमें वाक्यों में पदों का संकलन, पदों का प्रकृति-प्रत्यय विभाग एवं पदों की रचना आदि प्रमुख तत्त्व हैं । इन नियमों की पूर्त्ति के लिये धातुपाठ, गणपाठ तथा उणादिसूत्र भी पाणिनि ने बनाये। सूत्रों में उक्त, अनुक्त एवं द्विरुक्त विषयों का विचार कर कात्यायन ने वार्त्तिक की रचना की । बाद में महामुनि पतञ्जलि ने महाभाष्य की रचना कर संस्कृत व्याकरण को पूर्णता प्रदान की । इन्हीं तीनों आचार्यों को त्रिमुनि के नाम से जाना जाता है । प्राचीन व्याकरण में इनके द्वारा रचित शास्त्रों का अनिवार्यत: अध्ययन किया जाता है ।

प्राचीन- व्याकरण एवं नव्य-व्याकरण दो स्वतन्त्र विषय हैं । नव्य-व्याकरण के अन्तर्गत प्रक्रिया क्रम के अनुसार शास्त्रों का अध्ययन किया जाता है, जिसमें भट्टोजिदीक्षित, नागेशभट्ट आदि आचार्यों के ग्रन्थों का अध्ययन मुख्य है। व्याकरण विभाग द्वारा दिनांक 24/11/15 को आचार्य मण्डल मिश्र स्मारक व्याख्यान माला का आयोजन किया गया।

प्राचीन-व्याकरण में पाठ्यक्रमानुसार छात्रों का विवरण :-

	सामान्य		अनुसूचित जाति		अनुसूचित जन जाति		विकलाङ्ग		अन्य पिछड़ा वर्ग		अल्पसंख्यक		
पाठ्यक्रम	पु०	म०	पु०	म०	पु०	म०	पु०	म०	पु०	म०	पु०	म०	कुल
शास्त्री प्रथम वर्ष	३	.	.	.	.	.	.	.	२	.	.	.	०५
शास्त्री द्वितीय वर्ष	१	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	०१
शास्त्री ततीय वर्ष	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	००
आचार्य प्रथम वर्ष	१	.	.	.	.	.	.	.	१	.	.	.	०२
आचार्य द्वितीय वर्ष	.	.	.	.	.	.	.	.	१	.	.	.	०१
विशिष्टाचार्य	३	१	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	०४
विद्यावारिधि	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	००
कुल	८	१	.	.	.	.	.	.	४	.	.	.	१३

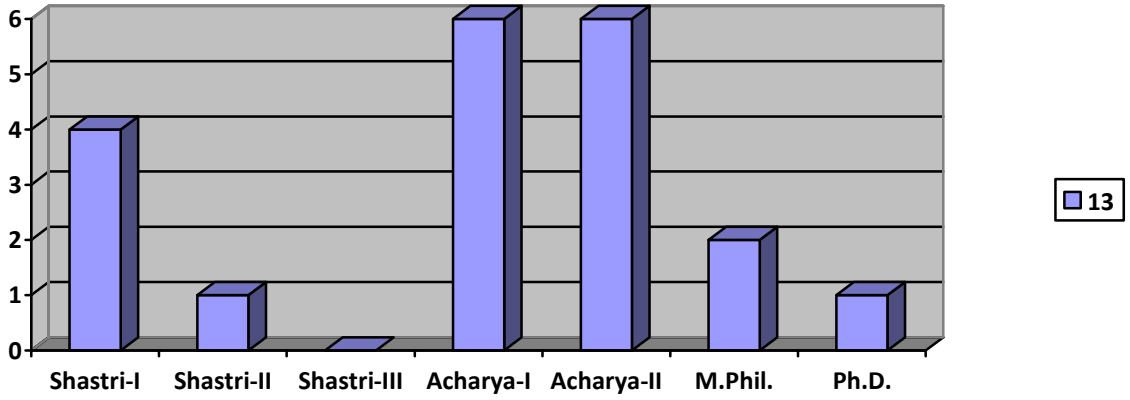

नव्य-व्याकरण में पाठ्यक्रमानुसार छात्रों का विवरण :-

	सामान्य		अनुसूचित जाति		अनुसूचित जन जाति		विकलाङ्ग		अन्य पिछड़ा वर्ग		अल्पसंख्यक		
पाठ्यक्रम	पु०	म०	पु०	म०	पु०	म०	पु०	म०	पु०	म०	पु०	म०	कुल
शास्त्री प्रथम वर्ष	२७	.	२	.	१	.	.	१	४	.	.	.	३५
शास्त्री द्वितीय वर्ष	३६	१	१	.	१	.	.	.	६	.	.	.	४५
शास्त्री ततीय वर्ष	१७	.	३	.	.	.	.	.	१	.	.	.	२१
आचार्य प्रथम वर्ष	२८	२	.	.	.	.	.	.	१	.	.	.	३१
आचार्य द्वितीय वर्ष	१०	२	.	१	.	.	.	.	.	.	.	.	१३
विशिष्टाचार्य	०८	२	.	.	.	.	.	.	२	.	.	.	१२
विद्यावारिधि	०२	.	.	.	.	.	.	.	.	१	.	.	०३
कुल	१२८	०७	०६	०१	०२	.	.	०१	१४	०१	.	.	१६०

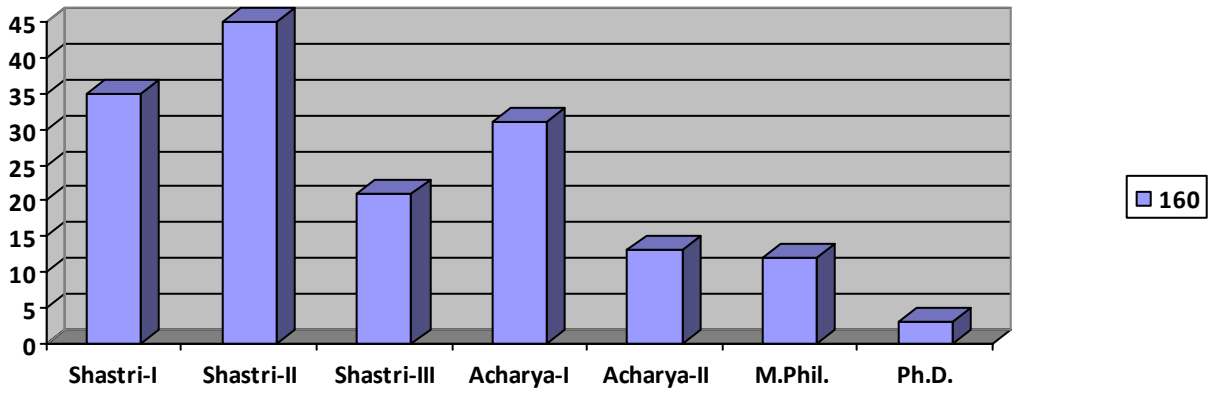

व्याकरण-विभागीय आचार्य

1.	प्रो. कमला भारद्वाज	प्रोफेसर एवं विभागाधयक्ष
2.	प्रो. जयकान्त सिंह शर्मा	प्रोफेसर
3.	डॉ. राम सलाही द्विवेदी	सहायक प्रोफेसर
4.	डॉ. सुजाता त्रिपाठी	सहायक प्रोफेसर
5.	डॉ. दयाल सिंह	सहायक प्रोफेसर

पौरोहित्य-विभाग

प्राचीन काल से ही मनुष्यों के लिए ऐहलौकिक तथा पारलौकिक मनोरथों की पूर्ति का साधन श्रौतयाग एवं स्मार्तयाग माना गया है । श्रौतयागों का आधार संहिताओं के मन्त्र हैं, किन्तु केवल मन्त्रों की जानकारी मात्र से ही कोई याग सम्पन्न नहीं हो सकता, इसके लिए अनुष्ठान की पद्धति का भी पूर्ण ज्ञान होना आवश्यक है । पौरोहित्य-विभाग में छात्रों को अनुष्ठान पद्धति का पूर्ण ज्ञान एवं विविध कर्मकाण्डों से सम्बन्धित अनुष्ठानों की प्रक्रिया के सूक्ष्मतम परिचय के साथ अध्ययन-अध्यापन कराया जाता है। कर्मकाण्ड के अध्ययन तथा यज्ञ-अनुष्ठान से समस्त जन का कल्याण होता है । ईश्वर की अराधाना, साधना, सस्वरपाठ, रुद्राष्टाध्यायी, कुण्डमण्डपनिर्माण, व्रत, संस्कार, प्रतिष्ठा, शान्ति, मुहूर्त्त, अनुष्ठानादि की जानकारी के लिये यह विषय अत्यन्त ज्ञानपद है । पौरोहित्य से आस्तिक जन सम्पूर्ण मनोभिलषित प्रकार की कामनाओं की पूर्ति कर सकते हैं। यह विभाग भारतीय परम्परा से परिपूर्ण सामाजिक गतिविधियों तथा रीति-रिवाजों को सफल एवं शास्त्र-सम्मत बनाने में छात्रों को योग्य बनाता है, साथ ही साथ उन्हें आचार, व्यवहार व शिष्टाचार के सनातन तथ्यों से परिचित कराता है।

पौरोहित्य-विभाग में पाठ्यक्रमानुसार छात्रों का विवरण :-

	सामान्य		अनुसूचित जाति		अनुसूचित जन जाति		विकलाङ्ग		अन्य पिछड़ा वर्ग		अल्पसंख्यक		
पाठ्यक्रम	पु०	म०	पु०	म०	पु०	म०	पु०	म०	पु०	म०	पु०	म०	कुल
शास्त्री प्रथम वर्ष	४	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	४
शास्त्री द्वितीय वर्ष	२	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	२

शास्त्री ततीय वर्ष	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.
आचार्य प्रथम वर्ष	१	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	१
आचार्य द्वितीय वर्ष	१	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	१
विशिष्टाचार्य	३	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	३
विद्यावारिधि	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.
षाण्मासिक पौरोहित्य प्रमाणपत्र	१४	.	.	.	.	.	.	.	२	.	.	.	१६
एक वर्षीय पौरोहित्य डिप्लोमा	१६	.	१	.	.	.	.	.	.	.	.	.	२०
कुल	४४	.	०१	.	.	.	.	.	२	.	.	.	४७

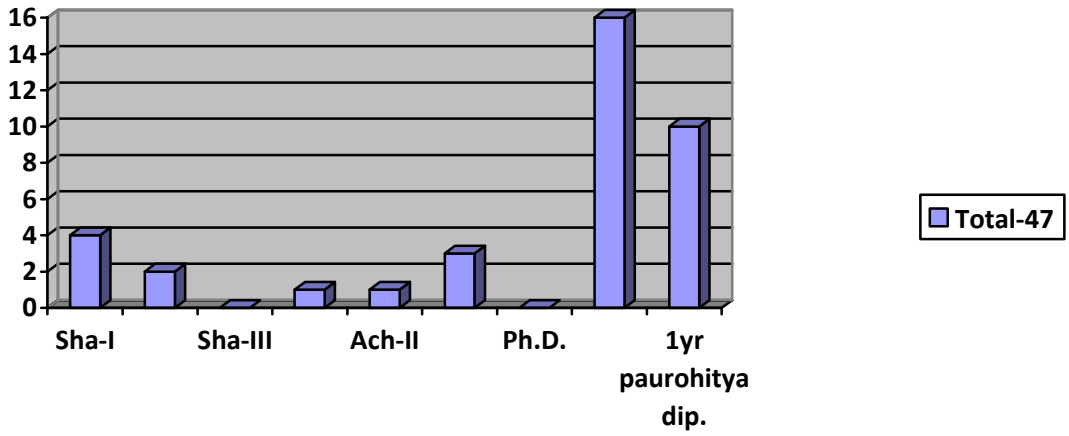

पौरोहित्य-विभागीय आचार्य

1. प्रो. हरिहर त्रिवेदी — प्रोफेसर
2. डॉ. रामराज उपाधयाय — सह प्रोफेसर
3. डॉ. वृन्दावन दाश — सह प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष

ज्योतिष-विभाग

ज्योषितशास्त्र "ज्योतिर्विज्ञान" नाम से प्रसिद्ध है, इससे न केवल इसकी वैज्ञानिकता ही प्रकट होती है बल्कि ग्रह नक्षत्रों की गति, स्थिति, युति, अमावस्या, पूर्णिमा, ग्रहणादि गणितीय पदार्थों के वेध के द्वारा दृक्सिद्धि के कारण यह शास्त्र विज्ञान की श्रेणी में प्रत्यक्षत्व की सिद्धि प्राप्त करता है। इस शास्त्र के मुख्य रूप से तीन विभाग सिद्धान्त, संहिता और होरा के रूप में किए गए हैं।

ज्योतिष विभाग द्वारा शास्त्री, आचार्य, विशिष्टाचार्य एवं विद्यावारिधि स्तर के पाठ्यक्रमों का शिक्षण प्रदान किया जाता है। यह विभाग जन-सामान्य को ज्योतिष-शास्त्र के परम्परागत ज्ञान से परिचित कराने के लिए एक-एक वर्ष की समयावधि के प्रमाणपत्रीय पाठ्यक्रम 'ज्योतिष-प्राज्ञ' एवं 'ज्योतिष-भूषण' सञ्चालित करता है। इसके साथ-साथ विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की स्वीकृति एवं उसके द्वारा प्रदत्त विशेष सहायता योजना (SAP-DRS-I,II एवं III ज्यो0) के अन्तर्गत मेडीकल-एस्ट्रोलॉजी में एक वर्ष का प्रमाणपत्रीय पाठ्यक्रम सञ्चालित करता है। इस योजना के अन्तर्गत बाह्य विद्वानों के विशिष्ट व्याख्यान भी कराये जाते हैं।

ज्योतिष विभाग द्वारा प्रतिवर्ष 'पञ्चाङ्ग' का संपादन एवं प्रकाशन किया जाता है। इस वर्ष संवत् 2073 (शक्-संवत् 1938) के पञ्चाङ्ग का प्रकाशन किया गया। इसका सम्पादन प्रो. प्रेम कुमार शर्मा एवं डॉ. बिहारी लाल शर्मा ने किया। पञ्चांग निर्माण का कार्य समस्त ज्योतिष विभागीय अध्यापकों द्वारा सामूहिक दायित्व के रूप में किया गया। इसके प्रकाशन, विक्रय एवं विद्वानों को उपलब्ध कराने का कार्य शोधप्रकाशन विभाग द्वारा किया गया।

सिद्धान्त-ज्योतिष में पाठ्यक्रमानुसार छात्रों का विवरण :–

	सामान्य		अनुसूचित जाति		अनुसूचित जन जाति		विकलाङ्ग		अन्य पिछड़ा वर्ग		अल्पसंख्यक		
पाठ्यक्रम	पु०	म०	पु०	म०	पु०	म०	पु०	म०	पु०	म०	पु०	म०	कुल
शास्त्री प्रथम वर्ष	४	१	.	.	.	.	.	.	१	.	.	.	०६
शास्त्री द्वितीय वर्ष	६	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	०६
शास्त्री ततीय वर्ष	२	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	०२
आचार्य प्रथम वर्ष	२	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	०२
आचार्य द्वितीय वर्ष	३	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	०३
विशिष्टाचार्य	६	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	०६
विद्यावारिधि	५	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	०५
कुल	२८	०१	.	.	.	.	.	.	०१	.	.	.	३०

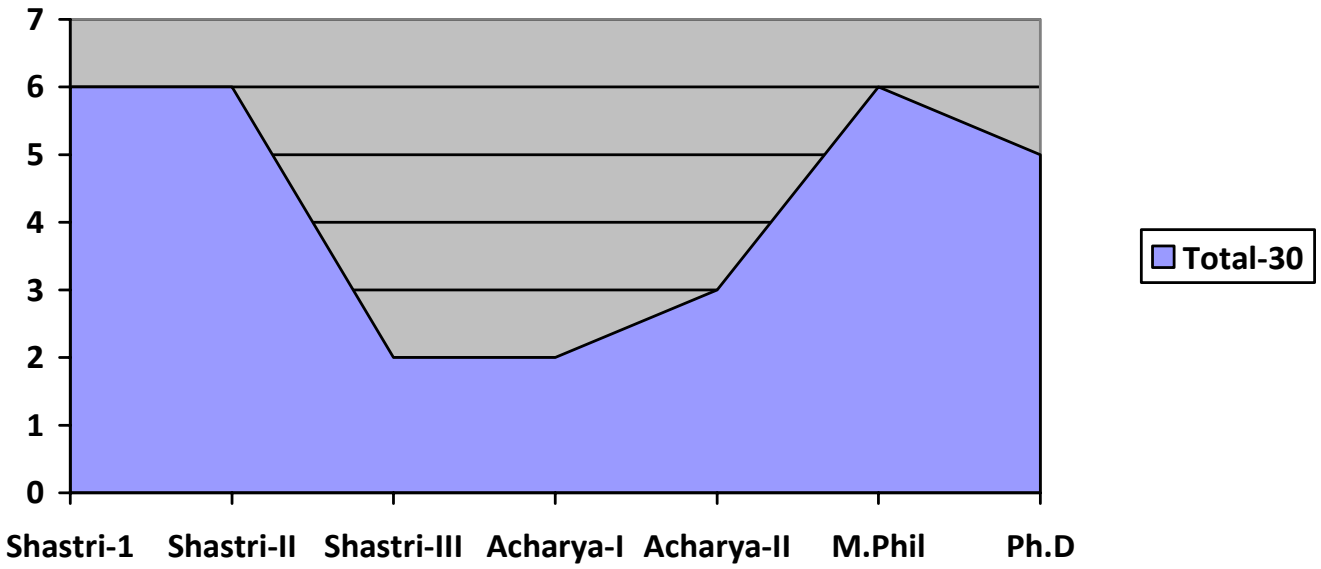

फलित-ज्योतिष में पाठ्यक्रमानुसार छात्रों का विवरण :-

	सामान्य		अनुसूचित जाति		अनुसूचित जन जाति		विकलांग		अन्य पिछड़ा वर्ग		अल्पसंख्यक		
पाठ्यक्रम	पु०	म०	पु०	म०	पु०	म०	पु०	म०	पु०	म०	पु०	म०	कुल
शास्त्री प्रथम वर्ष	१६	१	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	१७
शास्त्री द्वितीय वर्ष	२	.	.	.	.	.	.	.	३	.	.	.	०५
शास्त्री ततीय वर्ष	१३	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	१३
आचार्य प्रथम वर्ष	१६	४	.	.	.	.	१	.	२	१	१	.	२८
आचार्य द्वितीय वर्ष	२६	१	.	.	.	.	.	.	१	.	.	.	२८
विशिष्टाचार्य	१२	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	१२
विद्यावारिधि	६	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	०६
कुल	६४	०६	.	.	.	.	०१	.	०६	०१	०१	.	१०६

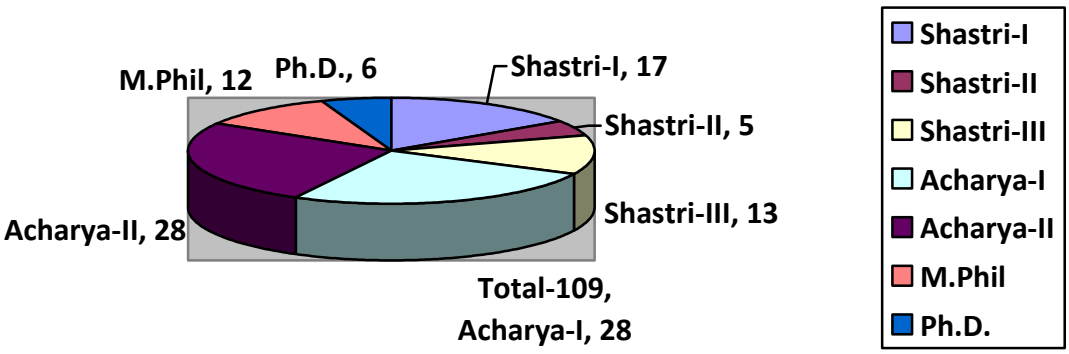

प्रमाण पत्र/डिप्लोमा पाठ्यक्रम में प्रविष्ट छात्रों का विवरण

पाठ्यक्रम का नाम	पुरुष	महिला	कुल
ज्योतिष षाण्मासिक	३६	३	३९
ज्योतिष प्राज्ञ	४८	८	५६
ज्योतिष भूषण	१२	५	१७
मेडिकल भैषज	२४	५	२९
कुल योग	**१२०**	**२१**	**१४१**

त्रिदिवसीय राष्ट्रिय पञ्चाङ्ग कार्यशाला

दिनांक 21.7.2015 से दिनांक 23.7.2015 तक विद्यापीठ पञ्चाङ्ग के व्रत-पर्व एवं उत्सव के निर्णय हेतु त्रिदिवसीय पञ्चाङ्ग कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें देश भर से ज्योतिष शास्त्र के विद्वान् उपस्थित हुए।

इस कार्यशाला में वर्षभर में मनाये जाने वाले व्रत-पर्वोत्सवों की ज्योतिष एवं धर्मशास्त्रीय व्यवस्थाओं पर गम्भीर चिन्तन एवं मनन कर शास्त्रीय रीति से व्रत-पर्वोत्सवों का निर्णय किया गया।

ज्योतिष-विभागीय आचार्य

1. प्रो. प्रेम कुमार शर्मा — प्रोफेसर
2. प्रो. बिहारीलाल शर्मा — प्रोफेसर एवं विभागाधयक्ष
3. प्रो. विनोद कुमार शर्मा — प्रोफेसर

4.	डॉ. नीलम ठगेला	सह प्रोफेसर
5.	डॉ. दिवाकर दत्त शर्मा	सह प्रोफेसर
6.	डॉ. परमानन्द भारद्वाज	सह प्रोफेसर
7.	डॉ. सुशील कुमार	सहायक प्रोफेसर
8.	डॉ. गणीन्द्र कुमार चौधारी	सहायक प्रोफेसर
9.	डॉ. रश्मि चतुर्वेदी	सहायक प्रोफेसर

स्थापत्य के रूप में वास्तुशास्त्र का वर्णन वैदिककाल से ही सर्वत्र दिखाई देता है । दिग् और काल के अनुरूप किसी भी देश एवं स्थान में स्थापत्य का विचार अभिष्ट व्यक्ति के अनुरूप करना वास्तुशास्त्र का मुख्य उद्देश्य है । स्थापत्य के शुभाशुत्व के विचार के कारण ही ज्यौतिष शास्त्र के संहिता भाग में वास्तु विद्या का समावेश हुआ।

वास्तु रूपों के वर्णन से यह द्योतित होता है कि जैसे हमारा सम्पूर्ण शरीर एक सजीव इकाई है परन्तु उसे बनाने वाली सूक्ष्म कोशिकायें अपने में एक चेतन्य इकाईयां हैं। उनकी प्रतिक्रियायें समग्र शरीर की प्रतिक्रिया होती है। यही एकात्मता का भाव वास्तु में भी प्रधान है। ग्रह, नक्षत्र, सूर्य, चन्द्र आदि सभी के ऊर्जा प्रभाव के कारण वास्तुरचना अनुकूल और प्रतिकूल परिणाम देती है। वास्तुशास्त्र का उद्देश्य सर्वविध सुखी एवं शान्त सुरक्षित जीवन से है जहाँ रहकर व्यक्ति अपने उद्देश्य की पूर्ति कर सकें।

वास्तुशास्त्र की एक विस्तृत शास्त्रीय परम्परा एवं वर्तमान में इसके स्वरूप व लोगों में इस शास्त्र के प्रति रुचि को देखते हुए विद्यापीठ ने अन्य विभागों के ही अनुरूप वास्तुशास्त्र विभाग में भी शास्त्री, आचार्य, विशिष्टाचार्य एवं विद्यावारिधि की कक्षाओं में प्रवेश सत्र 2013-14 से प्रारम्भ हो हुआ। जन सामान्य की वास्तुशास्त्र में रूचि को देखते हुए एवं विश्वविद्यालय अनुदान के दिशा निर्देशानुसार वास्तुशास्त्र में द्विवर्षीय पी0जी0 डिप्लोमा पाठ्यक्रम भी चल रहा है। इस पाठ्यक्रम का मुख्य उद्देश्य वास्तुशास्त्र के दुर्लभ एवं गम्भीर शास्त्रीय ज्ञान से सामान्य जनता को परिचित कराना है।

वास्तुशास्त्र विभाग में वार्षिक वास्तुशास्त्र विमर्श का प्रकाशन होता है वर्ष 2015-16 में वास्तुशास्त्रविमर्श 'अष्टमपुष्प' का प्रकाशन प्राय: पूर्ण हो गया है जो प्रकाशनार्थ प्रेस में है। वास्तुशास्त्र विमर्श का विक्रय एवं आवश्यकतानुसार विद्वानों को उपलब्ध कराने का कार्य विद्यापीठ के प्रकाशन विभाग द्वारा किया जाता है।

वास्तुशास्त्र में पाठ्यक्रमानुसार छात्रों का विवरण :-

	सामान्य		अनुसूचित जाति		अनुसूचित जन जाति		विकलांग		अन्य पिछड़ा वर्ग		अल्पसंख्यक		
पाठ्यक्रम	पु०	म०	पु०	म०	पु०	म०	पु०	म०	पु०	म०	पु०	म०	कुल
शास्त्री प्रथम वर्ष	६	.	.	.	.	.	.	.	१	२	.	.	०६
शास्त्री द्वितीय वर्ष	५	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	०५
शास्त्री ततीय वर्ष	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	००

आचार्य प्रथम वर्ष	५	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	०५
आचार्य द्वितीय वर्ष	५	.	.	.	.	.	.	.	१	.	.	.	०६
विशिष्टाचार्य	६	.	.	.	१	.	.	.	.	.	.	.	०७
विद्यावारिधि	३	.	.	.	१	.	.	.	.	.	.	.	०४
पाण्मासिक प्रमाणपत्रीय पाठ्यक्रम	४	२	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	०६
पी.जी. डिप्लोमा (प्रथम वर्ष)	४	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	०४
पी.जी. डिप्लोमा (द्वितीय वर्ष)	१४	२	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	१६
कुल	५२	४	.	.	२	.	.	.	२	२	.	.	६२

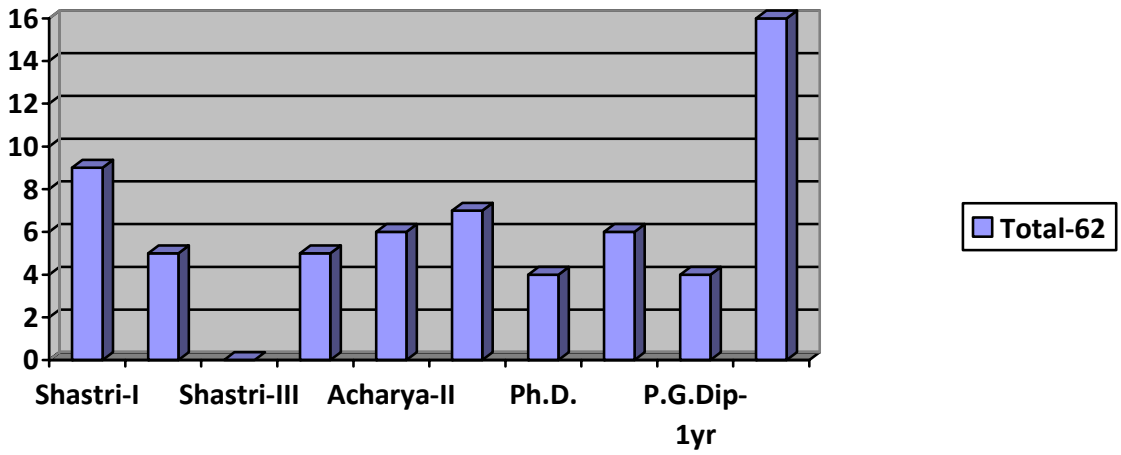

वास्तुशास्त्र-विभागीय आचार्य

1. प्रो. देवी प्रसाद त्रिपाठी — प्रोफेसर एवं विभागाधयक्ष

II

साहित्य एवं संस्कृति सङ्काय

साहित्य एवं संस्कृति सङ्काय के अन्तर्गत तीन विभाग और पाँच आधुनिक विषय सम्मिलित किये गये प्रभाग हैं, जिनमें साहित्य, पुराणेतिहास और प्राकृत विभाग तथा हिन्दी, अंग्रेजी, समाजशास्त्र, राजनीतिशास्त्र और सङ्गणक विषय हैं । साहित्य एवं संस्कृति सङ्काय मूलत: संस्कृत साहित्य वाङ्मय की विभिन्न विधाओं में शिक्षण एवं शोध आदि कार्य सम्पादित करता है । संस्कृत के विभिन्न विद्वानों एवं रचनाकारों द्वारा प्रणीत साहित्य का अध्ययन-अध्यापन इसके विभागों में किया जाता है। इन विभागों का संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है-

साहित्य-विभाग

'पश्चमी साहित्यविद्या'-आचार्य राजशेखर के अनुसार वेद-विहित चार विद्याओं के अतिरिक्त पश्चमीविद्या के रूप में साहित्य का अनिवार्य स्थान माना गया है । सौन्दर्यशास्त्र, कला और कलाशास्त्र, सङ्गीत और सङ्गीतशास्त्र, नाट्य और नाट्यशास्त्र आदि इस के अन्तर्गत होने के कारण लोक जीवन में यह साहित्य प्रतिपद अनुभूत होता है । साहित्य विभाग का प्रयास है कि शास्त्री से आचार्य तक अधययन के उपरान्त प्रत्येक छात्र एक पूर्ण विकसित साहित्यिक परम्परा से उद्‌बुद्ध हो। स्नातकोत्तर स्तर पर काव्यशाखा, नाट्यशाखा, एवं अलङ्कारशाखा के रूप में संस्कृत साहित्य एवं साहित्यशास्त्र के विशद अध्ययन एवं अध्यापन से इस विभाग को विशेष गौरव प्राप्त है ।

वर्तमान युग में शोध की दृष्टि से तथा जनसामान्य के लाभ के लिये महाकाव्यों की प्रासङ्गिकता के प्रचार-प्रसार एवं विशद-अध्ययन की दृष्टि से विभाग में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के विशेष आर्थिक अनुदान (SAP) से 'बृहत्त्रयी बृहत्कोशयोजना' के रूप में एक विभागीय शोध-योजना चल रही है, जो विभाग के अध्येताओं की शोध प्रवृत्ति वृद्धि की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है । सैप (DRS-II) भी यू.जी.सी द्वारा स्वीकृत।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्देशानुसार साहित्य विभागीय पाठ्यक्रम का संशोधन एवं विस्तार विभागीय अध्ययनमण्डल के द्वारा किया गया, जिसमें भरत से लेकर आधुनिक कालपर्यन्त समस्त साहित्यशास्त्रीय ग्रन्थों का समावेश किया गया है तथा प्राच्य पाश्चात्य साहित्य तथा संस्कृत साहित्यशास्त्र का भी अध्ययन कराया जा रहा है ताकि छात्रें की तुलनात्मक सूक्ष्मता का सामाजिक परिवेश के अध्ययन हेतु पर्याप्त विकास हो सके ।

साहित्य-विभाग में पाठ्यक्रमानुसार छात्रों का विवरण :-

	सामान्य		अनुसूचित जाति		अनुसूचित जन जाति		विकलाङ्ग		अन्य पिछड़ा वर्ग		अल्पसंख्यक		
पाठ्यक्रम	पु०	म०	पु०	म०	पु०	म०	पु०	म०	पु०	म०	पु०	म०	कुल
शास्त्री प्रथम वर्ष	२६	४	.	१	१	.	.	.	२	३	.	.	३७
शास्त्री द्वितीय वर्ष	१६	५	१	.	.	.	.	.	१	.	.	.	२६
शास्त्री ततीय वर्ष	१६	.	.	.	१	.	.	.	४	.	.	.	२१
आचार्य प्रथम वर्ष	२१	६	.	२	.	.	.	.	१	.	.	.	३०
आचार्य द्वितीय वर्ष	१४	४	१	२	.	.	१	.	.	२	.	.	२४
विशिष्टाचार्य	६	२	२	१	१	.	.	.	३	२	.	.	२०
विद्यावारिधि	१	३	.	.	.	.	.	.	१	२	.	.	०७
कुल	१०६	२४	०४	०६	०३	.	०१	.	१२	०६	.	.	१६५

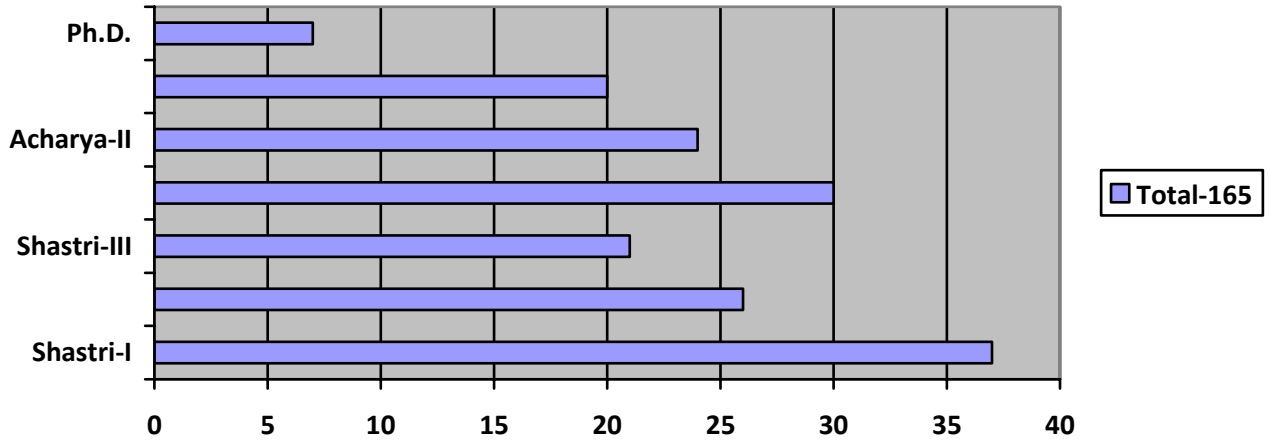

साहित्य विभाग द्वारा दिनांक 12/2/2016 से 14/2/2016 तक 'महाकविमाघविरचित शिशुपालवध महाकाव्यविशदपरिशीलनात्मकं' विषय पर तीन दिवसीय राष्ट्रिय सम्मेलन का आयोजन किया गया।

१. दिनांक 27.7.15 को **'गद्य एवं काव्यशास्त्र'** विषय पर प्रो. रास बिहारी द्विवेदी, जबलपुर, म.प्र, द्वारा विशेष व्याख्यान दिया गया।
2. दिनांक 29.7.15 को **'अच्छा मानव व्यवहार निर्माण करने हेतु सस्कृत की उपयोगिता'** विषय पर प्रो. एस. पी. शर्मा, अलीगढ़, उप्र. द्वारा विशेष व्याख्यान दिया गया।
3. दिनांक 26.8.15 को **'शब्दधारा सम्बन्ध'** विषय पर प्रो. बृजकिशोर स्वाइन द्वारा विशेष व्याख्यान दिया गया।
4. दिनांक 4.9.2015 को अध्यापक दिवस के अवसर पर **'समय प्रबंधन और निरंतर प्रेरणा'** विषय पर प्रो. एस. एस. खाड़का, राष्ट्रिय संस्थान वित्त, फरीदाबाद, हरियाणा द्वारा विशेष व्याख्यान दिया गया।

साहित्य-विभागीय आचार्य

1.	प्रो. शुकदेव भोइ	प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष
2.	प्रो. भागीरथि नन्द	प्रोफेसर
3.	प्रो. देवदत्त चतुर्वेदी	प्रोफेसर
4.	प्रो. रश्मि मिश्रा	प्रोफेसर
5.	डॉ. सुमन कुमार झा	सहायक प्रोफेसर
6.	डॉ. अरविन्द कुमार	सहायक प्रोफेसर

पुराणेतिहास-विभाग

प्राचीन संस्कृत साहित्य में पुराणों का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है । इन्हें भारतीय संस्कृति, सभ्यता, राजनीति, भूगोल, इतिहास आदि का विश्वकोष कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी । समस्त शास्त्रों का मूल आधाार पुराणों में विद्यमान है । अत: पुराणों का अधययन हर दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है । भारतीय परम्परा के अनुसार महापुराणों की संख्या 18 है । इनके एक-एक उपपुराण भी हैं । इन पुराणों के कर्त्ता महर्षि व्यास माने जाते हैं । पुराणों में मुख्यत: सृष्टि, प्रलय, राजवंशावलियाँ, मनुओं का काल तथा विभिन्न राजाओं का इतिहास वर्णित है । यही कारण है कि इसे पुराणेतिहास नाम से भी जाना जाता है ।

पुराणेतिहास-विभाग में पाठ्यक्रमानुसार छात्रों का विवरणः-

	सामान्य		अनुसूचित जाति		अनुसूचित जन जाति		विकलाङ्ग		अन्य पिछड़ा वर्ग		अल्पसंख्यक		
पाठ्यक्रम	पु०	म०	पु०	म०	पु०	म०	पु०	म०	पु०	म०	पु०	म०	कुल
शास्त्री प्रथम वर्ष	२	१	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	०३
शास्त्री द्वितीय वर्ष	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	००
शास्त्री ततीय वर्ष	१	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	०१
आचार्य प्रथम वर्ष	४	१	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	०५
आचार्य द्वितीय वर्ष	१	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	०१
विशिष्टाचार्य	३	.	.	.	.	.	.	.	१	.	.	.	०४
विद्यावारिधि	२	.	.	१	.	.	.	.	.	.	.	.	०३
कुल	१३	०२	.	०१	.	.	.	.	०१	.	.	.	१७

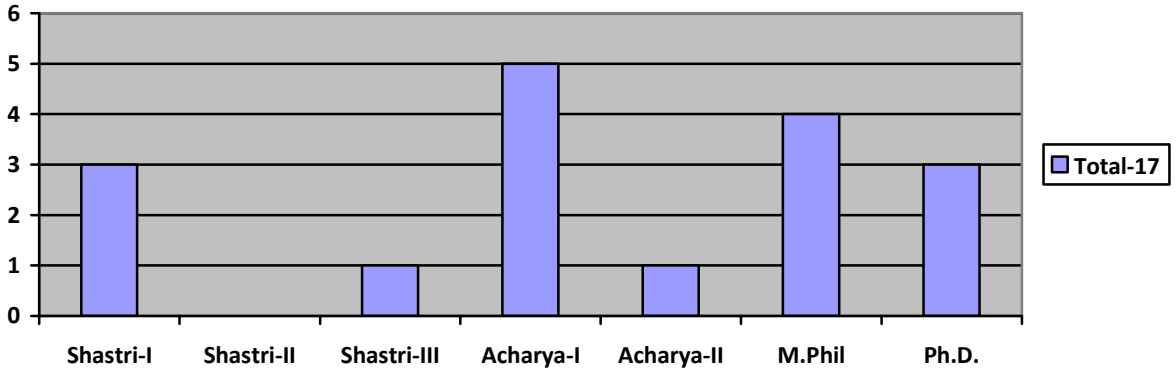

पुराणेतिहास-विभागीय आचार्य

1. प्रो. इच्छाराम द्विवेदी — प्रोफेसर
2. डॉ. शीतला प्रसाद शुक्ल — सह प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष

प्राकृत-विभाग

भारत की प्राचीन भाषाओं में प्राकृत का गौरवपूर्ण स्थान है । एक समय में यह बोल-चाल की भाषा भी थी । यही कारण है कि तत्कालीन दार्शनिकों ने अपने सिद्धान्तों का उपदेश इस भाषा के माध्यम से दिया, जिनमें जैनदर्शन के आचार्य प्रमुख थे । इस भाषा की प्रचुरता एवं सरलता-सरसता के कारण ही संस्कृत नाट्य शास्त्रकारों ने नाटक के जनसामान्य पात्रों के संवादों को इस भाषा में निबद्ध करने का निर्देश दिया, जिसका अनुपालन सभी नाट्यकारों ने किया । अतः प्राचीन धार्मिक सिद्धान्तों विशेष रूप से जैनदर्शन के सिद्धान्तों के मौलिक अध्ययन, संस्कृत नाटकों एवं प्राकृत काव्यों के अध्ययन के साथ-साथ भारतीय संस्कृति, इतिहास एवं पुरातत्त्व सम्बन्धी अध्ययन के लिये यह विषय अत्यन्त उपयोगी है । अनेक शिलालेख, ताम्रपत्र लेख, प्राकृत भाषा में निबद्ध हैं । इस भाषा के व्यापक अधययन के लिये प्राकृत प्रकाश, प्रवचनसार, समयसार, नियमसार, गाथासप्तशती, पउमचरिउ, कर्पूरमञ्जरी आदि ग्रन्थों का अध्ययन किया जाता है ।

प्राकत-विभाग में पाठ्यक्रमानुसार छात्रों का विवरणः-

	सामान्य		अनुसूचित जाति		अनुसूचित जन जाति		विकलाङ्ग		अन्य पिछड़ा वर्ग		अल्पसंख्यक		
पाठ्यक्रम	पु०	म०	पु०	म०	पु०	म०	पु०	म०	पु०	म०	पु०	म०	कुल
शास्त्री प्रथम वर्ष	..	३	..	..	..	..	..	..	..	..	..	..	०३
शास्त्री द्वितीय वर्ष	..	..	..	..	..	..	..	..	..	..	..	..	००
शास्त्री ततीय वर्ष	.	..	..	..	..	..	..	..	..	..	..	..	००
आचार्य प्रथम वर्ष	..	..	..	..	..	..	..	..	..	..	..	..	००
आचार्य द्वितीय वर्ष	१	१	..	..	..	..	..	..	..	..	..	..	०२
विशिष्टाचार्य	..	..	१	..	..	..	..	..	..	..	..	..	०१
विद्यावारिधि	..	..	..	..	..	..	..	..	..	..	..	..	००
कुल	०१	०४	०१	..	..	..	..	..	..	..	..	..	०६

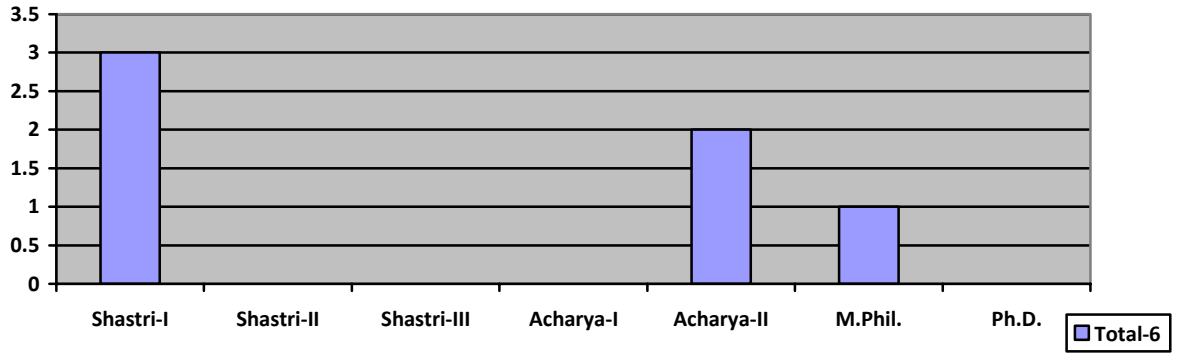

प्राकृत वाङ्मय व्याख्यानमाला

प्राकृतभाषा विभागीय 'आचार्य कुन्दकुन्द-स्मृतिव्याख्यानमाला' का चोदहवॉ (14) सत्र दिनाङ्क 29 मार्च, 2016 ई. को सम्पन्न हुआ। आचार्य श्री देशभूषण मुनीराज स्मारक व्याख्यानमाला का आयोजन दिनांक 2. 1.16 को तथा डॉ. राजेन्द्र प्रसाद स्मारक व्याख्यानमाला का आयोजन दिनांक 17.2.2016 को आयोजन किया गया।

प्राकृत- विभागीय आचार्य

1. प्रो. सुदीप कुमार जैन — प्रोफेसर
2. डॉ. जयकुमार एन. उपाधये — प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष
3. डॉ. कल्पना जैन — सह प्रोफेसर

साहित्य एवं संस्कृति संकाय के अन्तर्गत साहित्य विभाग में शास्त्रीय विषयों के साथ-साथ आधुनिक विषयों जैसे-हिन्दी, अंग्रेजी, समाजशास्त्र, राजनीतिशास्त्र एवं संगणक उपयोग की विधा का अध्ययन-अध्यापन भी किया जाता है । इन विषयों के अध्यापन के लिये नियुक्त आचार्यों का विवरण निम्नवत है-

हिन्दी

1.	डॉ. सविता	सह प्रोफेसर
2.	डॉ. जगदेव कुमार शर्मा	सह प्रोफेसर

अंग्रेजी

1.	डॉ. मीनू कश्यप	सह प्रोफेसर
2.	डॉ. अभिषेक तिवारी	सहायक प्रोफेसर

समाजशास्त्र

	डॉ. प्रगति गिहार	सह प्रोफेसर

राजनीति शास्त्र

	श्री केशव नारायण मिश्र	सहायक प्रोफेसर

संगणक विज्ञान

	श्री आदेश कुमार	सहायक प्रोफेसर

आधुनिक विषयों के अध्ययन-अध्यापन हेतु नियमित अध्यापकों के अतिरिक्त अतिथि अध्यापकों की भी नियुक्ति की गई है।

III

दर्शन सङ्काय

दर्शन संकाय के अन्तर्गत आठ विषयों का अध्ययन-अध्यापन, सात विभागों में होता है। ये सात विभाग - न्याय-वैशेषिक, सांख्ययोग, अद्वैतवेदान्त, विशिष्टाद्वैतवेदान्त, जैनदर्शन, सर्वदर्शन एवं मीमांसा है। भारतीय सनातन ज्ञान की विविध परम्पराओं का अध्ययन-अध्यापन इस संकाय के अन्तर्गत सम्पन्न होता है। वस्तुतः भारतीय दार्शनिक विधाओं के सम्बन्ध में गहन अनुसंधान और समाजोपयोगी ज्ञान-निर्माण में इसके विभिन्न विभाग सतत प्रयत्नशील हैं । विभागों और इनकी कार्यविधि का संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है-

न्याय-वैशेषिक-विभाग

न्याय-वैशेषिक-विभाग का प्रमुख उद्देश्य प्राचीनन्याय एवं नव्यन्याय के पाठ्यग्रन्थों का पारम्परिक अध्ययन एवं अध्यापन के माधयम से संरक्षण एवं सम्वर्धन है। न्याय-वैशेषिक-विभाग में प्राचीन-न्याय एवं नव्य-न्याय, दो विषयों का अध्ययन-अध्यापन सविधि होता है।

प्राचीन-न्याय विषय का अध्ययन करने वाले छात्र मुख्य रूप से प्राचीन-न्यायदर्शन एवं वैशेषिक-दर्शन के प्रारम्भिक ग्रन्थों का अध्ययन करते हैं। प्राचीन न्याय का प्रथम ग्रन्थ ''न्याय-सूत्र'' है। इसके निर्माता महर्षि गौतम हैं। इस ग्रन्थ को आन्वीक्षिकी, न्यायविद्या, न्याय-दर्शन, न्याय-शास्त्र तथा तर्क-शास्त्र के नाम से भी जाना जाता है। न्याय-दर्शन एवं वैशेषिक-दर्शन परस्पर एक दूसरे के विरोधी नहीं है इसलिये इन्हें समान-तन्त्र माना गया है। इन दोनों दर्शनों के अध्ययन से छात्रों में तार्किक क्षमता का विकास होता है तथा किसी भी विषय को युक्ति के आधार पर समझने की कला विकसित होती है।

नव्य-न्याय विषय का अधययन करने वाले छात्र प्रमुख रूप से 'तत्त्व-चिन्तामणि' नाम के ग्रन्थ का अध्ययन करते हैं। 'तत्त्व-चिन्तामणि' नव्य-न्याय का प्रथम ग्रन्थ है। इसके रचयिता आचार्य गङ्गेश उपाध्याय हैं। नव्य-न्याय, न्याय-सूत्र पर ही मूल रूप से आधारित है। न्यायदर्शन के प्रमाण, प्रमेय आदि सोलह पदार्थों का ही नव्य-न्याय के ग्रन्थों में विशिष्ट भाषा एवं शैली में आकर्षक-प्रतिपादन है।

नव्य-न्याय की भाषा अत्यन्त उन्नत है। इसलिये सभी शास्त्रों में विषय को सूक्ष्म रूप से सुस्पष्ट करने की दृष्टि से बाद के सभी समीक्षकों ने इस भाषा को सादर अपनाया है। संगणक के विशेषज्ञों ने इस भाषा को संगणक के लिये सर्वाधिक उपयोगी माना है। इस प्रकार नव्य-न्याय के अध्ययन से न्याय-दर्शन एवं वैशेषिक-दर्शन के अत्यन्त गूढ़ रहस्यों को समझने में जहाँ हम समर्थ होते हैं वहीं व्याकरण, ज्योतिष, साहित्य आदि अन्य शास्त्रें के मर्म को भी भली-भाँति समझने समझाने की विलक्षण प्रतिभा भी अनायास प्राप्त कर लेते हैं। नव्य-न्याय के अध्ययन से हर प्रकार का अज्ञान दूर हो जाता है। बुद्धि निर्मल होती है। संस्कृत पदों के व्यवहार की शक्ति उत्पन्न होती है। शास्त्रान्तर के अभ्यास की योग्यता प्राप्त होती है। इस प्रकार तर्कशास्त्र में किया गया श्रम छात्रें का हर तरह से उपकार करता है।

प्राचीन-न्याय-वैशेषिक-विभाग में पाठ्यक्रमानुसार छात्रों का विवरण :-

	सामान्य		अनुसूचित जाति		अनुसूचित जन जाति		विकलांग		अन्य पिछड़ा वर्ग		अल्पसंख्यक		
पाठ्यक्रम	पु०	म०	पु०	म०	पु०	म०	पु०	म०	पु०	म०	पु०	म०	कुल
शास्त्री प्रथम वर्ष	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	..	..	००
शास्त्री द्वितीय वर्ष	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	..	..	००
शास्त्री ततीय वर्ष	१	.	.	.	.	.	.	.	.	.	..	..	०१
आचार्य प्रथम वर्ष	१	.	.	.	.	.	.	.	.	.	..	..	०१
आचार्य द्वितीय वर्ष	१	.	.	.	.	.	.	.	.	.	..	..	०१
विशिष्टाचार्य	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	..	..	००
विद्यावारिधि	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	..	..	००
कुल	०३	.	.	.	.	.	.	.	.	.	..	..	०३

नव्य न्याय विभाग में पाठ्यक्रमानुसार छात्रों का विवरण :-

	सामान्य		अनुसूचित जाति		अनुसूचित जन जाति		विकलांग		अन्य पिछड़ा वर्ग		अल्पसंख्यक		
पाठ्यक्रम	पु०	म०	पु०	म०	पु०	म०	पु०	म०	पु०	म०	पु०	म०	कुल
शास्त्री प्रथम वर्ष	६	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	०६
शास्त्री द्वितीय वर्ष	१	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	०१
शास्त्री ततीय वर्ष	२	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	०२

आचार्य प्रथम वर्ष	३	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	०३
आचार्य द्वितीय वर्ष	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	००
विशिष्टाचार्य	.	.	१	.	.	.	.	.	.	.	.	.	०१
विद्यावारिधि	१	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	०१
कुल	१३	.	०१	.	.	.	.	.	.	.	.	.	१४

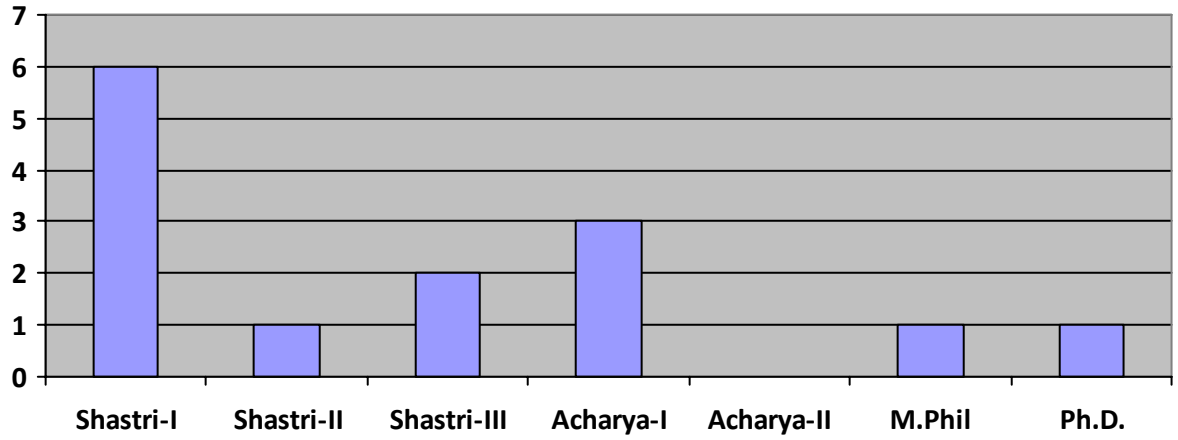

प्राचीन-न्याय वैशेषिक एवं नव्य-न्याय-विभागीय आचार्य

1.	प्रो. पीयूषकान्त दीक्षित	प्रोफेसर
2.	डॉ. विष्णुपद महापात्र	सह प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष
3.	डॉ. महानन्द झा	सह प्रोफेसर
4.	डॉ. रामचन्द्र शर्मा	सहायक प्रोफेसर

साङ्ख्य-योग-विभाग

साङ्ख्य-योग का अध्ययन करने वाले छात्र प्रमुख रूप से साङ्ख्य दर्शन एवं योग-दर्शन के आधारभूत ग्रन्थों का अध्ययन करते हैं । साङ्ख्य-दर्शन का प्रथम ग्रन्थ महर्षि कपिल के द्वारा प्रणीत साङ्ख्य-सूत्र है। प्रसिद्ध आचार्य ईश्वरकृष्ण द्वारा रचित साङ्ख्यकारिका इस दर्शन का अत्यन्त प्रामाणिक ग्रन्थ है । इस दर्शन में कुछ पदार्थ केवल प्रकृति हैं, कुछ प्रकृति एवं विकृति हैं, कुछ मात्र विकृति हैं, तो कुछ न प्रकृति हैं और न ही विकृति। इस प्रकार साङ्ख्यदर्शन में स्वीकृत सभी पच्चीस पदार्थों को चार वर्गों में बाँटा गया है ।

कपिल द्वारा प्रणीत साङ्ख्यदर्शन में ईश्वर की सत्ता न होने से इसे निरीश्वर साङ्ख्य कहते हैं । इस दर्शन में प्रकृति, महत्तत्त्व, अहङ्कार, पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ (घ्राण-रसना-चक्षु-त्वक्-श्रोत्र), पाँच कर्मेन्द्रियाँ (वाक्-पाणि-पाद-पायु-उपस्थ) मन, पाँच तन्मात्राएँ (गन्धातन्मात्रा-रसतन्मात्रा-रूपतन्मात्रा-स्पर्शतन्मात्रा-शब्दतन्मात्रा) एवं पाँच महाभूत (पृथ्वी-जल-तेज-वायु-आकाश) एवं पुरुष इस प्रकार कुल पच्चीस पदार्थ माने गये हैं । इन्हीं पदार्थों का अध्ययन

इस दर्शन में कराया जाता है । योग-दर्शन का प्रथम ग्रन्थ महर्षि पतञ्जलि द्वारा प्रणीत 'योग-सूत्र' है । इस ग्रन्थ को पातञ्जल योगदर्शन के नाम से भी जाना जाता है । इस योग-दर्शन में साङ्ख्य दर्शन के ही सभी पच्चीस पदार्थ माने गये हैं, केवल पुरुष-विशेष के रूप में एक ईश्वर नाम का पदार्थ यहाँ अतिरिक्त स्वीकार किया गया है । इसीलिये योगदर्शन को सेश्वर साङ्ख्यदर्शन भी कहा जाता है । विभाग द्वारा दिनांक 21 मार्च 2016 से 22 मार्च 2016 तक 'भारतीयदर्शनषु प्रमेयविमर्श' विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रिय संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

सांख्ययोग-विभाग में पाठ्यक्रमानुसार छात्रों का विवरणः –

	सामान्य		अनुसूचित जाति		अनुसूचित जन जाति		विकलांग		अन्य पिछड़ा वर्ग		अल्पसंख्यक		
पाठ्यक्रम	पु०	म०	पु०	म०	पु०	म०	पु०	म०	पु०	म०	पु०	म०	कुल
शास्त्री प्रथम वर्ष	.	.	१	.	.	.	.	.	.	.	.	.	०१
शास्त्री द्वितीय वर्ष	१	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	०१
शास्त्री ततीय वर्ष	.	.	.	.	.	.	.	.	१	.	.	.	०१
आचार्य प्रथम वर्ष	१	.	.	.	.	.	.	.	१	.	.	.	०२
आचार्य द्वितीय वर्ष	१	.	१	.	.	.	.	.	१	.	.	.	०३
विशिष्टाचार्य	.	१	.	.	.	.	.	.	१	.	.	.	०२
विद्यावारिधि	.	.	.	.	.	.	.	.	१	.	.	.	०१
षाण्मासिक योग प्रमाण पत्रीय	१८	१४	.	.	१	.	.	.	१	.	.	.	३४
एकवर्षीय पी.जी. योग डिप्लोमा	८५	१६	६	२	२	.	.	.	२४	५	.	.	१४०
कुल	१०६	३१	८	२	३	.	.	.	३०	५	.	.	१८५

सांख्ययोग व्याख्यानमाला

दिनांक 21/3/2016 को आचार्य पट्टाभिराम स्मारक व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया।

सांख्ययोग-विभागीय आचार्य

1. प्रो. महेश प्रसाद सिलोड़ी — प्रोफेसर
2. डॉ. रविशंकर शुक्ल — सह प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष
3. डॉ. मारकण्डेय नाथ तिवारी — सहायक प्रोफेसर

अद्वैत-वेदान्त-विभाग

अद्वैत-वेदान्त का अध्ययन करने वाले छात्र मुख्य रूप से 'ब्रह्मसूत्र' का अध्ययन करते हैं। अद्वैत वेदान्त को 'शाङ्करदर्शन' भी कहा गया है । **'वेदान्तो नाम उपनिषत् प्रमाणम्'** वेदान्त में 'उपनिषद्' को अर्थात् वेद-वाक्यों को परम प्रमाण के रूप में स्वीकार किया जाता है । अद्वैत वेदान्त चतुर्लक्षण हैं । वेदान्तशास्त्र के प्रथम अध्याय में यह बताया गया है कि समस्त वेदान्तशास्त्र का तात्पर्य ब्रह्म में समाहित है इस शाङ्कर दर्शन में ब्रह्म ही एक सत्य है, सम्पूर्ण संसार ब्रह्म का विवर्त है, यही विभिन्न युक्तियों से समझाया गया है। यह दर्शन यदि ठीक से अध्येता हृदयङ्गम कर ले तो जीवन की अनेक विसङ्गतियों से छुटकारा पा सकता है तथा समाज में समता एवं एकता सुप्रतिष्ठित हो सकती है ।

अद्वैतवेदान्त-विभाग में पाठ्यक्रमानुसार छात्रों का विवरण :-

	सामान्य		अनुसूचित जाति		अनुसूचित जन जाति		विकलांग		अन्य पिछड़ा वर्ग		अल्पसंख्यक		
पाठ्यक्रम	पु०	म०	पु०	म०	पु०	म०	पु०	म०	पु०	म०	पु०	म०	कुल
शास्त्री प्रथम वर्ष	.	.	.	१	.	.	.	.	.	.	.	.	०१
शास्त्री द्वितीय वर्ष	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	००
शास्त्री ततीय वर्ष	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	००
आचार्य प्रथम वर्ष	२	१	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	०३
आचार्य द्वितीय वर्ष	२	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	०२
विशिष्टाचार्य	.	.	.	.	.	.	.	.	..	.	.	.	००
विद्यावारिधि	३	.	.	१	.	.	.	.	.	.	.	.	०४
कुल	०७	०१	००	०२	००	००	००	००	००	००	००	००	१०

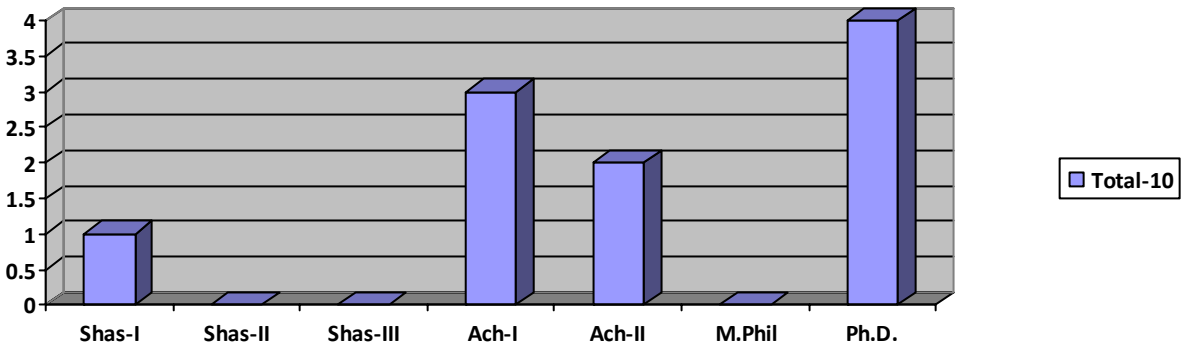

अद्वैत-वेदान्त-विभागीय आचार्य

1. प्रो. एस.एन.रमामणि — प्रोफेसर
2. प्रो. शुद्धानन्द पाठक — प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष
3. डॉ. सतीश के.एस. — सहायक प्रोफेसर

विशिष्टाद्वैत-वेदान्त-विभाग

''यस्य पृथिवी शरीरं यस्यापः शरीरं यस्यात्मा शरीरम्'' इस बृहदारण्यक श्रुति के द्वारा अवगत होता है कि चित् (चेतन जीव) एवं अचित् (जड़ प्रकृति पृथिव्यादि) शरीर से विशिष्ट आत्मा एक है, अद्वैत है, ऐसा निश्चित होता है । अतः उपनिषदादि प्रतिपाद्य केवल अद्वैत नहीं है, किन्तु चेतन एवं अचेतन से विशिष्ट ब्रह्म या ईश्वर अद्वैत है । जैसे लोक में शरीर एवं शरीरी आत्मा का परस्पर अत्यन्त भेद होने पर भी 'यह एक देवदत्त है' ऐसा जड़ एवं चेतन का विशिष्ट एकत्व का व्यवहार होता है, वैसे ही जड़ पदार्थ एवं जीवों का अनेकत्व होने पर भी एवं ब्रह्म से उन सबका भेद होने पर भी चित्-अचित् से विशिष्ट ब्रह्म एक है - अद्वैत है ऐसा विशिष्टाद्वैतवेदान्त का सिद्धान्त है। इस सिद्धान्त का मुख्य ग्रन्थ श्री बादरायण प्रणीत ब्रह्मसूत्र पर रामानुजाचार्य का ''श्रीभाष्य'' है, जिसके अध्ययन एवं श्रवण, मनन से जिज्ञासु छात्रगण विशिष्टाद्वैतवेदान्त को यथावत् समझकर अपने देवदुर्लभ मानवजीवन को धान्य एवं सफल बना सकते हैं ।

विशिष्टाद्वैत-वेदान्त-विभाग में पाठ्यक्रमानुसार छात्रों का विवरण :-

	सामान्य		अनुसूचित जाति		अनुसूचित जन जाति		विकलांग		अन्य पिछड़ा वर्ग		अल्पसंख्यक		
पाठ्यक्रम	पु०	म०	पु०	म०	पु०	म०	पु०	म०	पु०	म०	पु०	म०	कुल
शास्त्री प्रथम वर्ष	१	.	.	.	.	.	.	.	१	.	.	.	०२
शास्त्री द्वितीय वर्ष	१	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	०१
शास्त्री ततीय वर्ष	१	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	०१
आचार्य प्रथम वर्ष	२	१	.	१	.	.	.	.	.	.	.	.	०४
आचार्य द्वितीय वर्ष	२	५	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	०७
विशिष्टाचार्य	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	००
विद्यावारिधि	.	.	.	१	.	.	.	.	.	.	.	.	०१
कुल	०७	०६	००	०२	००	००	००	००	०१	००	००	००	१६

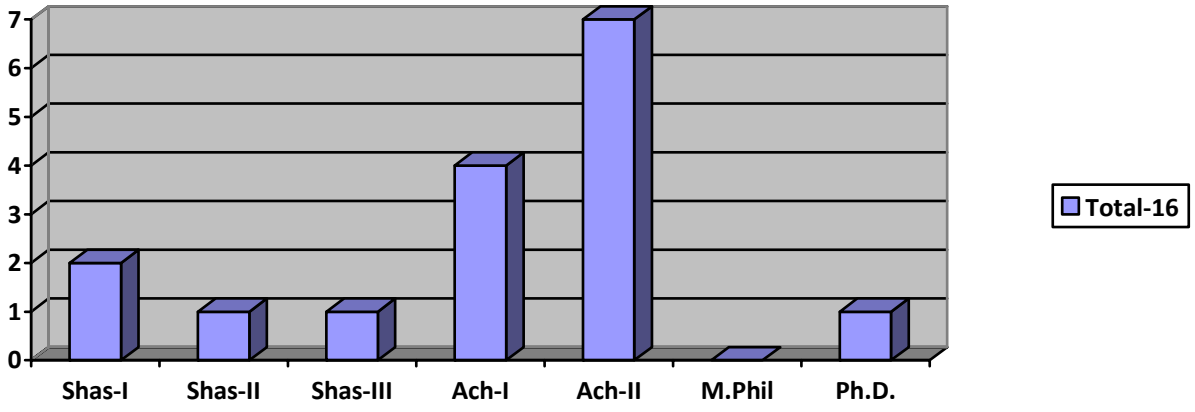

विशिष्टाद्वैत-वेदान्त- विभागीय आचार्य

1.	प्रो. केदार प्रसाद परोहा	प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष
2.	डॉ. के. अनन्त	सहायक प्रोफेसर
3.	श्री सुदर्शनन्.एस.	सहायक प्रोफेसर

जैनदर्शन-विभाग

ऋषभदेव से लेकर महावीर पर्यन्त चौबीस अर्हन्त तीर्थङ्करों को 'जिन' कहते हैं । जिन के दर्शन को ही जैन दर्शन कहते हैं । जैनदर्शन के तत्त्वज्ञान को सूत्रशैली में प्रस्तुत करने वाला 'तत्त्वार्थ-सूत्र' आचार्य उमास्वामी के द्वारा लिखित एक अद्वितीय ग्रन्थ है । तत्त्वार्थ सूत्र में प्रस्तुत विषयों का ही विशद विवेचन प्राय: जैन-दर्शन के अन्य ग्रन्थों में भी किया गया है, जिनका अध्ययन-अध्यापन जैन-दर्शन विषय के अन्तर्गत होता है । हरिभद्र सूरि का 'षड्दर्शनसमुच्चय' एवं 'शास्त्रवार्त्तासमुच्चय' भी जैनदर्शन की मान्यताओं को समझने में अत्यन्त उपादेय हैं। जैन-दर्शन में जीव-अजीव-आस्रव-बन्ध-संवर- निर्जरा-मोक्ष ये सात तत्त्व माने गये हैं । इनका तात्त्विक विश्लेषण तत्त्वार्थ-सूत्र में सुलभ है । जैनदर्शन का अनेकान्तवाद या स्याद्वाद आज के आधुनिक युग में अनेक प्रकार की सामाजिक समस्याओं के उन्मूलन में अत्यन्त उपादेय है ।

जैन-दर्शन विभाग में पाठ्यक्रमानुसार छात्रों का विवरण :-

	सामान्य		अनुसूचित जाति		अनुसूचित जन जाति		विकलांग		अन्य पिछड़ा वर्ग		अल्पसंख्यक		
पाठ्यक्रम	पु०	म०	पु०	म०	पु०	म०	पु०	म०	पु०	म०	पु०	म०	कुल
शास्त्री प्रथम वर्ष	४	.	.	.	.	.	.	.	८	३	.	.	१५
शास्त्री द्वितीय वर्ष	१	.	.	.	.	.	.	.	१	.	.	.	०२
शास्त्री ततीय वर्ष	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	००
आचार्य प्रथम वर्ष	.	२	.	.	.	.	.	.	१	.	.	.	०३
आचार्य द्वितीय वर्ष	२	१	.	२	.	.	.	.	.	२	.	.	०७
विशिष्टाचार्य	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	००
विद्यावारिधि	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	००
कुल	०७	०३	००	०२	००	००	००	००	१०	०५	००	००	२७

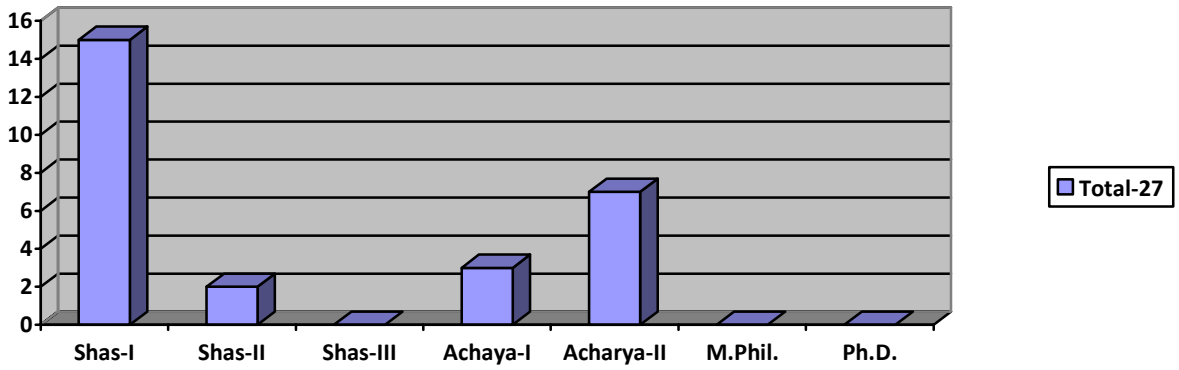

जैनदर्शन - विभागीय आचार्य

1.	प्रो. वीर सागर जैन	प्रोफेसर
2.	डॉ. अनेकान्त कुमार जैन	सह प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष
3.	डॉ. कुलदीप कुमार	सहायक प्रोफेसर

सर्वदर्शन-विभाग

सर्वदर्शन दर्शनशास्त्र का सर्वाङ्गीण अध्ययन कराने वाला शास्त्र है। दर्शन का लक्ष्य नि:श्रेयस् की प्राप्ति है। व्यक्ति का परम लक्ष्य भौतिक भी हो सकता है, आध्यात्मिक भी। दर्शनशास्त्र दोनों मार्गों का औचित्य बतलाते हुए कर्तव्याकर्तव्य, शुभाशुभ का दिशाबोध कराता है । अत: व्यक्ति के भौतिक एवं आध्यात्मिक विकास के लिये महत्त्वपूर्ण है ।

भारतीय दर्शन का आरम्भ वेदों से होता है, इसका उत्कर्ष उपनिषदों में मिलता है । कालान्तर में यथार्थ तत्त्व को अलग-अलग विश्लेषण के आधार पर समझाने की प्रक्रिया में सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा, वेदान्त- इन षड्दर्शनों का एवं चार्वाक, जैन, बौद्ध, शैवादि दर्शन का अभ्युदय हुआ । इन सभी दर्शनों ने अपने-अपने विचारों को सूत्र-शैली में प्रस्तुत किया, जो तत्तत् दर्शनों के सूत्र-ग्रन्थों के नाम, जैसे- साङ्ख्यसूत्र, योगसूत्र, न्यायसूत्र, मीमांसासूत्र आदि से प्रसिद्ध हैं । सर्वदर्शन विषय में इन सभी दर्शनों का अध्ययन उनके आधारभूत सूत्रग्रन्थों एवं भाष्यग्रन्थों के माध्यम से करवाया जाता है । साथ ही समकालीन दर्शन एवं पाश्चात्य दर्शन का संक्षिप्त ज्ञान भी दिया जाता है । विभाग द्वारा ''भारतीयदर्शनानां विविधा शाखा'' विषय पर आई.सी.पी.आर, नई दिल्ली के सहयोग से दिनांक 8 मार्च से 10 मार्च 2016 तक तीन दिवसीय राष्ट्रिय संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

सर्वदर्शन-विभाग में पाठ्यक्रमानुसार छात्रों का विवरण :-अ

	सामान्य		अनुसूचित जाति		अनुसूचित जन जाति		विकलांग		अन्य पिछड़ा वर्ग		ल्पसंख्यक		
पाठ्यक्रम	पु०	म०	पु०	म०	पु०	म०	पु०	म०	पु०	म०	पु०	म०	कुल
शास्त्री प्रथम वर्ष	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	००
शास्त्री द्वितीय वर्ष	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	००
शास्त्री ततीय वर्ष	१	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	०१
आचार्य प्रथम वर्ष	१	.	.	.	.	.	.	.	२	.	.	.	०३
आचार्य द्वितीय वर्ष	२	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	०२
विशिष्टाचार्य	२	१	.	.	.	.	.	.	३	१	.	.	०७
विद्यावारिधि	३	१	१	.	.	.	.	.	.	१	.	.	०६
कुल	०६	०२	०१	००	००	००	००	००	०५	०२	००	००	१६

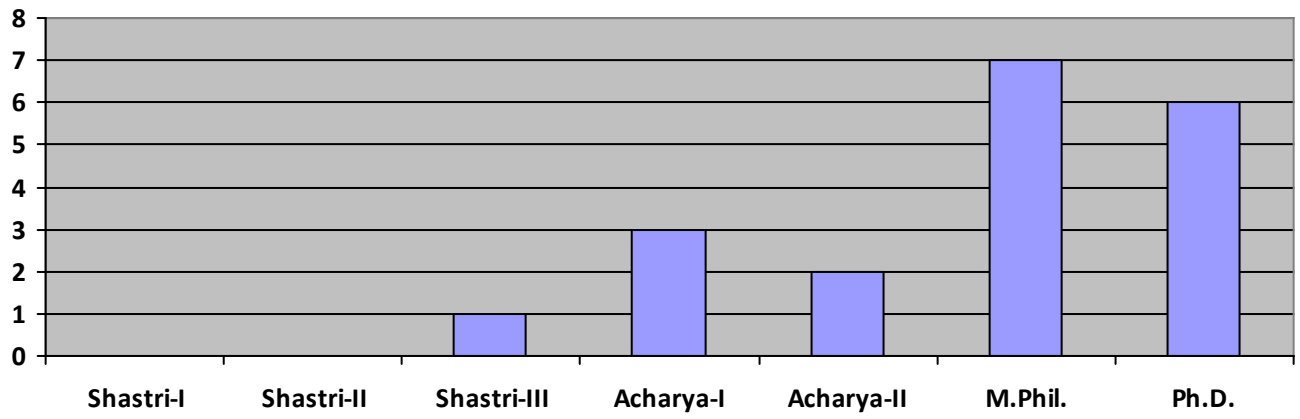

सर्वदर्शन- विभागीय आचार्य

1. प्रो. हरेराम त्रिपाठी — प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष
2. डॉ. संगीता खन्ना — सह प्रोफेसर
3. डॉ. प्रभाकर प्रसाद — सहायक प्रोफेसर
4. डॉ. जवाहर लाल — सहायक प्रोफेसर

मीमांसा-विभाग

'पूजितविचारवचनो मीमांसाशब्दः' मीमांसा शब्द का अर्थ पूजित विचार होता है । **''कर्मेति मीमांसकाः''** इस वचन के अनुसार मीमांसा में कर्म को ही ईश्वर माना गया है । मीमांसा का प्रथम ग्रन्थ 'जैमिनि-सूत्र' है इसे द्वादशलक्षणी नाम से भी जाना जाता है । इस दर्शन में द्वादश अध्याय हैं । इस मीमांसा दर्शन के प्रवर्तक महर्षि जैमिनि हैं । धर्म का क्या लक्षण है एवं धर्म में क्या प्रमाण है? यही समझाने के लिये इस ग्रन्थ की रचना हुई है । इसलिये इस दर्शन का प्रथम सूत्र - **'अथातो धर्मजिज्ञासा'** (जै.सू.1/1/1) है । इस शास्त्र में अनेक अधिकरण हैं, जिनके आधार पर धर्म या मानव-कर्त्तव्य याग आदि का विचार होता है। अधिकरण में पाँच अवयव या भाग होते हैं - विषय, संशय, पूर्वपक्ष, सिद्धान्त एवं सङ्गति।

मीमांसा-विभाग में पाठ्यक्रमानुसार छात्रों का विवरण :-

	सामान्य		अनुसूचित जाति		अनुसूचित जन जाति		विकलांग		अन्य पिछड़ा वर्ग		अल्पसंख्यक		
पाठ्यक्रम	पु०	म०	पु०	म०	पु०	म०	पु०	म०	पु०	म०	पु०	म०	कुल
शास्त्री प्रथम वर्ष	१	.	.	.	.	.	.	.	१	.	.	.	०२
शास्त्री द्वितीय वर्ष	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	००
शास्त्री ततीय वर्ष	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	००
आचार्य प्रथम वर्ष	३	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	०३
आचार्य द्वितीय वर्ष	.	.	.	.	.	.	.	.	२	.	.	.	०२
विशिष्टाचार्य	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	००
विद्यावारिधि	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	.	००
कुल	०४	००	००	००	००	००	००	००	०३	००	००	००	०७

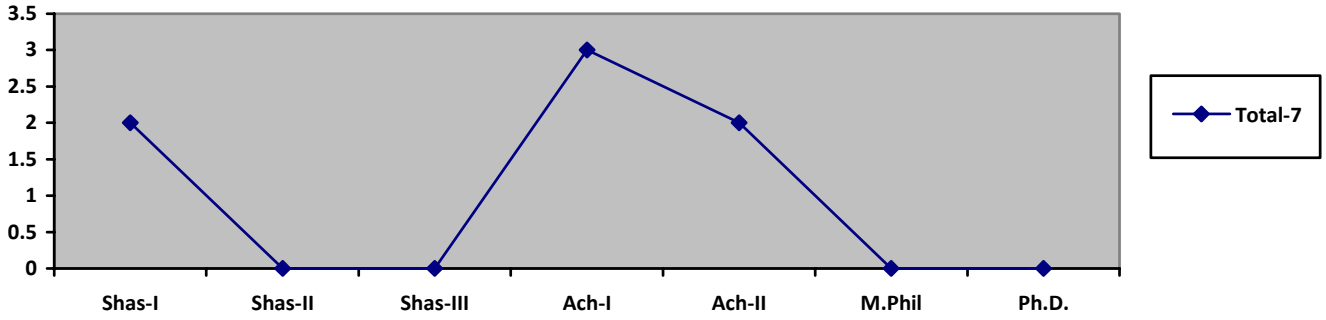

मीमांसा- विभागीय आचार्य

डॉ. ए.एस. आरावमुदन् सहायक प्रोफेसर

IV

आधुनिक ज्ञान-विज्ञान संकाय

संस्कृत शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षण-अधिगम प्रणालियों मे सामर्थ्य विकसित करने हेतु प्रतिबद्ध, कुशल एवं प्रशिक्षित अध्यापक एवं अध्यापक शिक्षक तैयार करना है, जिसके लिए विभाग द्वारा शिक्षाशास्त्री (बी.एड), शिक्षाचार्य (एम.एड.), विशिष्टाचार्य(एम.फिल) एवं विद्यावारिधि(पी-एच.डी.) पाठ्यक्रमों का अध्यापन किया जाता है। इन पाठ्यक्रमों में प्रवेश अखिल भारतीय संयुक्त प्रवेश परीक्षा के आधार पर किया जाता है जो श्री ला.ब.शा. रा.सं. विद्यापीठ, नई दिल्ली, रा.सं.संस्थान, नई दिल्ली एवं रा.सं.विद्यापीठ तिरूपति द्वारा वार्शिक क्रमानुसार आयोजित की जाती है।

शिक्षाशास्त्रविभाग का ध्येय संस्कृत शिक्षणशास्त्र पर केन्द्रित शिक्षण अधिगम प्रणालियों का प्रभावी नियोजन, अभिकल्पन एवं क्रियान्वयन करना है। साथ ही संस्कृत शिक्षणशास्त्र के अनुक्षेत्र में नवाचारी कार्यक्रमों को प्रोत्साहित करना एवं संस्कृत शिक्षा पर केन्द्रित शोध में अन्तर्विद्यापरक उपागम को बढ़ावा देना इस ध्येय का केन्द्रबिन्दु है। शिक्षण हेतु विभाग में उत्तम भौतिक एवं अनुदेशनात्मक सुविधायें उपलब्ध हैं। तीन प्रयोगशालाओं यथा-भाषा, मनोविज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के साथ-साथ विभागीय पुस्तकालय, संसाधन कक्ष, सामाजिक अध्ययन केन्द्र, कला कक्ष तथा संगोष्ठी कक्ष से विभाग समुन्नत है। शिक्षाशास्त्री के छात्रों को विद्यालयीय स्तर पर शिक्षण हेतु प्रशिक्षित किया जाता है। इन्हें विद्यालय में पढ़ाये जाने वाले संस्कृत भाषा एवं प्राचीन विषयों यथा-साहित्य, दर्शन एवं ज्योतिष के साथ-साथ आधुनिक विषयों के शिक्षण हेतु तैयार किया जाता है। कम्प्यूटर विषय का अध्ययन भी कराया जाता है। शिक्षाचार्य पाठ्यक्रम द्वारा विद्यार्थियों को विभिन्न शिक्षकों को प्रशिक्षित करने के लिए तैयार किया जाता है। शिक्षाचार्य के विद्यार्थियों द्वारा प्राचीन भारतीय परिप्रेक्ष्य में शिक्षा के विविध पक्षों एवं आधुनिक परिप्रेक्ष्य में विद्यालयीय समस्याओं, शैक्षिक प्रबन्धन, शिक्षा की वर्तमान नीतियों, विशिष्ट शिक्षा, शिक्षा के दार्शनिक, मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक पक्षों, नवाचारी शिक्षण तथा शिक्षण अधिगम की दृष्टि से भारतीय साहित्य से सम्बन्धित विषयों पर लघुशोध प्रबन्ध प्रस्तुत किये जाते हैं।

विशिष्टाचार्य पाठ्यक्रम द्वारा विद्यार्थियों को विद्यावारिधि/शोध कार्य (शिक्षाशास्त्र) हेतु तैयार किया जाता है। विद्यावारिधि के विद्यार्थी पारम्परिक एवं आधुनिक शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों से सम्बन्धित शोध कार्य करते हैं। विभाग द्वारा इस सत्र से विद्यावारिधि पूर्व (पीएच.डी) षाणमासिक शिक्षा पाठ्यक्रम संचालित किया जा रहा है।

शिक्षाशास्त्र विभाग में पाठ्यक्रमानुसार छात्रों का विवरणः-

	सामान्य		अनुसूचित जाति		अनुसूचित जन जाति		विकलांग		अन्य पिछड़ा वर्ग		अल्पसंख्यक		
पाठ्यक्रम	पु०	म०	पु०	म०	पु०	म०	पु०	म०	पु०	म०	पु०	म०	कुल
शिक्षाशास्त्री	८२	३८	५	१२	.	.	१	.	२५	१७	.	.	१८०
शिक्षाचार्य	६	४	१	.	.	.	१	.	.	१	.	.	१३

विशिष्टाचार्य	६	३	१	१	.	.	.	.	.	.	.	.	११
विद्यावारिधि	१	३	१	.	.	.	.	.	३	१	.	.	०६
कुल	६५	४८	०८	१३	००	००	०२	००	२८	१६	००	००	२१३

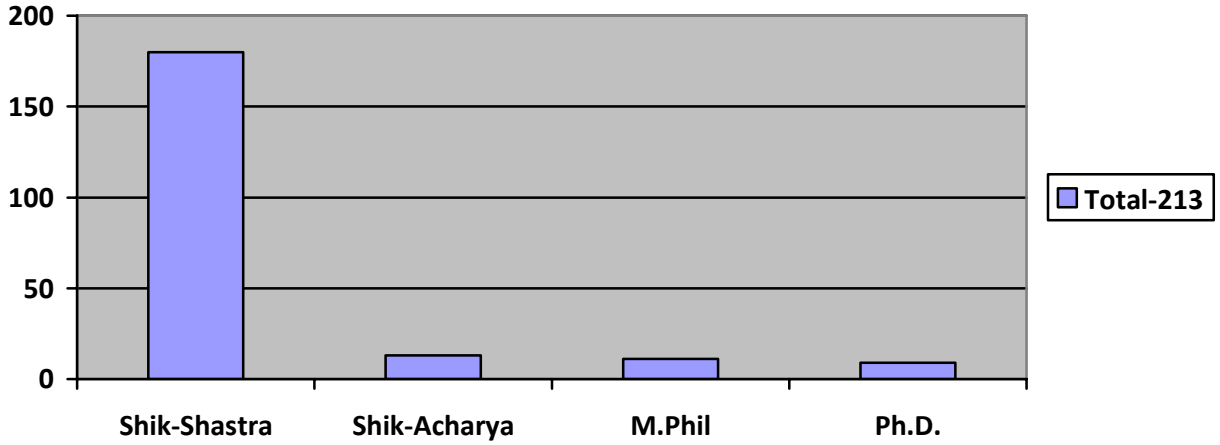

आधुनिक ज्ञान-विज्ञान संकाय के आचार्य

1.	प्रो. नागेन्द्र झा	–	प्रोफेसर
2.	प्रो. भास्कर मिश्र	–	प्रोफेसर
3.	प्रो. रमेश प्रसाद पाठक	–	प्रोफेसर, संकाय प्रमुख एवं विभागाधयक्ष
4.	प्रो. रचना वर्मा मोहन	–	प्रोफेसर
5.	डॉ. के. भारतभूषण	–	सह प्रोफेसर
6.	डॉ. सदन सिंह	–	सह प्रोफेसर
7.	डॉ. रजनी जोशी चौधरी	–	सह प्रोफेसर
8.	डॉ. एम.जयकृष्णन्	–	सह प्रोफेसर
9.	डॉ. कुसुम यदुलाल	–	सहायक प्रोफेसर
10.	डॉ. मीनाक्षी मिश्र	–	सहायक प्रोफेसर
11.	डॉ. विमलेश शर्मा	–	सहायक प्रोफेसर
12.	डॉ. अमिता पाण्डेय भारद्वाज	–	सहायक प्रोफेसर
13.	श्री मनोज कुमार मीणा	–	सहायक प्रोफेसर

संकाय की गतिविधियाँ

आधुनिक ज्ञान–विज्ञान संकाय एक प्रशिक्षण विभाग होने के कारण अनेक गतिविधियों का आयोजन करता है, जो कि विद्यार्थियों में शैक्षिक मूल्यों के विकास तथा व्यावसायिक नैतिकता विकसित करने के लिये आवश्यक समझा जाता है ।

क) राष्ट्रीय संगोष्ठी/कार्यशाला/विशिष्ट व्याख्यान

(1) शिक्षाशास्त्र विभाग द्वारा दिनांक 16.03.2016 से 17.03.2016 तक ''बदलते शैक्षिक परिदृश्य में मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य'' विषय पर द्विदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन आधुनिक ज्ञान-विज्ञान संकाय प्रमुख प्रो0 आर.पी.पाठक की अध्यक्षता में सम्पन्न किया गया ।

(2) द्विवर्षीय शिक्षाचार्य पाठ्यक्रम के अन्तर्गत दिनांक 31.03.2016 को लैंगिक संवेदीकरण कार्यशाला का आयोजन किया गया।

गत वर्षों की तरह इस वर्ष भी विभाग द्वारा अनेक गतिविधियों का आयोजन किया गया, जो निम्न प्रकार है-

i सत्र-प्रारम्भ

सत्र का प्रारम्भ 1 जुलाई, 2015 को हुआ तथा प्रवेश प्रक्रिया प्रारम्भ की गयी ।

ii विद्यार्थियों का अभिविन्यास कार्यक्रम

30 जुलाई 2015 को नये सत्र का औपचारिक उद्घाटन संकायाध्यक्ष प्रो. आर.पी.पाठक द्वारा किया गया तथा अध्यापकों द्वारा शिक्षाशास्त्री(बी.एड्.) एवं शिक्षाचार्य (एम.एड्.) के विद्यार्थियों को उनके पाठ्यक्रम से सम्बन्धित जैसे सैद्धान्तिक प्रश्नपत्र, शिक्षण अभ्यास तथा सत्रीय कार्यों के बारे में बताया गया। विभाग के सभी शिक्षकों ने पढ़ाये जाने वाले विषयों के बारे में भी चर्चा की। एम.एड्. और एम.फिल. के विद्यार्थियों को भी उनके विभिन्न प्रश्न पत्रों के विषय में उनके शिक्षकों द्वारा अभिमुख किया गया। सभी वैकल्पिक विषयों को उनके समक्ष परिचयात्मक रूप में प्रस्तुत किया गया, जिससे विद्यार्थी बुद्धिमत्तापूर्ण ढंग से अपने वैकल्पिक विषय का चयन कर सकें। लघुशोध प्रबन्ध के लिये विषयों का चयन करने हेतु एक अलग अभिविन्यास कार्यक्रम किया गया।

ख. शिक्षाशास्त्री (बी.एड्.) की गतिविधियाँ

i. **प्राथमिक चिकित्सा प्रशिक्षण**- प्राथमिक चिकित्सा प्रशिक्षण शिक्षाशास्त्री के छात्र-छात्राओं के लिए पाठ्यक्रम का एक अनिवार्य अंग है। दिनांक 23.09.2015 से 8.10.2015 के दौरान यह प्रशिक्षण शिक्षाशास्त्री के छात्र-छात्राओं को दिया गया ।

ii. **संस्कृत सम्भाषण शिविर**- संस्कृत विश्वविद्यालय में शिक्षण की आवश्यकता को देखते हुए, शिक्षाशास्त्र विभाग के विद्यार्थियों के लिये दिनांक 27-10-2015 से 09-11-2015 तक संस्कृत सम्भाषण कक्षाओं का आयोजन किया गया। ।

iii. **शैक्षिक पर्यटन** - शिक्षाशास्त्री छात्रों में वास्तविक-ज्ञान के विकास एवं प्रकृति पर्यवेक्षण अभिवृद्धि, संगठनात्मक तथा प्रबन्धन कौशल विकसित करने के लिये प्रतिवर्ष विभाग द्वारा शैक्षिक भ्रमण कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है।

iv **सूक्ष्म शिक्षण कार्यक्रम**-छात्राध्यापकों को स्कूलों में प्रशिक्षण अभ्यास शुरू करने से पूर्व सूक्ष्म शिक्षण प्रशिक्षण द्वारा प्रशिक्षित किया गया ।

v **विद्यालय सम्बद्धता कार्यक्रम हेतु अभिविन्यास कार्यक्रम**- शिक्षाशास्त्री (बी.एड्.) के प्रशिक्षणार्थियों के लिए दो सप्ताह के विद्यालयसम्बद्धता कार्यक्रम हेतु एक दिन का अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया गया।

vi. **विद्यालय सम्बद्धता कार्यक्रम**- हेतु अभिविन्यास कार्यक्रम शिक्षाशास्त्री (बी.एड्.) के प्रशिक्षणार्थियों ने दिल्ली के माध्यमिक विद्यालयों में जाकर विद्यालय की विभिन्न गतिविधियों का अवलोकन किया तथा प्रतिवेदन प्रस्तुत किया।

vii. **फाउण्डेशन कोर्स** -विद्यापीठ के महिला अध्ययन केन्द्र के निर्देशन में शिक्षा शास्त्री के छात्रों को लैंगिक संवेदीकरण तथा तात्कालिक नारी सन्दर्भित मुद्दों के बारे में फाउण्डेशन कोर्स द्विवर्षीय पाठ्यक्रम के चतुर्थ सेमेस्टर (सत्र 2016-17) में आयोजित किया जायेगा।

viii. **स्काउट एवं गाइड प्रशिक्षण** - स्काउट एवं गाइड प्रशिक्षण शिक्षाशास्त्री के छात्र-छात्राओं के लिये पाठ्यक्रम का एक अनिवार्य अंग है। यह प्रशिक्षण दिल्ली राज्य भारत स्काउट एवं गाइड की ओर से उनके कैम्पिंग ग्राउण्ड में दिया जाता है। प्रारम्भिक प्रशिक्षण डे कैम्प के रूप में होता है। द्विवर्षीय पाठ्यक्रम के तृतीय सेमेस्टर (सत्र 2016-2017) में यह कार्यक्रम आयोजित किया जायेगा।

(ग) शिक्षाचार्य (एम.एड्.) की गतिविधियाँ

(i) **कक्षा-संगोष्ठी**-

शिक्षाचार्य (एम.एड्.) के विद्यार्थियों के लिये प्रथम एवं द्वितीय सेमेस्टर में प्रत्येक सप्ताह में एक कक्षा संगोष्ठी का आयोजन किया गया । संगोष्ठी हेतु विषयों की घोषणा एक सप्ताह पूर्व की जाती है। प्रत्येक विद्यार्थी को पूरे सत्र में पत्र प्रस्तुत करने होते हैं। संगोष्ठी से सम्बन्धित सभी कार्य जैसे संयोजन, प्रतिवेदन लेखन, संगोष्ठी व्यवस्था तथा धन्यवाद ज्ञापन इत्यादि विद्यार्थियों के द्वारा ही किया जाता है।

(ii) **सत्रीय कार्य**-

प्रत्येक वर्ष शिक्षाचार्य (एम.एड्.) के विद्यार्थियों द्वारा पूरे सत्र में कई कार्यक्रम सम्पन्न किये जाते हैं। इस वर्ष भी शिक्षाचार्य (एम.एड्.) छात्रों द्वारा उनके पाठ्यक्रमानुसार दोनों सेमेस्टरों में सत्रीय कार्य सम्पन्न किये गये ।

(iii) **मनोविज्ञान परीक्षण एवं प्रयोग-**

शिक्षाचार्य (एम.एड्.) के छात्रों द्वारा प्रथम सेमेस्टर में चार मनोवैज्ञानिक परीक्षणों तथा प्रयोगों को सम्पन्न कर लिखित प्रतिवेदन प्रस्तुत किया गया।

(घ) विभागीय प्रकाशन-

विभाग द्वारा सत्र 2015-2016 में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी की स्मारिका प्रकाशनाधीन है तथा विभागीय पत्रिका 'शिक्षाज्योति' सत्र (2014-15) का प्रकाशन किया गया ।

१२. शोध एवं प्रकाशन-विभाग

संस्कृत वाङ्मय की प्राचीन पाण्डुलिपियों के संरक्षण, सम्पादन, प्रकाशन, और अनुसन्धान हेतु शोध एवं प्रकाशन विभाग का गठन किया गया है । इस विभाग द्वारा त्रैमासिक शोध-पत्रिका ''शोधप्रभा''का सम्पादन एवं प्रकाशन किया जाता है। विद्यापीठ द्वारा प्रकाशित होने वाली शोधपत्रिका 'शोधप्रभा' में संस्कृत के उद्भट विद्वानों के साथ-साथ नये अनुसन्धानकर्त्ताओं के शोधपत्र प्रकाशित किये जाते हैं। इस विभाग द्वारा समय-समय पर विभिन्न विषयों पर शोधगोष्ठियों, परिचर्चाओं, कार्यशालाओं और सम्मेलनों का भी आयोजन किया जाता है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा शोध के सम्बन्ध में निर्गत विनियम, 2009 के क्रियान्वयन हेतु इस विभाग द्वारा अनुसन्धान प्रविधि सम्बन्धी शिक्षण कार्य एवं शोधछात्रों के चयन का भी कार्य किया जाता है । शोध-प्रकाशन विभाग द्वारा वर्ष 2015-16 सत्र में जिन प्रमुख कार्यो का निष्पादन किया गया, उनका विवरण निम्नलिखित है-

(१) विद्यावारिधि पाठ्यक्रम में शोधच्छात्रों की प्रवेश प्रक्रिया

विद्यावारिधि पाठ्यक्रम में प्रवेश हेतु श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली एवं राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति की संयुक्त विद्यावारिधि प्रवेश परीक्षा दिनांक 02 अगस्त, 2015 को आयोजित की गई जिसमें उत्तीर्ण, विशिष्टाचार्य उत्तीर्ण तथा नेट, जे.आर. एफ. उत्तीर्ण छात्रों के मार्ग निर्देशन एवं विषय निर्वाचन हेतु सम्बद्ध विभागीय शोध समितियों द्वारा संस्तुत शोध संक्षिप्तिकाओं के समीक्षणार्थ शोध प्रकाशन विभागाध्यक्ष के संयोजकत्व में शोध-मण्डल का उपवेशन दिनांक 22, 23 दिसंबर, 2015 एवं 16 फरवरी, 2016 को किया गया। शोध मण्डल की बैठक माननीय कुलपति जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई ।

प्रत्येक शोधच्छात्र के साक्षात्कार में शोध मण्डल के सदस्यों के अतिरिक्त सम्बन्धित विभागाध्यक्ष भी उपस्थित रहे। शोध मण्डल द्वारा संस्तुत छात्रों के प्रवेश की प्रक्रिया पूर्ण की गयी । सत्र 2015-16 में 54 छात्रों को प्रवेश हेतु संस्तुत किया गया, जिसमें से कुल 54 छात्रों ने विद्यावारिधि पाठ्यक्रम में प्रवेश लिया ।

(२) विद्यावारिधि सत्रीय पाठ्यक्रम का सञ्चालन-

विद्यावारिधि सत्रीय पाठ्यक्रम का शुभारम्भ दिनांक 11.02.2016 को विद्यापीठ के कुलपति प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय जी की अध्यक्षता में, प्रो. रमेश प्रसाद पाठक, प्रो. नागेन्द्र, प्रो. महेश प्रसाद सिलोड़ी, प्रो. सुदीप कुमार जैन, प्रो. भागीरथि नन्द, प्रो. हरिहर त्रिवेदी एवं प्रो. हरेराम त्रिपाठी जी की मुख्यातिथित्व में कुलपति प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय जी के संबोधन से हुआ, जिसका संचालन शोधसहायक डॉ. ज्ञानधर पाठक ने किया। उक्त सत्रीय पाठ्यक्रम को दो वर्गों में विभक्त कर ''अ'' वर्ग में वेद-वेदांग, साहित्य संस्कृति एवं दर्शन

संकाय तथा ''ब'' वर्ग में आधुनिक ज्ञान-विज्ञान संकाय के छात्रों को कक्षाओं का संचालन किया गया। ''अ'' वर्ग में वेद-वेदांग, साहित्य संस्कृति एवं दर्शन संकाय के छात्रों को निम्नलिखित विद्वानों ने विभिन्न विषयों का अध्यापन कार्य किया-

1	प्रो. इच्छाराम द्विवेदी	साहित्य-पुराण शास्त्रीय शोधसर्वेक्षण
2	प्रो. प्रेमकुमार शर्मा	वेद-वेदांग शोध सर्वेक्षण
3	प्रो. हरेराम त्रिपाठी	दर्शनशास्त्रीय शोधसर्वेक्षण, पाण्डुलिपि एवं शोधप्रविधि
4	प्रो. सुदीप कुमार जैन	पाण्डुलिपि विज्ञान एवं शिलालेख
5	डॉ. ज्ञानधर पाठक	शोधप्रविधि एवं पाण्डुलिपिविज्ञान
6	श्री रंजीत कुमार रंजन	संगणकसम्प्रयोग

(३) विशिष्टाचार्य (एम.फिल्.) पाठ्यक्रम में शोधछात्रों की प्रवेश प्रक्रिया एवं संचालन

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, विनियम, 2009 के अनुसार विद्यापीठ द्वारा एमफिल. पाठ्यक्रम संचालित किया गया था। एम.फिल पाठ्यक्रम का सत्रीय पाठ्यक्रम जुलाई-दिसंबर 2015 दिनांक 6/8/2015 को प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय, कुलपति द्वारा शुभारम्भ किया गया था।

(४) शोध संगोष्ठियों का आयोजन

शोधच्छात्रों की प्रति सप्ताह शुक्रवार को शोध संगोष्ठी आयोजित की गई । यह संगोष्ठी विद्यावारिधि सत्रीय पाठ्यक्रम की समयसारिणी के अनुसार शोध सहायक डॉ. ज्ञानधर पाठक द्वारा सञ्चालित की गई। इस शोधसंगोष्ठीं में शोधछात्रों ने अपने सम्बन्धित शोधविषय से पत्र प्रस्तुत किये, जिनपर उपस्थित शोधछात्रों ने परिचर्चा की।

(५) शोध प्रविधि प्रशिक्षण राष्ट्रीय कार्यशाला

श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ के शोध- प्रकाशन विभाग द्वारा ''राष्ट्रिय शोध प्रविधि कार्यशाला'' का आयोजन दिनाङ्क 22/02/16 से 04/03/16 तक किया गया। कार्यशाला में निम्नलिखित 13 विद्वानों ने अधोलिखित विभिन्न विषयों पर व्याख्यान एवं प्रशिक्षण किया।

दिनांक		प्रशिक्षणकर्त्ता का नाम	विषय
22.02.2016	सोमवार	प्रो0 रमाकान्तपाण्डेय:	पाण्डुलिपिसम्पादनपद्धति: पाठनिर्धारणप्रक्रिया च
23.02.2016	मंगलवार	प्रो0 जयकान्तसिंहशर्मा	व्याकरणशास्त्रीयानुसंधानपद्धति:
		प्रो. प्रेमकुमारशर्मा	ज्योतिषशास्त्रीयानुसंधानपद्धति:
25.02.2016	गुरुवार	प्रो. गिरीशनाथझा	अन्तर्जालस्य शोधे उपयोगप्रविधय:
26.02.2016	शुक्रवार	प्रो. रवीन्द्रवशिष्ठ:	लिपीनाम् उद्भवो विकासश्च
29.02.2016	सोमवार	प्रो. राधावल्लभत्रिपाठी	संस्कृते शोधोद्देश्यानि
		प्रो. चादकिरणसलूजा	सामग्रीसंकलनविधय:
01.03.2016	मंगलवार	डॉ. ज्ञानधरपाठक:	शोधशीर्षकनिर्धारणे उपागमा:
		प्रो. शुद्धानन्दपाठक:	वेदान्तदर्शने शोधसरणि:
02.03.2016	बुधावार	प्रो. सत्यपालनारंग:	अनुसंधानस्य साधनानि

03.03.20136	गुरुवार	प्रो. दीप्तित्रिपाठी	विषयनिर्वाचनविधिः
		प्रो. रमेशप्रसादपाठकः	शिक्षाशास्त्रीयशोधप्रविधिः
04.03.2016	शुक्रवार	डॉ. विजयशंकरशुक्लः	शोधसर्वेक्षणं पाण्डुभाण्डागारश्च

कार्यशाला का उद्घाटन माननीय कुलपति प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय द्वारा किया गया। शोध-प्रकाशन विभागाध्यक्ष प्रभारी प्रो0 हरेराम त्रिपाठी द्वारा धन्यवाद ज्ञापन से दिनांक 4/3/2016 को कार्यशाला का समापन किया गया। समस्त कार्यशाला के व्याख्यान सारस्वत साधना सदन के कक्ष सं. 301 में सम्पन्न हुए।

(६) शोधप्रभा पत्रिका का सम्पादन एवं प्रकाशन

शोधप्रभा परामर्शदात्री समिति एवं शोधप्रभा सम्पादक मण्डल के द्वारा प्रकाशनार्ह तथा समीक्षक विद्वानों द्वारा संस्तुत निर्दिष्ट निबन्धों एवं उनके सुझावों के अनुसार शोध एवं प्रकाशन विभागाध्यक्ष प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय एवं अनुसन्धान सहायक डॉ. ज्ञानधर पाठक सम्पादन तथा प्रकाशन किया।

(७) ग्रन्थ सम्पादन एवं प्रकाशन

संस्कृत भाषा एवं साहित्य के प्रचार-प्रसार एवं संरक्षण के निमित्त विद्यापीठ द्वारा इस वर्ष निम्नलिखित ग्रन्थों का प्रकाशन किया गया-

1. वैदिकदर्शनविमर्शः
2. पर्यावरण एवं भारतीय नारी
3. संस्कृतशिक्षा का सशक्तीकरण मुद्दे एवं चुनौतियाँ
4. कारिकावली
5. भारतीयवृष्टिविज्ञानपरिशीलन
6. व्रतों से रोग निवारण
7. वैदिकवाङ्मये सांख्ययोगविमर्शः
8. शोधाप्रभा अक्टूवर, 2014
9. शोधाप्रभा जनवरी, 2015
10. शोधाप्रभा अप्रैल, 2015
11. शोधाप्रभा जुलाई, 2015
12. शोधाप्रभा अक्टूवर, 2015
13. विद्यापीठ पंचांग 2073

(८) विक्रय

विद्यापीठ द्वारा प्रकाशित ग्रन्थों, शोधप्रभा, पञ्चाङ्ग, भैषज्य ज्योतिष मंजूषा, शुमंगली एवं वास्तुशास्त्रविमर्श के विक्रय के साथ साथ मन्त्रालय के पुनर्मुद्रण कार्यक्रम के अन्तर्गत मुद्रित ग्रन्थ भी बेचे जाते हैं।

(९)विशिष्ट व्याख्यान-

दिनांक 19/11/2015 को आचार्य रमाकान्त शास्त्री स्मारक व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया। सोमनाथ संस्कृत विश्वविद्यालय, सोमनाथ, गुजरात के पूर्व आचार्य प्रो. गिरीश भाई ठाकर जी ने ''सोमनाथस्य ऐतिह्यम्'' विषय पर विशिष्ट व्याख्यान दिया।

दिनांक 7/9/2015 से 11/9/2015 तक दिल्ली विश्वविद्यालय के पूर्व संस्कृत विभागाध्यक्ष प्रो. सत्यपाल नारंग जी का ''शोधप्रविधि एवं अवसर की उपलब्धता'' विषय पर विशिष्ट व्याख्यान आयोजित किया गया।

१३. विभिन्न संगोष्ठियाँ एवं स्मारक व्याख्यानमालाएँ

सत्र 2015-16 में निम्नलिखित संगोष्ठियों एवं स्मारक व्याख्यानमालाओं का आयोजन विद्यापीठ के विभागों द्वारा किया गया :-

1. डॉ. मण्डनमिश्र स्मारक व्याख्यानमाला

व्याकरण विभाग द्वारा दिनांक 24/11/2015 को एकदिवसीय डॉ. मण्डनमिश्र स्मारक व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया ।

डॉ. मण्डन मिश्र स्मारक व्याख्यानमाला के अवसर पर कुलपति प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय द्वारा अतिथियों का स्वागत।

2. आचार्य कुन्दकुन्द व्याख्यानमाला

साहित्य एवं संस्कृति संकाय द्वारा दिनांक 29.03.2016 को कुलपति प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय की अध्यक्षता में आचार्य कुन्दकुन्द व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया।

3. श्रीपट्टाभिरामशास्त्री स्मारक व्याख्यानमाला

सर्वदर्शन विभाग द्वारा दिनांक 21.03.2016 को 'श्रीपट्टाभिरामशास्त्री स्मारक व्याख्यानमाला' का आयोजन किया गया। ।

4. आचार्य अदित्यनाथ झा स्मारक व्याख्यानमाला

शिक्षाशास्त्र विभाग द्वारा दिनांक 28.3.16 को आचार्य अदित्यनाथ झा स्मारक व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया ।

१४. अध्ययन पाठ्यक्रम

विद्यापीठ निम्नलिखित पूर्णकालिक एवं अंशकालिक पाठ्यक्रमों का सञ्चालन करता है । इन पाठ्यक्रमों के अध्ययन-अध्यापन की व्यवस्था करता है तथा परीक्षोपरान्त छात्रों को उपाधि प्रदान करता है ।

(क) पूर्णकालिक पाठ्यक्रम

1. शास्त्री (बी.ए.) (त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम)
2. शास्त्री (सम्मानित) (त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम)
2. आचार्य (एम.ए.)20 विषयों में (द्विवर्षीय पाठ्यक्रम)
3. शिक्षाशास्त्री (बी.एड्) (द्विवर्षीय शिक्षक-प्रशिक्षण पाठ्यक्रम)
4. शिक्षाचार्य (एम.एड्) (द्विवर्षीय प्रशिक्षण पाठ्यक्रम) (चार सेमेस्टर)
5. विशिष्टाचार्य (एम.फिल्)20 विषयों में (एकवर्षीय शोध पाठ्यक्रम) (दो सेमेस्टर)
6. विद्यावारिधि (पीएच.डी.)20 विषयों में (द्विवर्षीय शोध पाठ्यक्रम)

(ख) अंशकालिक पाठ्यक्रम

छात्रों में रोजगार को बढ़ावा देने के उद्देश्य से निम्नलिखित प्रमाणपत्रीय एवं डिप्लोमा के अंशकालिक पाठ्यक्रम (दो सत्रों में एक वर्षीय) चलाए जाते हैं ।

1. ज्योतिषप्राज्ञ प्रमाणपत्रीय पाठ्यक्रम-एक वर्षीय
2. ज्योतिषभूषण डिप्लोमा पाठ्यक्रम-एक वर्षीय
3. मेडिकल एस्ट्रोलॉजी डिप्लोमा पाठ्यक्रम-एक वर्षीय (यू.जी.सी. द्वारा स्वीकृत)
4. वास्तुशास्त्रीय पी.जी.डिप्लोमा पाठ्यक्रम-द्विवर्षीय चार सत्रों में (यू.जी.सी. द्वारा स्वीकृत)
5. पौरोहित्य प्रशिक्षण/प्रमाणपत्रीय/डिप्लोमा पाठ्यक्रम
6. प्रमाणपत्रीय/पी.जी डिप्लोमा -योग पाठ्यक्रम

समाज में इन पाठ्यक्रमों के प्रति अच्छी प्रतिक्रिया है, इनके अतिरिक्त विद्यापीठ द्वारा अध्यापकों एवं छात्रों के लिए संस्कृत संभाषण शिविरों का भी आयोजन कराया जाता है ।

विकल्पाधारित क्रेडिट प्रणाली के तहत दिए गए प्रावधानों के अनुसार पाठ्यक्रम संरचना में शास्त्री एवं आचार्य पाठ्यक्रमों में निम्नलिखित विषय सम्मिलित किए गए हैं:-

1. पाश्चात्य तर्कशास्त्र एवं दर्शन
2. भारतीय दर्शन एवं पाश्चात्य दर्शन का इतिहास
3. पाश्चात्य काव्यशास्त्र
4. मानवाधिकार
5. भैषज्य ज्योतिष
6. संगणक अनुप्रयोग
7. पर्यावरण विज्ञान

१५. छात्रवृत्ति

उद्देश्य: पारम्परिक पद्धति में संस्कृत वाङ्मय की शिक्षा ग्रहण करने के लिए प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से छात्रों को निम्नलिखित छात्रवृत्तियाँ दी जाती हैं :-

	कक्षा	वर्ष	छात्रवृत्तियों की संख्या	छात्रवृत्ति राशि
1.	शास्त्री (बी.ए.)	प्रथम वर्ष	120	800/-रु0 प्रति माह
2.	शास्त्री (बी.ए.)	द्वितीय वर्ष	120	800/-रु0 प्रति माह
3.	शास्त्री (बी.ए.)	तृतीय वर्ष	120	800/-रु0 प्रति माह
4.	शिक्षाशास्त्री (बी.एड्.)		60	800/-रु0 प्रति माह
5.	आचार्य (एम.ए.)	प्रथम वर्ष	25 प्रति विषय	1000/-रु0 प्रति माह
6.	आचार्य (एम.ए.)	द्वितीय वर्ष	25 प्रति विषय	1000/-रु0 प्रति माह
7.	शिक्षाचार्य (एम.एड्.)		13	1000/-रु0 प्रति माह
	(शिक्षाचार्य पाठ्यक्रम में आनुषंगिक राशि)			750/- रु0
8.	विशिष्टाचार्य (एम.फिल.)		19	1500/-रु0 प्रति माह
	(विशिष्टाचार्य पाठ्यक्रम में आनुषंगिक राशि)			2000/-रु0 प्रति वर्ष
8.	विद्यावारिधि (प्रति एक विषय)(पी-एच.डी.)		19	5000/-रु0 प्रति माह
	(विद्यावारिधि पाठ्यक्रम में आनुषंगिक राशि)			3000/-रु0 प्रति वर्ष

१६. परीक्षा-विभाग

विद्यापीठ शास्त्री, आचार्य, शिक्षाचार्य तथा विशिष्टाचार्य की परीक्षाएं वर्ष में दो बार सत्रीय परीक्षा आयोजित करता है । शिक्षाशास्त्री की वार्षिक परीक्षा आयोजित होती है। वर्ष 2015-16 में विभिन्न परीक्षाओं में प्रविष्ट एवं उत्तीर्ण छात्रों का विवरण निम्नलिखित है-

वर्ष २०१५-२०१६ का परीक्षा-परिणाम

कक्षा	कुल प्रविष्ट छात्र		उत्तीर्ण छात्रों की संख्या							
	कुल छात्र व छात्रा	केवल महिला	कुल (छात्र + छात्रा)				छात्रा			
				प्रथम श्रेणी	द्वितीय श्रेणी	तृतीय श्रेणी	कुल	प्रथम श्रेणी	द्वितीय श्रेणी	तृतीय श्रेणी	कुल
शास्त्री	107	08		66	39	01	106	03	05	--	08
आचार्य	113	22		97	09	--	106	20	02	--	22
शिक्षाशास्त्री	249	75	Theory	202	45	--	247	60	13	--	73
			Practical	245	02	--	247	73	-	--	73
शिक्षाचार्य	32	05		32	--	--	32	05	--	--	05

उपर्युक्त पाठ्यक्रम के अतिरिक्त विद्यापीठ में अंशकालिक एवं नियमित पाठ्यक्रम ज्योतिष प्राज्ञ एवं ज्योतिषभूषण, वास्तुशास्त्र, मेडिकल एस्ट्रोलॉजी, पौरोहित्य, योग विशिष्टाचार्य एवं विद्यावारिधि की परीक्षायें भी परीक्षा विभाग द्वारा सम्पन्न कराया गया ।

१७. अन्य शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियाँ

(क) सत्रारम्भ

विद्यापीठ में सत्रारम्भ पर प्रतिवर्ष विशेष यज्ञ का आयोजन किया जाता है। इस वर्ष भी जुलाई, 2015 को विद्यापीठीय समस्त गतिविधियों के निर्विघ्न सञ्चालनार्थ शैक्षणिक शुभारम्भ के अवसर पर माननीय कुलपति महोदय जी की अध्यक्षता में तथा प्रो. हरिहर त्रिवेदी जी के आचार्यत्व में यज्ञ का आयोजन किया गया । इसमें विद्यापीठ के सभी अध्यापक, अधिकारी, कर्मचारी एवं छात्र उपस्थित थे।

(ख) स्वतन्त्रता-दिवस

15 अगस्त, 2015 को विद्यापीठ में मुख्य भवन के समक्ष कुलपति महोदय द्वारा राष्ट्रीय-ध्वजारोहण समारोह संपन्न हुआ । इस अवसर पर उपस्थित जनसमूह द्वारा राष्ट्रगान गाया गया । कार्यक्रम का शुभारम्भ प्रात: 09:30 बजे हुआ । सर्वप्रथम विद्यापीठ के एन.सी.सी. छात्रों द्वारा प्रस्तुत 'सम्मान-गारद' का निरीक्षण कुलपति महोदय ने किया । निरीक्षण के अनन्तर शास्त्री जी की प्रतिमा पर कुलपति महोदय ने माल्यार्पण किया । समारोह में उपस्थित एन. सी. सी. के वरिष्ठ अधिकारी एवं विद्यापीठ के सम्मान्य आचार्यों का अभिनन्दन माल्यार्पण से किया गया । कार्यक्रम में उपस्थित विद्यापीठ परिवार के सभी सदस्यों को तथा विशेष रूप से एन.सी.सी. के छात्र सैनिकों को कुलपति महोदय ने सम्बोधित किया । उन्होंने एन.सी.सी. एवं विद्यापीठ के युवा छात्रों द्वारा राष्ट्रीय एवं विद्यापीठ स्तर पर किए गए रचनात्मक कार्यों की सराहना की । इनसे राष्ट्र के गौरव की अभिवृद्धि एवं रक्षा के लिए संस्कृत के माध्यम से महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने का आग्रह किया। कुलपति जी ने एन. सी. सी. के छात्रों को विभिन्न पुरस्कारों से सम्मानित करने की घोषणा की ।

(ग) संस्कृत-सप्ताह

इस वर्ष संस्कृत-सप्ताह कार्यक्रम (27.08.2015-01.09.2015) के अन्तर्गत संस्कृत सम्बन्धी विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया । विद्यापीठ में विभिन्न संकायों यथा-साहित्य-संस्कृति संकाय, आधुनिक ज्ञान-विज्ञान संकाय, वेदवेदांग संकाय, दर्शन संकाय एवं छात्रकल्याण संकाय द्वारा संस्कृत भाषण एवं गायन प्रतियोगिता, वाद-विवाद प्रतियोगिता एवं श्लोक अन्त्याक्षरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया । सप्ताह भर विद्यापीठ में प्रतियोगितामय वातावरण रहा । अध्यापकों एवं छात्रों द्वारा विभिन्न प्रतियोगिताओं में सक्रियातापूर्वक भाग लिया गया और समारोह का समापन पुरस्कार वितरण के साथ सम्पन्न हुआ ।

संस्कृत सप्ताह महोत्सव के अवसर पर विराजमान अधिकारीगण।

(घ) संस्कृत-दिवस

सन् 1968 से सारे देश में श्रावण मास की पूर्णिमा के दिन संस्कृत दिवस मनाया जाता है । मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा जारी किये गये निर्देश के अनुपालन में संस्कृत दिवस के तीन दिन पूर्व और उसके तीन दिन पश्चात् तक विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये गये। संस्कृत दिवस मनाए जाने का मुख्य उद्देश्य देश में संस्कृत की प्रगति की जानकारी और इसकी उन्नति के लिए सतत् प्रयास करना है । इस आयोजन में नृत्य, गीत, गोष्ठियों एवं प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है । श्रावण मास की पूर्णिमा का भारतीय परम्परा में महत्त्वपूर्ण स्थान है ।

इस वर्ष मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान तथा श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ के तत्त्वावधान में 29 अगस्त 2015 को राष्ट्रीय संग्रहालय में संस्कृत दिवस समारोह का आयोजन किया गया ।

छात्र काव्यपाठ प्रतियोगिता के अवसर पर मंच में विराजमान कुलपति प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय एवं अन्य अधिकारी/अतिथि गण।

संस्कृत सप्ताह महोत्सव के अवसर पर कुलपति महोदय द्वारा उद्‌बोधन।

(ङ) राजभाषा एवं हिन्दी-सप्ताह

हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में दिनांक 14.09.2015 से 28.09.2015 तक हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। इस आयोजन के अन्तर्गत छात्र-छात्राओं एवं कर्मचारी वर्ग की अलग-अलग विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। इन प्रतियोगिताओं में छात्र-छात्राओं के लिए नारा, निबन्ध, लेखन प्रतियोगिता एवं लोक गीतगायन प्रतियोगिता, प्रश्नमंच तथा वाद-विवाद प्रतियोगिता आयोजित की गई।

कर्मचारी वर्ग के लिए नारा निबन्ध लेखन, लोकगीतगायन एवं प्रश्नमंच, वाद-विवाद प्रतियोगिता आयोजित की गई। हिन्दी राजभाषा कार्यन्वयन समिति की बैठक भी समय-समय पर आयोजित की गई।

(च) श्री लाल बहादुर शास्त्री जन्म-दिवस

विद्यापीठ में 2 अक्टूबर का दिन श्री लाल बहादुर शास्त्री जी के जन्म-दिवस के रूप में मनाया जाता है । विद्यापीठ के आचार्यों द्वारो सामूहिक श्रीमद्‌भगवद्‌गीता पाठ किया। तदुपरान्त विद्यापीठ में प्रतिष्ठित शास्त्री जी की प्रतिमा पर पुष्पमाला अर्पित की गई ।

(छ) श्री लाल बहादुर शास्त्री स्मृति-दिवस

विद्यापीठ न केवल शास्त्री स्मारक व्याख्यान माला का आयोजन करता है अपितु 11 जनवरी 2016 को शास्त्री स्मृति-दिवस के रूप में मनाया है । विद्यापीठ के आचार्यों ने विजय घाट पर विद्यापीठ द्वारा आयोजित 'श्रद्धाञ्जलि' कार्यक्रम में जाकर श्रीमद्‌भगवद्‌गीता का पाठ किया । तदुपरान्त विद्यापीठ प्राङ्गण में प्रतिष्ठित शास्त्री जी की प्रतिमा पर श्रद्धासुमन अर्पित किये । इस कार्यक्रम का आयोजन मन्त्रालय द्वारा किया गया था।

(ज) गणतन्त्र-दिवस

26 जनवरी, 2016 को विद्यापीठ परिसर में मुख्य भवन के समक्ष कुलपति महोदय ने गणतन्त्र दिवस के उपलक्ष्य में राष्ट्रीय-ध्वजारोहण किया । इस अवसर पर कुलपति महोदय ने एन.सी.सी. परेड का निरीक्षण किया तथा लाल बहादुर शास्त्री जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया । उपस्थित छात्रों, अध्यापकों एवं कर्मचारियों को सम्बोधित करते हुए कुलपति महोदय ने देश के लिए प्राणों की आहुति देने वाले शहीदों का पावन स्मरण किया तथा इन शहीदों द्वारा प्रदर्शित पथ पर चलने का आग्रह युवा कैडेटों से किया । राष्ट्र की

वर्तमान परिस्थितियों में एन.सी.सी. कैडेट की आवश्यकता को भी उन्होंने रेखांकित किया । उन्होंने शस्त्र एवं शास्त्र के प्रशिक्षण को अनिवार्य मानते हुए इन दोनों प्रशिक्षणों से आप्त भारतीय परम्परा को श्रद्धा के साथ स्मरण किया ।

(झ) सरस्वती-पूजन-महोत्सव

माघ शुक्ल वसन्त पंचमी के शुभ अवसर पर दिनांक 12.02.2016 को कुलपति महोदय की अध्यक्षता में सरस्वती की प्रतिमा का शास्त्रीय विधि-विधान से स्थापन एवं पूजन किया गया । साथ ही सारस्वत यज्ञ का आयोजन प्रो. हरिहर त्रिवेदी, वेद-पौरोहित्य विभागाध्यक्ष के निर्देशनानुसार डॉ0 रामराज उपाध्याय के आचार्यत्व में सम्पन्न किया गया।

(ञ) क्रीड़ा प्रतियोगिता एवं स्पर्धा

छात्रों के स्वास्थ शारीरिक और मानसिक विकास के लिए विभिन्न खेलों एवं खेल प्रतिस्पर्धाओं के विशेष महत्व है। इसे ध्यान में रखते हुए विद्यापीठीय छात्र-छात्राओं के लिए एक स्वतन्त्र क्रीड़ा अनुभाग है, जिसके द्वारा विभिन्न खेलों की सुविधायें उपलब्ध कराई जाती है। मुख्यत: धावन पथ, क्रिकेट, योगासन, मल्लयुद्ध, कबड्डी, बैडमिंटन, वालीवाल, आदि खेलों का आयोजन किया गया जिसमें 500 से अधिक छात्र छात्राओं ने भाग लिया।

क्रीडा विभाग द्वारा जिमनेजियम् (व्यायामशाला) की अलग व्यवस्था है। साथ ही साथ (विद्यापीठ में कार्यरत महिला कर्मचारियों एवं अध्यापिकाओं के लिए (Basic facility for Women) Women Recreation Center की स्थापना की गई । इन सभी की व्यवस्था व सञ्चालानार्थ हेतु खेल प्रभारी, जिम व Women Recreation Center के रूप में मनोज कुमार मीणा को प्रभार दिया गया है। खेलों में उपलब्धियाँ-

1. एम.डी.यू, रोहतक विश्वविद्यालय द्वारा सितम्बर, अक्टूबर 2015 में नॉथ जोन बैडमिंटन का आयोजन किया गया जिसमें विद्यापीठीय दल के 7 छात्रों ने भाग लिया गया।
2. अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय द्वारा नवम्बर 2015 में नार्थ जोन क्रिकेट टूर्नामेंट का आयोजन किया गया जिसमें विद्यपीठीय दल के 16 छात्रों ने भाग लिया गया।
3. सी.आर.एस विश्वविद्यालय, जींद द्वारा अखिल भारतीय योग चैम्पियनशिप का आयोजन किया गया जिसमें विद्यापीठ के 12 छात्र-छात्राओं द्वारा भाग लिया गया।

वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता।

(ट) स्वच्छ भारत अभियान

राष्ट्रपिता महात्मागाँधी के 150वें जन्मोत्सव 02 अक्टूबर, 2019 तक भारत को पूर्णत: स्वच्छ बनाने की दिशा में दिनांक 02 अक्टूबर, 2014 से माननीय प्रधानमंत्री द्वारा स्वच्छ भारत अभियान का प्रारम्भ किया गया। स्वच्छ भारत अभियान अक्टूबर 2015 में विद्यापीठ द्वारा आयोजित किया गया, दिनांक 2 अक्टूबर 2015 को माननीय कुलपति प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय की अध्यक्षता में स्वच्छता शपथ ग्रहण समारोह आयोजित किया गया। इसमें विद्यापीठ के समस्त कर्मचारियों, अधिकारियों तथा परिसर में रहने वाले विद्यापीठ परिवार के सभी सदस्यों ने स्वच्छता शपथ समारोह में सम्मिलित होकर महात्मा गाँधी के स्वप्नों को साकार करने की दिशा में विद्यापीठीय परिसर एवं आस-पास के क्षेत्रों में सफाई अभियान में योगदान किया।

(ठ) योग विज्ञान केन्द्र

इस सत्र में सांख्ययोगविभागान्तर्गत योगविज्ञान केन्द्र द्वारा एकवर्षीय पी.जी. डिप्लोमा का उद्घाटन माननीय कुलपति महोदय जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ । इस कार्यक्रम में योग पाठ्यक्रम में प्रविष्ट सभी छात्र-छात्राओं द्वारा भाग लिया गया। योगविज्ञान केन्द्र योगविद्या के प्रचार-प्रसार में सतत प्रयत्नशील है । प्रो. महेश प्रसाद सिलोड़ी, संकाय प्रमुख, दर्शन-संकाय इसके समन्वयक के रूप में कार्य कर रहे हैं।

योग दिवस के अवसर पर योग अभ्यास करते विद्यापीठ के अधिकारी एवं छात्र।

योग विज्ञान केन्द्र के सत्रारम्भ के अवसर पर मंच पर विराजमान अधिकारी गण।

(ड) सतर्कता जागरूकता सप्ताह

दिनांक 26/10/2015 से 31/10/2015 तक सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर चंडीगढ़ विश्वविद्यालय के पूर्व प्रो. बी.बी. गोयल द्वारा विशेष व्याख्यान दिया गया तथा विद्यापीठ द्वारा शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन भी किया गया।

(ढ़) एन.सी.सी.

विद्यापीठ में एन.सी.सी. प्रशिक्षण व्यवस्था के निरीक्षणार्थ एवं सञ्चालनार्थ एन.सी.सी अधिकारी के रूप में विद्यापीठ के डॉ. मीनू कश्यप एवं प्रो. पीयूष कान्त दीक्षित।

एन.सी.सी. छात्रावर्ग की गतिविधियाँ एवं डॉ. अभिषेक तिवारी को दायित्व प्रदान किया गया है।

1. दिनांक 21 जून, 2015 को अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस में 14 छात्रा कैडेटों ने भाग लिया ।
2. दिनांक 8 अगस्त 2015 से 18 अगस्त 2015 तक 10 कैडेटों ने दिल्ली कैन्ट में भाग लिया।
3. दिनांक 24 अगस्त 2015 को कमांडिग अधिकारी एवं प्रशासनिक अधिकारी, जी. बीएन. एन.सी. सी. 3 दिल्ली द्वारा विद्यापीठ दौरा किया तथा और कैडेटों के लिये व्याख्यान दिया। माननीय कुलपति जी की अध्यक्षता में इस समारोह का आयोजन किया गया।
4. दीक्षांत समारोह के अवसर पर एन.सी.सी छात्रा कैडेटों द्वारा माननीय केन्द्रीय मंत्री, मानव संसाधन विकास मंत्रालय को गार्ड ऑफ ऑनर दिया गया।
5. गणतंत्र दिवस के अवसर पर एन.सी.सी लड़कियों के कैडेटों द्वारा विद्यापीठ के माननीय कुलपति जी को गार्ड ऑफ ऑनर दिया।

एन.सी.सी. छात्रों की उपलब्धियाँ :

1. दिनांक 21 जून 2015 को 23 कैडेटों ने एटीसी योग शिविर में भाग लिया।
2. दिनांक 3 अगस्त से 13 अगस्त तक 5 कैडेटों ने सेना के शिविर, दिल्ली छावनी में भाग लिया।
3. दिनांक 15 अगस्त 2015 को 9 कैडेटो द्वारा माननीय कुलपति महोदय को गॉड ऑफ ऑनर दिया गया।
4. दिनांक 21 अगस्त 2015 से 27 नवम्बर 2015 तक शुक्रवार के दिन सभी कैडेटों द्वारा भाग लिया गया।
5. दिनांक 23 अक्टूबर 2015 से 9 नवम्बर 2015 तक 9 कैडेटों द्वारा सेना अनुलग्नक शिविर मे भाग लिया।
6. दिनांक 6 अक्टूबर 2015 से 18 अक्टूबर 2015 तक 3 कैडेटों द्वारा राष्ट्रीय खेल, दिल्ली कैंट में भाग लिया।
7. दीक्षांत समारोह के अवसर पर एन.सी.सी के 30 कैडेटों द्वारा माननीय केन्द्रीय मंत्री, मानव संसाधन विकास मंत्रालय को गार्ड ऑफ ऑनर दिया गया।

8. दिनांक 16 अक्टूबर 2015 से 25 अक्टूबर 2015 तक 10 कैडेटों द्वारा जी.पी.एच.क्यू. दिल्ली में भाग लिया।

9. दिनांक 17 जनवरी 2016 से 18 जनवरी 2016 तक 4 कैडेटों द्वारा एन.आई.सी शिविर, पंजाब में भाग लिया।

10. दिनांक 12 जनवरी 2016 से 23 जनवरी 2016 तक 1 कैडेट द्वारा ए.एल.सी शिविर, गुजरात में भाग लिया।

11. गणतंत्र दिवस के अवसर पर एन.सी.सी के 35 लड़को के कैडेटों द्वारा विद्यापीठ के माननीय कुलपति जी को गार्ड ऑफ ऑनर दिया।

(ढ) अनुशासन

विश्वविद्यालय परिसर की सुरक्षा-व्यवस्था एवं छात्रों में अनुशासन-प्रियता को सुदृढ़ करने के लिये कुलानुशासक उत्तरदायी होते हैं । कुलानुशासक सत्र के आरम्भ में कुलानुशासक मण्डल का गठन कुलपति जी की स्वीकृति से करते हैं । यह मण्डल सुरक्षा एवं अनुशासन से सम्बद्ध आवश्यक विषयों पर यथासमय कुलानुशासक की अध्यक्षता में विचार-विमर्श करता है । विद्यापीठ की परिनियमावली 39(5) के अनुसार छात्रों एवं शोधछात्रों के लिए निम्नलिखित सदस्यों से युक्त अनुशासन समिति का गठन किया गया है-

1.	कुलानुशासक	अध्यक्ष
2.	संकाय प्रमुख (छात्रकल्याण)	सदस्य
3.	सम्बन्धित संकाय प्रमुख	सदस्य
4.	सम्बन्धित विभागाध्यक्ष	सदस्य
5.	कुलपति द्वारा नामित अ.जा /ज.जा./अ.पि.वर्ग/महिला/वि. वर्ग का एक अध्यापक (उक्त वर्ग के छात्रों से संबंधित होने पर)	सदस्य
6.	सहायक कुलसचिव/ अनुभाग अधिकारी (शैक्षणिक)	सचिव

अनुशासन मण्डल

1. प्रो. हरिहर त्रिवेदी (संकाय प्रमुख, वेद-वेदांग संकाय)	-	अध्यक्ष
2. प्रो. शुकदेव भोइ (विभागाध्यक्ष, साहित्य)	-	सदस्य
3. प्रो. कमला भारद्वाज (छात्रकल्याण)	-	सदस्य
4. प्रो. महेश प्रसाद सिलोड़ी (संकाय प्रमुख, दर्शन संकाय)	-	सदस्य
5. प्रो. भागीरथि नन्द (संकाय प्रमुख, साहित्य एवं संस्कृति सकाय	-	सदस्य
6. प्रो. रमेश कुमार पाठक (संकाय प्रमुख, आधुनिक ज्ञान विज्ञान संकाय)	-	सदस्य
7. प्रो. हरेराम त्रिपाठी (अध्यक्ष, शोध एवं प्रकाशन विभाग)	-	सदस्य
8. प्रो. बिहारी लाल शर्मा (विभागाध्यक्ष, ज्योतिष)	-	सदस्य
9. प्रो. प्रेम कुमार शर्मा (कुलानुशासक)	-	समन्वयक

सत्र 2015-16 के दौरान दिनांक 23/11/15, 14/12/15, 20/12/15 एवं 15/2/16 को कुलानुशासक मण्डल की बैठक आयोजित की गई।

नोडल अधिकारी-एंटी रैगिंग: विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की उच्च शिक्षण संस्थानों में रैगिंग रोकथाम नियम 2009 के अनुपालन में प्रो. बिहारी लाल शर्मा को नोडल अधिकारी, एंटी रैगिंग नियुक्त किया गया है।

१८. शैक्षणिक एवं गैर-शैक्षणिक पद

वर्तमान में शैक्षणिक वर्ग में 11 प्रोफेसर, 21 सह-प्रोफेसर एवं 88 सहायक प्रोफेसर तथा 01 सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष के कुल 121 पद स्वीकृत हैं, जिनमें से 78 शैक्षणिक पदों पर 77-अध्यापक + 01 सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष कार्यरत हैं। विद्यापीठ में कार्यरत अध्यापकों को सी.ए.एस के अन्तर्गत पदोन्नति प्रदान किया गया। गैर शैक्षणिक वर्ग में कुल 125 पद (ग्रुप-'ए'- 12 ग्रुप-'बी'- 31 एवं ग्रुप-'सी'-82 स्वीकृत हैं, जिनमें से 82 गैर-शैक्षणिक पदों पर अधिकारी एवं कर्मचारी कार्यरत हैं। कुलपति, कुलसचिव एवं वित्ताधिकारी के मार्गदर्शन में विद्यापीठ प्रशासन ने समस्त प्रशासकीय दायित्त्वों का निवर्हन अधिकारियों एवं सहकर्मियों की सहायता से किया है। विद्यापीठ द्वारा रिक्त पदों पर योग्य अभ्यर्थियों की भर्ती के लिए सतत् प्रयास किया जा रहा है ।

१९. आरक्षण एवं अन्य प्रावधान

अनुसूचित जाति एवं जनजाति के लिए विशेष प्रकोष्ठ

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्देशों के अनुसार विद्यापीठ में अनुसूचित जाति एवं जनजाति के लिए विशेष प्रकोष्ठ स्थापित किया गया है। विद्यापीठ विश्वविद्यालय अनुदान आयोग एवं भारत सरकार की आरक्षण संबन्धी नीतियों का अनुपालन करता है। अनुसूचित जाति/जनजाति के उम्मीदवारों को छात्रवृत्ति प्रदान करने, स्टाफ क्वार्टर और छात्रावास आबंटन में भी आरक्षण की व्यवस्था करता है। चयन एवं पदोन्नति के समय पर भी विद्यापीठ में आरक्षण नीति का पालन होता है। प्रो. सदन सिंह, शिक्षाशास्त्र संकाय, अनुसूचित जाति/अनुसूचित जन जाति के सम्पर्क अधिकारी के रूप में कार्य कर रहे हैं। उपर्युक्त सभी स्थितियों में भारत सरकार की सभी आरक्षण नीतियों को पूर्णत: लागू करने के लिए विद्यापीठ में अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जन-जाति प्रकोष्ठ की स्थापना की गई है। अनुसूचित जाति एवं जनजाति वर्ग के शैक्षिक एवं गैर-शैक्षिक पदों एवं छात्रों के पंजीयन में भी गत वर्षों की अपेक्षा पर्याप्त सुधार रहा है।

वर्ष के दौरान इस प्रकोष्ठ ने शैक्षणिक एवं गैर-शैक्षणिक कैडर का रोस्टर रजिस्टर तैयार किया। तद्नुसार विद्यापीठ प्रशासन द्वारा बैकलॉग रिक्तियों विज्ञापन जारी किया गया। प्रकोष्ठ द्वारा अनुसूचित जाति/ अनुसूचित जनजाति के कर्मचारियों के संबंध में सांख्यिकीय रिपोर्ट तैयार कर मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग को भेजा गया।

शैक्षणिक पदों में आरक्षण का विवरण

शैक्षणिक	पुरुष/महिला	सामान्य	अनु. जाति	अनु. जन. जाति	अन्य पिछड़ी जाति	विकलांग	अल्पसंख्यक	योग
प्रोफेसर (Direct)	पुरुष	०७	०१	..	..	..	..	०८
	महिला	..	..	..	..	..	..	..
प्रोफेसर (CAS के अन्तर्गत)	पुरुष	१३	..	..	..	०१ ओ.एच	..	१४
	महिला	०४	..	..	..	..	..	०४
सह-प्रोफेसर (Direct)	पुरुष	०२	..	..	०१	..	..	०३
	महिला	००	..	..	..	..	..	००
सह-प्रोफेसर (CAS के अन्तर्गत)	पुरुष	१३	०१	..	..	..	..	१४
	महिला	०५	०२	..	..	..	..	०७
सहायक प्रोफेसर	पुरुष	१६	०३	०१	..	०१ वी.एच	..	२१
	महिला	०५	०१	..	..	..	..	०६
सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष	पुरुष	०१	.	.	.	.	..	०१
योग		**६६**	**०८**	**०१**	**०१**	**०२**	**.**	**७८**

गैर-शैक्षणिक पदों में आरक्षण का विवरण

गैर-शैक्षणिक	पुरुष/महिला	सामान्य	अनु. जाति	अनु. जन. जाति	अन्य पिछड़ी जाति	विकलांग	अल्पसंख्यक	योग
ग्रुप 'ए'	पुरुष	०६	०१	..	..	..	..	०७
	महिला	०२	०१	..	..	..	..	०३
ग्रुप 'बी'	पुरुष	०६	०३	०१	०१	..	..	१४
	महिला	०७	०३	..	..	..	..	१०
ग्रुप 'सी' (ग्रुप 'सी'+'डी')	पुरुष	२६	०६	०३	१२	०२	..	५२
	महिला	०२	..	..	०३	..	..	०५
योग		**५२**	**१७**	**०४**	**१६**	**०२**	**..**	**६१**

प्रकोष्ठ के मुख्य उद्देश्य

1. विद्यापीठ में अनुसूचित जाति/जनजाति के लिए आरक्षण नीति को लागू करना ।
2. विद्यापीठ में प्रवेश एवं शैक्षणिक/गैर-शैक्षणिक पदों पर चयन के समय लागू नीतियों के आँकड़े संग्रह करना ।
3. भारत सरकार द्वारा इस उद्देश्य हेतु निर्धारित उद्देश्यों एवं लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु प्रयास करना ।

4. विद्यापीठ में आरक्षण नीति के लगातार लागू करने, नियन्त्रण एवं मूल्यांकन के साथ-साथ भारत सरकार की नीति एवं कार्यक्रमों के प्रभावशाली कार्यान्वयन के लिए योजना बनाना ।

- **प्रकोष्ठ के प्रमुख कार्य**

1. भारत सरकार और राष्ट्रीय अनुसूचित जाति और जनजाति आयोग के निर्णयों का अनुपालन करना एवं प्रवेश के लिए भरे जाने वाले फार्म में दी गई अनुबंधित तिथि तक अनुसूचित जाति/जनजाति की श्रेणी के छात्रों एवं विभिन्न पाठ्यक्रमों में प्रवेश की वार्षिक सूचनाएँ एकत्रित करना और उसके लिए आवश्यक कदम उठाना ।
2. अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के आवेदकों की शिक्षा, प्रशिक्षण और रोजगार के लिए आयोग द्वारा निर्धारित नीतियों के विकास एवं संशोधन के लिए सूचनाएं एवं प्रतिवेदन एकत्रित करना ।
3. भारत सरकार के आदेशों और आयोग के निर्णयों को प्रसारित करना तथा विद्यापीठीय शैक्षणिक एवं गैर-शैक्षणिक पदों की नियुक्ति एवं प्रशिक्षण के लिए सूचनाएँ एकत्रित करना ।
4. एकत्रित सूचनाओं का विश्लेषण और प्रतिवेदन तैयार करना । मानव संसाधन विकास-मंत्रालय, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग एवं अन्य प्राधिकरणों को आवश्यकतानुसार संशोधन हेतु प्रतिवेदन प्रस्तुत करना ।
5. अनुसूचित जाति-अनुसूचित जनजाति के छात्रों एवं कर्मचारियों द्वारा दिए गए विद्यापीठ में प्रवेश, नियुक्ति, पदोन्नति एवं अन्य स्थितियों में प्रस्तुत प्रतिवेदनों की जाँच करना ।
6. विद्यापीठ में सुधार प्रशिक्षण योजना के कार्य की जाँच करना ।
7. विद्यापीठीय अनुसूचित जाति/जनजाति के कर्मचारियों के शिकायत के लिए 'शिकायत सुधार समिति' के रूप में कार्य करना एवं उनकी शैक्षणिक एवं प्राशासनिक समस्याओं के निराकरण के लिए आवश्यक सहायता करना ।
8. विद्यापीठ में विभिन्न पदों पर अनुसूचित जाति-अनुसूचित जनजाति के आवेदकों की भर्ती के लिए रिकॉर्ड रखना ।
9. आर्थिक, सामाजिक और शैक्षिक अभावों से पीड़ित इन दो समुदायों में उच्च शिक्षा के विकास के लिए समय-समय पर कार्य करना ।

२०. आन्तरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ

विद्यापीठ के शैक्षणिक एवं प्राशासनिक गुणवत्ता को बनाये रखने तथा उसमें वृद्धि एवं संस्थागत अन्तर्राष्ट्रीय कार्यसंस्कृति के अभ्यास के लिए आन्तरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ का गठन कुलपति महोदय की अध्यक्षता में किया गया है । प्रो. देवी प्रसाद त्रिपाठी, विभागाध्यक्ष, वास्तुशास्त्र विभाग इस प्रकोष्ठ के निदेशक हैं।

उद्देश्यः-

1. शैक्षिक और प्रशासनिक कार्यों के निष्पादन में सुधार हेतु चेतना, निरंतरता और उत्प्रेरक कार्यक्रम हेतु गुणवत्ता प्रणाली का विकास करना ।

2. गुणवत्ता संस्कृति एवं संस्था में उत्तम कार्यव्यवहारों के संस्थात्मिकरण का आन्तरीकरण करते हुए गुणवत्ता अभिवृद्धि की दिशा में संस्थात्मक प्रकार्यों के लिए उपायों को बढ़ावा देना ।

आई.क्यू.ए.सी. के कार्यः-

- विविध शैक्षिक और प्रशासनिक गतिविधियों हेतु गुणवत्ता बेंचमार्क/पैरामीटर का विकास और क्रियान्वयन करना ।
- सहभागी शिक्षण और अधिगम प्रक्रिया के लिए वांछित ज्ञान और तकनीकी को अपनाने हेतु गुणवत्ता शिक्षा एवं संकाय सदस्यों की सुसाध्यता के लिए विद्यार्थी केन्द्रित परिवेश के सृजन हेतु सुविधाओं को सुलभ कराना ।
- विद्यार्थियों, अभिभावकों तथा अन्य लाभप्राप्तकर्त्ताओं से गुणवत्ता संबंधित सांस्थानिक प्रक्रियाओं पर परिपुष्टियों को प्राप्त करने की व्यवस्था करना ।
- उच्च शिक्षा के विभिन्न गुणात्मक पैरामीटर के विषय में सूचना का प्रचार-प्रसार करना ।
- गुणवत्ता परक विषयों और गुणवत्ता चक्रों की अभिवृद्धि के विषय में कार्यशालाओं और संगोष्ठियों का आयोजन करना ।
- विभिन्न कार्यक्रमों एवं गतिविधियों का प्रलेखीकरण करके गुणात्मक सुधार करना ।
- गुणवत्ता संबंधित गतिविधियों के समन्वय हेतु संस्था के नोडल एजेंसी के रूप में कार्य करना, जिसमें अच्छे संव्यवहारों को ग्रहण करना और प्रचार-प्रसार करना सम्मिलित है।
- सांस्थानिक गुणवत्ता को बनाये रखने एवं इसमें अभिवृद्धि करने के उद्देश्य से एमआईएस द्वारा सांस्थानिक डाटा बेस का विकास करना और उसकी देखरेख करना ।
- गुणात्मक संस्कृति का विकास करना ।
- निर्धारित प्रारूप में सम्बद्ध गुणवत्ता आश्वासन निकाय द्वारा गुणात्मक पैरामीटर / निर्धारक मानदण्ड पर संस्था की वार्षिक गुणवत्ता आश्वासन रिपोर्ट को तैयार करना ।
- ए.क्यू.ए.आर. पर आधारित विभिन्न इकाइयों के गुणात्मक रेडार और पदानुक्रम का द्वि-वार्षिक विकास करना ।
- आई.क्यू.ए.सी. के साथ, प्रत्यायन के पूर्व एवं प्रत्यायन के पश्चात्, गुणवत्ता-निर्धारण, पुष्टि और वृद्धि हेतु अन्तरक्रिया करना है ।

२१. कैरियर काउंसलिंग सेल

विद्यापीठ में कैरियर काउंसलिंग सेल की स्थापना विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की 11वीं पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत किया गया । छात्रों की सामाजिक, आर्थिक एवं भौगोलिक विभिन्नताओं को ध्यान में रखते हुए कैरियर काउंसलिंग सेल छात्रों को विभिन्न व्यवसायों में प्रवेश हेतु तैयार करने के लिए उनके व्यक्तित्व की विष्ठोषताओं, सम्प्रेषण कौशल एवं रोजगार सम्बन्धाी कौशलों को विकसित करता है ।

गेट योर ड्रीम जॉब विषय पर आयोजित कार्यशाला के अवसर पर
उपस्थित बाह्य विशेषज्ञ, अध्यापक गण एवं छात्र-छात्राएँ।

२२. महिला अध्ययन केन्द्र

श्री लाल बहादुर शास्त्री संस्कृत विद्यापीठ में महिला अध्ययन केन्द्र की स्थापना सन् 2006 में 10वीं पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत हुई। केन्द्र का मुख्य ध्येय प्राचीन साहित्य का अध्ययन एवं महिला अध्ययन की दृष्टि से उसकी पुर्नव्याख्या करना है। डॉ. रजनी जोशी चौधरी केन्द्र की प्रभारी निदेशिका हैं।

सत्र (2015-2016) के अन्तर्गत अधोलिखित गतिविधियाँ सम्पन्न हुई-

1. केन्द्र द्वारा शिक्षाशास्त्री (B.Ed.) के विद्यार्थियों के लिए एक फाउन्डेशन पाठ्यक्रम का आयोजन किया गया। इस पाठ्यक्रम के द्वारा भावी शिक्षकों में लैंगिक जागरूकता एवं सजगता का विकास करने का प्रयास किया जाता है।
2. शिक्षाचार्य के छात्रों के लिये **''जेंडर एवं अध्यापक''** विषय पर एक्सटेंशन लेक्चर का आयोजन किया गया।
3. अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में विद्यापीठ में मार्च 2016 में विद्यार्थियों हेतु विभिन्न प्रतियोगिताओं यथा चार्ट बनाना, स्वनिर्मित कविता, श्लोकवाचन, भाषण एवं एकांकी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। विद्यापीठ के छात्र एवं छात्राओं ने उत्साहपूर्वक इन प्रतियोगिताओं में भाग लिया एवं उत्कृष्ट प्रस्तुतियों को पुरस्कार प्रदान किये गये।

दीक्षांत समारोह के अवसर पर छात्राओं का सांस्कृतिक कार्यक्रम।

4. सुमङ्गली : द जर्नल ऑफ जेंडर एण्ड इन्डियन हेरिटेज, ISSN NO. 2229-6336 का प्रकाशन किया गया।
5. **'Women in the News'** के अन्तर्गत विभिन्न हिन्दी एवं अंग्रेजी समाचार पत्रें में प्रकाशित महिलाओं से सम्बन्धित समाचारों को संकलित कर प्रकाशित किया गया है।

महिला अध्ययन केन्द्र

१. डॉ. रजनी जोशी चौधरी- निदेशक (आई/सी) एवं सह प्रोफेसर शिक्षाशास्त्र
२. डॉ. सविता राय, शोध-सहायक

23. संगणक केन्द्र

संगणक केन्द्र विद्यापीठ के विद्यार्थियों, अध्यापकों तथा अन्य कर्मचारियों को संगणक सम्बन्धित सुविधा प्रदान करता है। यह उनके भौक्षणिक क्रियाकलापों एंव भाोध कार्य में सहायता करता है। यह केन्द्र विद्यापीठीय प्रांगण में स्थित विभागों, प्रभाासनिक भवनों, छात्रावास, अतिथि आवास, इत्यादि में संगणक सम्बन्धी नेटवर्क एवं संगणक का प्रबंधन भी देखता है।

वर्तमान सूचना प्रौद्योगिकी का बुनियादी ढांचा

- शास्त्री, शिक्षाशास्त्री, आचार्य, विशि टाचार्य तथा विद्यावारिधि पाठ्यक्रम की कक्षाओं के छात्रों की सुविधा के लिए तीन वातानुकुलित कम्प्यूटर लैब हैं, जिसमें पाठ्यक्रम के अनुरूप छात्रों के सीखने के कौशल को बढ़ाने के लिए एवं नई चुनौतियों का सामना करने के लिए विभिन्न प्रकार के शिक्षण उपकरण जैसे इंटरनेट सुविधा, LCDTV, मल्टीमीडिया प्रोजेक्टर आदि उपलब्ध है ।
- इंटरनेट बैडविथ : संगणक केन्द्र में मानव संसाधन विकास मंत्रालय के NKN परियोजना के तहत 10 जी. बी.पी.एस इंटरनेट लिंक के साथ इंटरनेट की सुविधा है। यह छात्रों के लिए अवसर, संकायों, शोधकर्त्ताओं और सभी विभागों को विभिन्न स्रोतों से सभी प्रकार की जानकारी और डाउनलोड करने की सुविधा उपलब्ध कराता है।
- संस्कृत, हिन्दी और अग्रेंजी त्रिभाषी वेबसाइट की व्यवस्था की गई है।
- 300 विस्तर लाइनों के साथ EPABX की सुविधा है।
- इस वर्ष विद्यापीठ के संगणक केन्द्र ने सर्वर, साफ्टवेयर तथा नेटवर्किंग उपकरणों जैसे विभिन्न पहलुओं में उन्नति की है ।

संगणक केन्द्र द्वारा प्रदान की जाने वाली सुविधाएँ :-

संगणक केन्द्र विद्यापीठ में कम्प्यूटिंग सुविधा, ई-मेल, वेबसाइट होस्टिंग, विकास एवं प्रबंधन की सुविधा प्रदान करता है । यह अपने मूल्यवान डेटा का विश्लेषण पाने के लिए शोधकर्ताओं की मदद करता है । इंटरनेट की सुविधा प्रदान करता है । वर्ल्ड वाइड वेब का उपयोग करने के लिए सक्षम बनाता है तथा विद्यापीठ के छात्रों के लिए लैब की सुविधा प्रदान करता है । संगणक केन्द्र विद्यापीठ की निम्न आवश्यकताओं को पूर्ण करता है ।

- विद्यापीठ के में प्रिंटर तथा सर्वर कम्प्यूटर, लैपटाप, डेस्कटाप की खरीद, स्थापना और रखरखाव ।
- विद्यापीठ के सभी विभिन्न सर्वर (सर्वर प्रबंधन) के रखरखाव ।

- विद्यापीठ के सभी शैक्षणिक एवं गैर शैक्षणिक वर्ग के कर्मचारियों के लिए, आवासीय कर्मचारियों, छात्रावास, गेस्टहाउस में इंटरनेट की सुविधा उपलब्ध कराना ।
- संगणक केन्द्र में फायरवाल प्रणाली की व्यवस्था की गई है ताकि बाहरी हैकर्स से नेटवर्क की रक्षा की जा सके तथा नेटवर्क के भार को संतुलित किया जा सके ।
- विद्यापीठ में कर्मचारियों की हार्डवेयर में संबंधित समस्याओं को हल करने के लिए दूरसंचार निवारण नेटवर्क की व्यवस्था की गई है ।
- विद्यापीठ की कम्प्यूटर लैब में नेटवर्क से संबंधित मुद्दों को हल करने के लिए सूचना प्रौद्योगिकी सुविधाओं का प्रबंध किया गया है ।
- विद्यापीठ में कार्य कर रहे इंजीनियर्स द्वारा सिस्टम और हार्डवेयर की मरम्मत का कार्य किया जाता है ।
- मेल साफ्टवेयर की मदद से प्रशासन मेल सर्वर द्वारा विद्यापीठ के कर्मचारियों तथा छात्रों को कहीं से भी अपने ई-मेल खाते का उपयोग करने की सुविधा प्रदान की गई है ।
- समय-समय पर विद्यापीठ के छात्रों एवं कर्मचारियों को कम्प्यूटर प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है ।
- साप्ताहिक आधार पर भंडारण/फाईल सर्वर के बैकअप/रिकवरी आदि की भी व्यवस्था की जाती है ।
- कम्प्यूटर केन्द्र विभागों और छात्रों को संगणक केन्द्र हार्डवेयर खरीदने की भी सलाह देता है ।

विद्यापीठ की अधिकारिक वेबसाइट का प्रबन्धन-सामान्य जानकारी के अलावा संगणक केन्द्र उपयोगकर्त्ताओं को निम्नलिखित सुविधाएँ प्रदान करता है:-

- विद्यापीठ में संस्कृत, हिन्दी और अंग्रेजी त्रिभाषी वेबसाइट ।
- निविदाएँ और कैरियर, कोटेशन/निविदाओं और नौकरी पोस्टिंग प्रकाशन ।
- विभिन्न प्रकार के परिपत्रों एवं सूचनाओं का प्रकाशन ।
- ई-संसाधन-संकायों एवं छात्रों के शोधकार्य के लिए ई-संसाधन उपयोगी है ।
- पूर्व छात्र पंजीकरण- विद्यापीठ के पूर्व छात्र वेबसाइट के माध्यम से खुद को पंजीकृत कर सकते हैं ।
- प्रवेश जानकारी-विद्यापीठ की वेबसाइट पर दाखिले की प्रक्रिया पर पूरी जानकारी, प्रवेश परीक्षा, प्राम्पेक्टस जानकारी, आवेदन-पत्र एवं परीक्षा परिणाम आदि की जानकारी की सुविधा उपलब्ध कराता है ।

संगणक प्रयोगशाला में उपस्थित छात्र/छात्राएँ।

२४. जन-सूचना अधिकार अधिनियम के अन्तर्गत प्राधिकृत अधिकारी

भारत सरकार के जन-सूचना अधिकार नियम को पूर्ण रूप से लागू करने हेतु विद्यापीठ में निम्नलिखित अधिकारियों को केन्द्रीय जनसूचना अधिकारी/केन्द्रीय सहायक सूचना अधिकारी के रूप नियुक्त किया गया है।

क्र. सं.	नाम, पद एवं दूरभाष सं०	केन्द्रीय जनसूचना अधिकारी/केन्द्रीय सहायक सूचना अधिकारी	सूचना क्षेत्र
1.	श्रीमती कल्पना सिंह 011-46060567	अपीली अधिकारी पारदर्शिता अधिकारी	जनसूचना अधिकार के अन्तर्गत समस्त सूचनाओं पर सर्वोच्च जनसूचना अधिकारी
2	डॉ. एस.डी. त्रिपाठी, उप-कुलसचिव / विशेषकार्याधिकारी (प्रशासन) 011-46060501	केन्द्रीय सूचना अधिकारी	प्रशासन से सम्बन्धित सूचना
3.	श्री प्रमोद चतुर्वेदी निजी सचिव (कुलपति) 011-46060603, 604	केन्द्रीय सूचना अधिकारी	कुलपति कार्यालय से सम्बन्धित सूचना
4.	श्री पी. मरियप्पन सहायक कुलसचिव (SC/ST/OBC) 011-46060603, 604	केन्द्रीय सूचना अधिकारी	विद्यापीठ में अनुसूचित जाति / जनजाति /अन्य पिछड़ा वर्ग से सम्बन्धित समस्त सूचना
5.	प्रो. रमेश प्रसाद पाठक संकाय प्रमुख एवं विभागाध्यक्ष, आधुनिक ज्ञान-विज्ञान संकाय 011-46060635	केन्द्रीय सूचना अधिकारी	आधुनिक ज्ञान-विज्ञान संकाय, एन.सी.टी.ई. एवं नैक से सम्बन्धित सूचना
6.	प्रो. भागीरथि नन्द संकाय प्रमुख-साहित्य एवं संस्कृति संकाय 011-46060624	केन्द्रीय सूचना अधिकारी	साहित्य एवं संस्कृति संकाय एवं पुराणेतिहास विभाग से सम्बन्धित सूचना
7.	प्रो. महेश प्रसाद सिलोड़ी संकाय प्रमुख-दर्शन संकाय 011-46060623	केन्द्रीय सूचना अधिकारी	दर्शन संकाय, सांख्यायोग, योग डिप्लोमा तथा मीमांसा विभाग से सम्बन्धित सूचना
8.	प्रो. कमला भारद्वाज छात्र कल्याण संकाय प्रमुख एवं विभागाध्यक्ष व्याकरण विभाग 011-46060530	केन्द्रीय सूचना अधिकारी	छात्र कल्याण संकाय तथा व्याकरण विभाग से सम्बन्धित सूचना

9.	प्रो. पीयूषकान्त दीक्षित विभागाध्यक्ष न्यायवैशेशिक विभाग 011-46060608	केन्द्रीय सूचना अधिकारी	एन.सी.सी., आन्तरिक गुणवत्ता निर्धारण प्रकोष्ठ/ नैक तथा न्याय वैशेषिक विभाग से सम्बन्धित सूचना
10.	प्रो. हरिहर त्रिवेदी संकाय प्रमुख-वेद-वेदांग संकाय एवं सी.वी.ओ 011-46060319	केन्द्रीय सूचना अधिकारी	वेद-वेदांग विभाग तथा सतर्कता संबंधी मामलों से सम्बन्धित सूचना
11	प्रो. बिहारी लाल शर्मा विभागाध्यक्ष ज्योतिष विभाग 011-46060613	केन्द्रीय सूचना अधिकारी	ज्योतिष विभाग से सम्बन्धित सूचना
12.	प्रो. देवी प्रसाद त्रिपाठी विभागाध्यक्ष वास्तुशास्त्र विभाग एवं निदेशक आई.क्सू.ए.सी. 011-46060615	केन्द्रीय सूचना अधिकारी	वास्तुशास्त्र विभाग तथा आई.क्यू.ए.सी से सम्बन्धित सूचना
13	प्रो. जयकुमार उपाध्ये विभागाध्यक्ष प्राकृत विभाग	केन्द्रीय सूचना अधिकारी	प्राकृत विभाग से सम्बन्धित सूचना
14.	प्रो. शुकदेव भोई विभागाध्यक्ष साहित्य विभाग	केन्द्रीय सूचना अधिकारी	साहित्य विभाग से सम्बन्धित सूचना
15	प्रो. इच्छाराम द्विवेदी विभागाध्यक्ष पुराणेतिहास विभाग	केन्द्रीय सूचना अधिकारी	पुराणेतिहास विभाग से सम्बन्धित सूचना
16	प्रो. केदार प्रसाद परोहा विभागाध्यक्ष विशिष्टाद्वैत वेदांत	केन्द्रीय सूचना अधिकारी	विशिष्ट अद्वैत वेदांत विभाग से सम्बन्धित सूचना
17	प्रो. हरेराम त्रिपाठी विभागाध्यक्ष सर्वदर्शन विभाग	केन्द्रीय सूचना अधिकारी	सर्वदर्शन विभाग से सम्बन्धित सूचना
18	डॉ. यशवीर सिंह विभागाध्यक्ष धर्मशास्त्र विभाग	केन्द्रीय सूचना अधिकारी	धर्मशास्त्र विभाग से सम्बन्धित सूचना
19	डॉ. रजनी जोशी चौधरी निदेशक (महिला अध्ययन केन्द) 011-46060618	केन्द्रीय सूचना अधिकारी	महिला अध्ययन केन्द, कैरियर काउंसिलिंग सैल तथा प्लेसमेंट सैल से सम्बन्धित सूचना
20	डॉ. (श्रीमती) मीनू कश्यप 011-46060540	केन्द्रीय सूचना अधिकारी	एन.सी.सी. (छात्रावर्ग) से सम्बन्धित सूचना
21	श्री मनोज कुमार मीणा 011-46060528	केन्द्रीय सूचना अधिकारी	क्रीडा/ शारीरिक शिक्षा से सम्बन्धित सूचना
22	श्रीमती कान्ता, सहायक कुलसचिव (परीक्षा) 011-46060520	केन्द्रीय सूचना अधिकारी	परीक्षा विभाग से सम्बन्धित सूचना

23	श्री सुच्चा सिंह सहायक कुलसचिव (शैक्षणिक)	केन्द्रीय सूचना अधिकारी	विद्यापीठ की शैक्षणिक गतिविधियों, पाठ्यक्रमों, में प्रवेश, कार्यक्रमों, एकेडमिक कैलेण्डर से सम्बन्धित सूचना
24.	श्री अजय कुमार टण्डन, उप-कुलसचिव (लेखा) 011-46060521	केन्द्रीय सूचना अधिकारी	लेखा विभाग तथा वित्त समिति से सम्बन्धित सूचना
25.	श्री रमाकान्त उपाध्याय, कार्यपालक अभियन्ता 011-46060323	केन्द्रीय सूचना अधिकारी	विद्यापीठ अभियन्ता कार्यालय, भवन समिति, कार्य समिति, रख-रखाव तथा बुनियादी सुविधाओं की सुरक्षा से सम्बन्धित सूचना
26	श्रीमती सुषमा डेमला, विशेष कार्याधिकारी (कुलसचिव कार्यालाय) एवं सहायक कुलसचिव (प्रशासन) 011-46060556	केन्द्रीय सूचना अधिकारी	कुलसचिव कार्यालय, गैर-शैक्षणिक कर्मचारियों के वार्षिक निष्पादन मूल्यांकन रिपोर्ट एवं विकास विभाग से सम्बन्धित सूचना
27.	श्री बनवारी लाल वर्मा, सिस्टम एडमिनिस्ट्रेटर 011-46060616, 617	केन्द्रीय सहायक जनसूचना अधिकारी	कम्प्यूटर सेन्टर एवं सूचना अधिकार, 2005 से सम्बन्धित सूचना
28.	डॉ. ज्ञानधर पाठक 011-46060609	केन्द्रीय सूचना अधिकारी	शोध एवं प्रकाशन विभाग से सम्बन्धित सभी सूचना
29.	श्री मंजीत सिंह, अनुभाग अधिकारी (विकास एवं कुलसचिव कार्यालय) 011-46060558	केन्द्रीय सूचना अधिकारी	1. कोर्ट केस से सम्बन्धित सूचना 2. कार्यपालक परिषद्, शैक्षणिक परिषद्, प्लानिंग तथा मॉनिट्रिग बोर्ड तथा स.सी./एस.टी./ओ.बी.सी. एवं विकलांग के आरक्षण से सम्बन्धित सूचना
30.	डॉ. (श्रीमती) विजयलक्ष्मी, अनुभाग अधिकारी (प्रशासन) 011-46060505, 506	केन्द्रीय सूचना अधिकारी	प्रशासन विभाग, गैर-शैक्षणिक वर्ग, शैक्षणिक वर्ग, सर्विस मामलों, स्टोर, मेडिकल बिलों के भुगतान, सुरक्षा मामलों, पार्लियामेंट प्रश्नों के उत्तर आदि से सम्बन्धित सभी सूचना
31	श्री राजेश कुमार पाण्डेय, सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष 011-46060532	केन्द्रीय सूचना अधिकारी	पुस्तकालय सम्बन्धित सभी सूचना
32.	श्री अंजनी कुमार, सहायक अभियंता 011-46060610	केन्द्रीय सूचना अधिकारी	बुनियादी सुविधाओं से सम्बन्धित सूचना
33.	श्री नरेन्द्र पाल कनिष्ठ अभियंता	केन्द्रीय सूचना अधिकारी	विद्युत कार्यों से सम्बन्धित सूचना

सूचना अधिकार अधिनियम, 2005 के अन्तर्गत आयोजित कार्यशाला।

२५. आधार, संरचना एवं भवन

(क) भूमि एवं भवन

विद्यापीठ परिसर राष्ट्रीय राजधाानी क्षेत्र दिल्ली के दक्षिण दिल्ली जिला में कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र के प्लाट स. बी-4 पर शहीद जीत सिंह मार्ग पर 10.65 एकड़ में स्थित है। इसके आस-पास विभिन्न शैक्षणिक एवं शोध संस्थाएँ जैसे - भारतीय प्रोद्योगिकी संस्थान दिल्ली, एन.सी.ई.आर.टी., एन.यू.ई.पी.ए. जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय, भारतीय सांख्यिकी संस्थान, आई.आई.एफ.टी. आदि हैं। इसके समाने उतर की ओर सड़क के उस पार विश्वकर्मा भवन, आई.एस.टी.ई. आदि पूर्व में केन्द्रीय विद्यालय संगठन, केन्द्रीय जल आयोग आदि, दक्षिण में केन्द्रीय समाज कल्याण आई.एम.आई आदि तथा पश्चिम में संजय वन है। यह परिसर सुरम्य है सभी शैक्षणिक एवं गैर शैक्षणिक भवनों तक पहँचने तक के लिए उचित सड़क की व्यवस्था है। परिसर में कई वाटिकायें है जैसे सारस्वत उद्यानम्, विश्रान्ति वाटिका, स्वर्ण जयन्ती पार्क आदि है। परिसर में 24 घंटे बिजली, पानी की सप्लाई सुनिश्चित करने हेतु विद्यापीठ में 11 किलो बोल्ट का अपना उच्च पारेषण विद्युत उपगृह, पर्याप्त जनरेटर सेट्स, ट्यूब वेलस, मल जल ज़ोधान संयंत्र आदि हैं। परिसर में पर्याप्त प्रकाज़ की व्यवस्था हेतु हाई मास्ट लाइटिंग सिस्टम लगे हुये हैं।

विद्यापीठ में कुल चार शैक्षणिक (गैर-आवासीय) भवन है। इनका विविरण निम्न प्रकार है :-

1. शैक्षणिक सदन :- यह सबसे पुराना दो मंजिला भवन है, जो कुल 2951 वर्गमीटर में बना हुआ है, जिसमें शैक्षणिक, शोध एवं पुस्तकालय आदि समाविष्ट हैं। इस भवन में दर्ज़न तथा साहित्य एवं संस्कृति संकाय के सभी विभाग हैं। इसी भवन में एक अत्याधुनिक ज़िम भी है।
2. सारस्वत साधना सदन :- यह पाँच मंजिला भवन (भूतल+3+तहखाना) है, जो 4000 वर्गमीटर में बना है। इस भवन में 1 लिफ्ट लगा है। इस भवन में कुलपति कार्यालय, परीक्षा विभाग, संगणक केन्द्र, महिला

अध्ययन केन्द्र, सम्मेलन कक्ष, समिति कक्ष, संकाय कार्यालय, मुख्य सर्तकता - अधिकारी आदि के कार्यालय हैं।

3. बृहस्पति भवन :- यह एक दो मंजिला भवन है, जो 410.40 वर्गमीटर में बना है। इसमें वेद और पौरोहित्य विभाग है। इसमें कर्मकाण्ड प्रयोगशाला भी है। इस वर्ष यज्ञशाला में कई यज्ञानुष्ठानों का आयोजन किया गया।
4. स्वर्ण जयन्ती सदन :- यह पाँच मंजिला भवन (भूतल+3+तहखाना) है, जो 6283 वर्गमीटर में बना है। इस भवन में 3 लिफ्ट एवं 4 सीढ़ियाँ हैं। यह भवन हरित भवन के मानकों के अनुसार बनाया गया है। इस भवन में प्राशासनिक कार्यालय, वित्त विभाग, शैक्षणिक विभाग, विकास विभाग, ज्योतिष विभाग, वास्तु विभाग, व्याकरण विभाग, धर्मशास्त्र विभाग, शिक्षाशास्त्र विभाग, सांख्यिकी केन्द्र, समिति कक्ष, संकाय कार्यालय, प्रॉक्टर कार्यालय, कुलसचिव, वित्त अधिकारी आदि के कार्यालय हैं।

बृहस्पति भवन को छोड़कर अन्य सभी शैक्षणिक भवन अन्दर ही अन्दर एक दूसरे से जुड़े हैं। इन सभी भवनों में रेन वाटर हारवेस्टिंग की व्यवस्था है।

(ख) आवासीय भवन

विद्यापीठ परिसर में शैक्षणिक एवं गैर-शैक्षणिक कर्मचारियों के लिये कुल 48 आवास हैं, जिनमें टाइप -V के 7 आवास, टाइप-IV के 8 आवास, टाइप -III के 8 आवास, टाइप -II के 8 आवास, टाइप-I के 16 आवास तथा एक कुलपति आवास हैं।

(ग) अतिथि निवास (विश्रान्ति निलय)

विद्यापीठ के अतिथि निवास में 8 डबल बेड वाले कक्ष, 2 वी.आई.पी. कक्ष, 1 कार्यालय कक्ष एवं एक भव्य डाइनिंग कक्ष है। यह अतिथि निवास शैक्षणिक और शोधकार्यों, शैक्षणिक प्रश्यसन में लगे हुये राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय प्रतिनिधियों एवं सस्दयों द्वारा उपयोग के लिए है।

(घ) छात्रवास

विद्यापीठ में 48 कक्षों का 99 विद्यार्थियों के निवास के लिये चार मंजिला छात्रवास भवन है, जो 2068.43 वर्गमीटर में बना हुआ है। इसमें 16 एक सदस्यीय कक्ष, 16 द्विसदस्यीय कक्ष और 16 त्रिसदस्यीय कक्ष हैं। छात्रवास में आधुनिक सुविधाएं जैसे - स्थानीय दूरभाष, मनोरंजन कक्ष, भोजन कक्ष, जलपान कक्ष एवं पाकशाला भी हैं।

वर्ष 2015-2016 में विद्यापीठीय छात्रवास अधिष्ठाता के रुप में प्रो. शुद्धानन्द पाठक कार्यरत हैं। छात्रवास अधिष्ठाता एवं छात्रवास समिति के सहयोग से छात्रवास संच्चालन, प्रबन्ध एवं रख-रखाव के कार्य सुचारु रूप से सम्पन्न किये जाते हैं।

(ङ) पुस्तकालय

महामहोपाध्याय पद्मश्री डॉ. मंडन मिश्र ग्रंथालय विद्यापीठीय शैक्षणिक एवं शोध गतिविधियों का एक महत्वपूर्ण केन्द्र रहा है, इस पुस्तकालय में पारंपरिक एवं आधुनिक विषयों का एक वृहद संग्रह उपलब्ध है। पुस्तकालय में लगभग 88,000 ज्ञानवर्धाक पुस्तकें है । यह पुस्तकालय वेद, पुराण, उपनिषद्, धर्मशास्त्र, योग, ज्योतिष, व्याकरण, साहित्य, दर्शन, मीमांसा, पौरोहित्य, आयुर्वेद आदि विषयों के संग्रह के लिए विख्यात है। इसके अतिरिक्त शिक्षा, हिन्दी, अंग्रेजी तथा अन्य समसामयिक विषयों का संग्रह इस पुस्तकालय को वास्तव मे ज्ञान भंडार की श्रेणी में ला खड़ा करता है।

पुस्तकों के अतिरिक्त बहुत बड़ी संख्या में शोध पत्रिका, समाचार पत्र एवं समसामयिक पत्रिकाएँ इत्यादि की संख्या को बढ़ाया गया है। छात्रों के लिए पुस्तकालय में बुक बैंक की सुविधा भी उपलब्ध है।

विद्यापीठ पुस्तकालय में उपलब्ध शोध प्रबन्धों को 'शोधगंगा प्रोजेक्ट' के अंतर्गत लाने हेतु प्रक्रिया आरम्भ हो चुकी है, इससे छात्रों को शोध-प्रबन्धों का अध्ययन करने में सरलता होगी।

पुस्तकालय भवन के विस्तार के उपरान्त पुस्तकालय का क्षेत्रफल 586 वर्गमीटर से बढ़कर 1192.32 वर्गमीटर हो गया है। पाठकों की सुविधा के लिए एक सुसज्जित पठन सह संदर्भ कक्ष को द्वितीय तल पर निर्मित किया गया है। इस कक्ष को शीघ्र ही पाठकों के लिए उपलब्ध करा दिया जाएगा। इसके अतिरिक्त भूतल पर भी विस्तार की प्रक्रिया आरंभ हो चुकी है।

पुस्तकालय में गतिविधियों की वेहतर व्यवस्था एवं नियंत्रण हेतु सॉफ्टवेयर का उपयोग किया जाता है। पुस्तकालय में व्यवस्था, नीतिनिर्माण व निर्धारण हेतु एक पुस्तकालय समिति भी है।

पुस्तकालय के प्रबन्धन एवं रख-रखाव के लिये एक सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष, दो प्रोफेशनल सहायक, तीन सेमी प्रोफेशनल सहायक तथा चार पुस्तकालय परिचर है।

विद्यापीठ पुस्तकालय न केवल विद्यापीठ के छात्रों, अध्यापकों एवं अन्य कर्मचारियों की सैक्षणिक शोध आवश्यकताओं की पूर्ती में अपना योगदान देता है अपितु यह पुस्तकालय उन सभी लोगों को जो संस्कृत अध्ययन अथवा शोध में अभिरुचि रखतें है उनको विशिष्ट सदस्यता भी प्रदान करता है। इस प्रकार यह विद्यापीठ के उद्देश्यों के परिपालन में सतत प्रयत्नशील है।

(च) पाण्डुलिपि संग्रहालय

विद्यापीठ में पाण्डुलिपि संग्रहालय है, जिसमें विभिन्न विषयों से सम्बन्धित 1697 पाण्डुलिपियाँ हैं । ये पाण्डुलिपियाँ संस्कृत साहित्य के विभिन्न शाखाओं- वेद, उपनिषद्, पुराण, ज्योतिष, व्याकरण, वेदान्त,

सांख्ययोग, न्याय, कर्मकाण्ड, धर्मशास्त्र, साहित्य, संगीत, एवं आयुर्वेद आदि से सम्बन्धित हैं। देवनागरी लिपि की पाण्डुलिपियों का सूचीसंग्रह 'विशदपाण्डुग्रन्थसूची भाग-1' प्रकाशित किया गया है ।

(छ) वराह मिहिर वेधशाला

विद्यापीठ के ज्योतिष विभाग के छात्रों को ज्योतिष के प्रायोगिक ज्ञान के लिए विद्यापीठ परिसर में ज्योतिष वेधशाला का निर्माण किया गया है। इसका निर्माण जन्तर-मन्तर जयपुर की वेधशाला के पूर्व अध्यक्ष राष्ट्रपति सम्मानित म.म. स्वर्गीय पं. कल्याणदत्त शर्मा ने किया है। इस वेधशाला में निर्मित कर्कवलय, तुलावलय एवं मकरवलय से ग्रहों के भोगांशों का ज्ञान, भित्तियन्त्र तथा चक्रयन्त्र से क्रान्ति का ज्ञान, नाडीवलय यन्त्र से स्थानीय काल का ज्ञान, सम्राट यन्त्र से ग्रहों के याम्योत्तरलंघनकाल एवं स्थानीय काल व मानककाल का ज्ञान तथा भारतीय तारामण्डल से नतांश, अक्षांश क्रान्त्यंश आदि विभिन्न मानकों का ज्ञान दिया जाता है।

(ज) यज्ञशाला

विद्यापीठ में एक यज्ञशाला है, जिसमें राजधानी के योजकों के लिये डिप्लोमा एवं प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का आयोजन किया जाता है। इस वर्ष यज्ञशाला में कई यज्ञानुष्ठानों का आयोजन किया गया। यह बृहस्पति भवन में है।

(झ) सीवेज ट्रीटमेंट प्लाण्ट (मलशोधन संयंत्र)

विद्यापीठ में एक सीवेज ट्रीटमेंट प्लाण्ट (120 कि.ली. प्रतिदिन की क्षमता का) को 2006-07 में लगवाया गया। यह प्लाण्ट थर्मेक्स के चैनल पार्टनर मेसर्स इकोथर्म इन्जीनियर्स प्राइवेट लिमिटेड द्वारा लगवाया गया ताकि रसोईघर, स्नानगृह आदि के अपशिष्ट जल को पुनः प्रयोग में लाया जा सके और बागवानी में प्रयोग किया जा सके। विद्यापीठ शत-प्रतिशत शुद्ध किए गए अपशिष्ट जल का प्रयोग पार्क, वृक्ष आदि के विकास के लिए एवं बागवानी के लिए (वर्षाऋतु के कुछ दिनों को छोड़कर) तथा गैर-आवासीय भवनों के शौचालयों में फ्लश के लिए उपयोग करता है। वर्षा के दिनों में शुद्ध किया गया जल नजदीकी वर्षा जल संचयन गड्ढों में बोर्स के द्वारा भूमि के अन्दर भेज दिया जाता है। इस मलशोधन संयंत्र से निकले हुये ठोस अपशिष्ट पदार्थों का उपयोग बगवानी में खाद के रुप में किया जाता है। इस प्रकार विद्यापीठ वर्ष भर शुद्ध किए गये जल का प्रयोग बागवानी आदि के लिए करता है। इस प्लाण्ट का रख-रखाव वर्ष भर उसी एजेंसी के द्वारा किया जाता है जिसके द्वारा यह लगवाया गया है।

(ण) विद्यापीठ में वर्षा जल का संचयन

विद्यापीठ ने वर्ष 2004-2005 में केन्द्रीय भूमि जल बोर्ड, जल संसाधन मंत्रालय, भारत सरकार के वरिष्ठ वैज्ञानिक के मार्गदर्शन में विद्यापीठ परिसर के वर्षा जल संचयन की समुचित व्यवस्था हेतु कुल पाँच स्थानों पर 13 गडढें (बोर्स) कराया। विद्यापीठ के सभी आवासीय एवं गैर -आवासीय भवनों के छतों पर हुयी बरसात के जल को पाइपों के माधयम से ज़मीन पर लाते है तत्पश्चात इसे नजदीकी जल संचयन गड्ढों में पहुँचाने का व्यवस्था की गयी है। इस प्रकार 100% जल भूमि के नीचे चला जाता है, जो भूमिगत जलस्तर को ऊपर उठाने में मदद करता है।

विद्यापीठ में कुल 2951 वर्गमीटर में बना हुआ है, जिसमें शैक्षणिक, शोध, पुस्तकालय एवं प्राशासनिक भवन आदि समाविष्ट हैं। आवासीय भवन कुल 6036.55 वर्गमीटर में अवस्थित है, जिसमें चार मंजिला छात्रावास भवन 2068.43 वर्गमीटर में टाइप V के आवास 1167 वर्गमीटर में टाइप IV के आवास 996. 28 वर्गमीटर में, टाइप III के आवास 541.28 वर्गमीटर में तथा टाइप II एवं टाइप I के आवास क्रमशः 452 तथा 811.56 वर्गमीटर में बने हुये हैं। शैक्षणिक खण्ड (सारस्वतसाधनासदनम्) में कुलपति कार्यालय, शिक्षाशास्त्र विभाग, संगणक केन्द्र, महिला अध्ययन केन्द्र, सम्मेलन कक्ष, समिति कक्ष, संकाय कार्यालय, मुख्य सर्तकता - अधिकारी आदि कार्यालय हैं। इसके अतिरिक्त स्वर्ण जयन्ती सदन 6283 वर्गमीटर में बनकर तैयार है, जिसका उद्घाटन केन्द्रीय मानव संसाधन मंत्री श्री पल्लम राजू जी के कर कमलों द्वारा दिनांक 22.02.2013 को किया गया। दो मंजिला बृहस्पति भवन भी 410.40 वर्गमीटर में है, जिसमें कुल 09 कक्ष हैं। इसमें पौरोहित्य एवं वेद विभाग अवस्थित हैं।

(ट) परिसर की सुरक्षा

कुलानुशासक प्रो. देवी प्रसाद त्रिपाठी के निर्देशन में विश्वविद्यालय परिसर की सुरक्षा-व्यवस्था का सञ्चालन किया जाता है। इस व्यवस्था को सुचारु रूप से क्रियान्वित करने के लिये दिल्ली स्थित पंजीकृत सुरक्षा-संस्थानों के सुरक्षा गार्डों का उपयोग किया जाता है । सुरक्षा कर्मियों की कार्य-शैली का आकस्मिक निरीक्षण एवं सन्तोषजनक कार्य का निर्धारण कुलानुशासक द्वारा किया जाता है ।

२६. ई-पीजी पाठशाला

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा स्नातकोत्तर छात्रों के लिए संस्कृत पोस्ट ग्रेजुएट प्रोग्राम की तैयारी के लिए ईपीजी पाठशाला के तहत एक परियोजना स्वीकृत की गयी है। 17 जून 2015 को परियोजना के प्रधान अन्वेषक के रूप में प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय, कुलपति, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली को अधिकृत किया गया है। इस परियोजना के अन्तर्गत संस्कृत स्नातकोत्तर कार्यक्रम के 640 मॉड्यूल तैयार करने के लिए 112 लाख रुपये की स्वीकृति प्रदान की गई है। विद्यापीठ ने आवश्यक सभी सुविधाओं और ई-सामग्री के संपादन के साथ रिकॉर्डिंग के लिए एक स्टूडियो विकसित किया है। केन्द्रीय और राज्य विश्वविद्यालय से विभिन्न संस्कृतनिष्ठ शास्त्रों के विद्वानों को संस्कृत स्नातकोत्तर छात्रों के लिए पांडुलिपि तैयार करने के लिए चयनित किया है तथा विषय की गुणवत्ता, उसके मानक और सामग्री सुनिश्चित किया है। इस प्रयास में एक दो-दिवसीय कार्यशाला दिनांक 8-9 अगस्त, 2015 को आयोजित किया गया। कुलपति जी, जो इस परियोजना के प्रमुख अन्वेषक भी है, ने विद्यापीठ के समर्पित संकाय सदस्यों की एक टीम का गठन किया है। प्रो. हरेराम त्रिपाठी को समन्वयक और डॉ. सतीशा और डॉ. एस. सुदर्शनन को सहायक समन्वयक नियुक्त किया गया है। डॉ जवाहर लाल और डॉ. सुंदर नारायण झा को भाषा और स्व-सीख वीडियो के विषय संपादक के रूप में इस परियोजना से सम्बद्ध किया गया है।

परियोजना को यथाशीघ्र पूरा करने के लिये सतत कार्य किया जा रहा है, सामग्री लेखकों, संपादकों और समन्वयकों के अथक प्रयासों से अधिकांश कार्य किया गया है। 31/3/2016 तक 601 मॉड्यूल तैयार किया गया था। उचित संपादन और ई-सामग्री की समीक्षा के बाद 260 मॉड्यूल हितधारकों के लिए वेबसाइट पर अपलोड करने के लिए इनफ्लिबनेट को भेजा गया है। दिसंबर 2016 तक परियोजना को पूरा करने के लिए रणनीति बनाई गई हैं।

२७. सेवानिवृत्तियाँ

वर्ष 2015-16 में गैर-शैक्षणिक वर्ग में निम्नलिखित अधिकारी गण सेवानिवृति हुए:

1. श्री विनोद कुमार मिश्रा, सहायक कुलसचिव दिनांक 30/4/2015 को सेवानिवृत्त हुए।
2. डॉ. एस.डी. त्रिपाठी, उप-कुलसचिव(प्रशासन) दिनांक 29/2/2016 को सेवानिवृत्त हुए।

सरदार बल्लभ भाई पटेल समारोह के अवसर पर मंच पर विराजमान अधिकारीगण।

सद्भावना दिवस के अवसर पर कुलपति महोदय के साथ विराजमान अन्य अधिकारी गण।

कुलपति महोदय की अध्यक्षता में आयोजित प्रो. रसिक विहारी जोशी अभिनन्दन समारोह।

भूतपूर्व छात्र संघ समारोह के अवसर पर कुलपति प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय, अधिकारीगण एवं भूतपूर्व छात्र।

शिक्षक दिवस समारोह के अवसर पर कुलपति प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय का सभी अध्यापकों / अधिकारियों द्वारा अभिनन्दन।

२८. परिषदें एवं समितियाँ एवं विद्यापीठीय कर्मचारी

१.शैक्षणिक परिषद के सदस्यों की सूची

क्रम संख्या	नाम एवं पता	पदनाम
1	डॉ. सुखबीर सिंह संधु संयुक्त सचिव मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, शास्त्री भवन, नई दिल्ली	अध्यक्ष (18/11/2014 से 8/4/15)
2	प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय कुलपति, श्री ला.ब.शा.रा.सं. विद्यापीठ	अध्यक्ष (9/4/15 से आज तक)
3	**सभी संकाय प्रमुख** प्रो. रमेश प्रसाद पाठक संकाय प्रमुख, आधुनिक ज्ञान-विज्ञान संकाय प्रो. हरिहर त्रिवेदी संकाय प्रमुख, वेद-वेदांग संकाय प्रो. महेश प्रसाद सिलोड़ी संकाय प्रमुख, दर्शन संकाय प्रो. भागीरथि नन्द संकाय प्रमुख, सहित्य एवं संस्कृति संकाय	
4	**सभी विभागाध्यक्ष** प्रो. रमेश प्रसाद पाठक आधुनिक ज्ञान-विज्ञान विभाग प्रो. कमला भारद्वाज व्याकरण विभाग डॉ. विष्णुपद महापात्रा न्याय वैशैषिक विभाग प्रो. सुखदेव भोइ साहित्य विभाग डॉ. गोपाल प्रसाद शर्मा वेद विभाग प्रो. बिहारी लाल शर्मा ज्योतिष विभाग प्रो. हरिहर त्रिवेदी पौरोहित्य विभाग	सदस्य

	प्रो. शुद्धानन्द पाठक अद्वैत वेदान्त विभाग प्रो. जयकुमार एन. उपाध्ये प्राकृत विभाग प्रो. इच्छाराम द्विवेदी पुराणेतिहास विभाग प्रो. केदार प्रसाद पराहा विशष्टा अद्वैत वेदान्त प्रो. वीर सागर जैन जैन दर्शन विभाग प्रो. महेश प्रसाद सिलोड़ी मीमांसा एवं साख्ययोग विभाग प्रो. हरेराम त्रिपाठी सर्वदर्शन विभाग डॉ. यशवीर सिंह धर्मशास्त्र विभाग प्रो. देवी प्रसाद त्रिपाठी वास्तुशास्त्र विभाग प्रो. हरेराम त्रिपाठी शोध एवं प्रकाशन विभाग	
5	सभी प्रोफेसर प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय प्रो. नागेन्द्र झा प्रो. भास्कर मिश्र प्रो. पीयूष कान्त दीक्षित प्रो. प्रेम कुमार शर्मा प्रो. हरिहर त्रिवेदी प्रो. देवी प्रसाद त्रिपाठी प्रो. कमला भारद्वाज प्रो. एस.एन. रमामणि प्रो. जयकान्त सिंह शर्मा प्रो. शुकदेव भोइ प्रो. सुदीप कुमार जैन प्रो. शुद्धानन्द पाठक प्रो. इच्छाराम द्विवेदी प्रो. वीर सागर जैन	सदस्य

	प्रो. महेश प्रसाद सिलोड़ी प्रो. हरेराम त्रिपाठी प्रो. केदार प्रसाद परोहा प्रो. रमेश प्रसाद पाठक प्रो. रश्मि मिश्र प्रो. देवदत्त चतुर्वेदी प्रो. भागीरथि नन्द	
6	विभागाध्यक्षों के अतिरिक्त वरिष्ठता के आधार पर रोटेशन के द्वारा विभागों से लिए गए दो एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. मीनू कश्यप एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. प्रगति गिहार एसोसिएट प्रोफेसर	सदस्य (22/4/14 से 21/4/16) (22/4/14 से 21/4/16)
7	वरिष्ठता के आधार पर रोटेशन के द्वारा विभागों से लिए गए दो असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. शीतला प्रसाद शुक्ला असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. मीनाक्षी मिश्रा असिस्टेंट प्रोफेसर	सदस्य
8	कुलपति द्वारा मनोनित ऐसे तीन शिक्षाविद जो विद्यापीठ की सेवाओं के अतिरिक्त किसी अन्य क्षेत्रों में ख्याति प्राप्त हों प्रो. एच. के. सतपथी कुलपति, राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति आन्ध्र प्रदेश प्रो. युगलकिशोर मिश्र आचार्य, वेद विभाग, संम्पूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी प्रो. रामानुज देवनाथन प्राचार्य, श्री रणवीर परिसर, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, कोट भटमल, जम्मू (जे एण्ड के)	सदस्य (22/4/14 से आज तक) (24/9/14 से आज तक) (24/9/14 से आज तक)
9	तीन अन्य व्यक्ति जो कि शैक्षणिक कर्मचारी नहीं हैं एवं शैक्षणिक परिषद् द्वारा अपने ज्ञान के लिए विशेषज्ञ हैं 1. डॉ. विठ्ठल दास मुन्धरा 2. श्री गिरीश सहानी 3. डॉ. अंजली जयपुरीया	सदस्य
10	डॉ. बीके महापात्र वित्ताधिकारी (प्रभारी)	सचिव

२.योजना एवं मॉनिटरिंग बोर्ड के सदस्यों की सूची

क्रम संख्या	नाम एवं पता	पदनाम
1	डॉ. सुखबीर सिंह संधु संयुक्त सचिव मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, शास्त्री भवन, नई दिल्ली	अध्यक्ष (18/11/2014 से 8/4/15)
2	प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय कुलपति श्री ला.ब.शा.रा.सं. विद्यापीठ	अध्यक्ष (9/4/15 से आज तक)
3	सभी संकाय प्रमुख / निदेशक	सदस्य
4	संकाय प्रमुख (छात्रकल्याण)	सदस्य
5	वित्ताधिकारी	सदस्य
6. 7.	कुलपति द्वारा स्वीकृत प्रबन्धन बोर्ड द्वारा नामांकित दो बाहरी विशेषज्ञ डॉ. एस. एन. सिंह, पूर्व प्रशिक्षण एवं प्लेसमेंट अधिकारी बनारस हिंदू विश्वविद्यालय वाराणसी-221005 डॉ. बी.के. सिंह कुलसचिव राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय), नई दिल्ली-57	सदस्य
8. 9.	श्री रामाकान्त उपाध्याय अधिशासी अभियंता श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ, कटवारिया सराय, नई दिल्ली-110016 श्री अजय कुमार टंडन उप-कुलसचिव श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ, कटवारिया सराय, नई दिल्ली-110016	विशेष आमंत्रित विशेष आमंत्रित
10.	डॉ. बीके महापात्र कुलसचिव श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ, कटवारिया सराय, नई दिल्ली-110016	सचिव

३. समितियाँ

(क) वित्त समिति

क्रम संख्या	नाम एवं पता	पदनाम
1.	डॉ. सुखबीर सिंह संधु संयुक्त सचिव मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, शास्त्री भवन, नई दिल्ली-110001	अध्यक्ष (18/11/14 से 8/4/15)
2.	प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय कुलपति श्री ला.ब.शा.रा.सं. विद्यापीठ	अध्यक्ष (9/4/15 से आज तक)
3.	सुश्री. दर्शना एम. माला संयुक्त सचिव एवं वित्तीय सलाहकार, उच्च शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, शास्त्री भवन, नई दिल्ली-110001	सदस्य
4.	श्री नवीन सोइ पूर्व निदेशक, उच्च शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, पता:- वाई-34, हौज खास, नई दिल्ली	सदस्य
5.	प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी पूर्व कुलपति, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, 21, लैन्डमार्क शहर, नियर भेल संगम सोसाइटी, भोपाल-462026	सदस्य (5/5/15 से आज तक)
6.	श्रीमती कल्पना सिंह वित्ताधिकारी श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली-16	सदस्य सचिव

वर्ष २०१५-१६ में विद्यावारिधि उपाधि हेतु प्रविष्ट छात्रों का विवरण :

वेद-वेदाग संकाय

क्र. सं.	शोध-छात्र का नाम	शोध-निर्देशक का नाम	संकाय/ विभाग	प्रवेश अर्हता	शोध विषय
01.	रेणु	डॉ. यशवीर सिंह	धर्मशास्त्र	एम. फिल	श्रीनीलकण्डभट्टविरचितस्य संस्कारमयूखस्य समीक्षात्कमध्ययनम्
02.	सुरेन्द्र कुमार	प्रो. बिहारी लाल शर्मा	फलित ज्योतिष	एम. फिल	ज्योतिषशास्त्रे चक्षुर्नासाकर्णकण्डरोगाणां विमर्श:
03.	कुलदीप कुमार	प्रो. बिहारी लाल शर्मा	फलित ज्योतिष	एम. फिल	बृहस्पते: ज्योतिषशास्त्रीयमुशीलनम्
04.	अरूण शर्मा	प्रो. प्रेम कुमार शर्मा	फलित ज्योतिष	लिखित परीक्षा	सायननिरयणपद्धत्यों:फलादेशसमीक्षणम्
05.	रोहित शर्मा	डॉ. परमानन्द भारद्वाज	फलित ज्योतिष	एम. फिल	वैष्णवपुराणेषु वास्तुविमर्श:
06.	हरीश कुमार	डॉ. नीलम ठगेला	फलित ज्योतिष	एम. फिल	ज्योतिषशास्त्रेऽस्थिरोगविमर्श:
07.	मनोज कुमार	डॉ. परमानन्द भारद्वाज	फलित ज्योतिष	एम. फिल	ब्राह्मणग्रन्थेषु ज्योतिषतत्त्वविमर्श:
08.	सुनील बरमोला	प्रो. प्रेम कुमार शर्मा	सिद्धान्त ज्योतिष	एम. फिल	ग्रहोदयास्तप्रभावफल विमर्श:
09.	ख्यालानन्द	डॉ. फणीन्द्र चौधरी	सिद्धान्त ज्योतिष	एम. फिल	मधुसूदनओझाकृतस्य कादम्बिनीग्रन्थस्य समीक्षात्कमध्ययनम्
10.	मदन लाल	डॉ. फणीन्द्र चौधरी	सिद्धान्त ज्योतिष	एम. फिल	ज्योतिषशास्त्रे प्राचीनार्वाचीनदृष्ट्या भूगोलविमर्श:
11.	दिवेश शर्मा	डॉ. दिवाकरदत्त शर्मा	सिद्धान्त ज्योतिष	लिखित परीक्षा	ज्योतिर्विज्ञानदृष्ट्या ग्रहबिम्बग्रहस्थानविमर्श:
12.	देवेन्द्र कुमार	डॉ.दिवाकरदत्त शर्मा	सिद्धान्त ज्योतिष	लिखित परीक्षा	भुगोले भूकम्पविमर्श:
13.	अश्वनी कुमार	प्रो. विनोद कुमार शर्मा	वास्तुशास्त्र	लिखित परीक्षा	वास्तौ द्वारविन्यासविमर्श:
14.	अव्यक्त रैणा	प्रो. देवी प्रसाद त्रिपाठी	वास्तुशास्त्र	लिखित परीक्षा	वास्तुज्योतिषशास्त्रयो: मयाचार्यस्यवदानसमीक्षा
15.	नवीन पाण्डेय	डॉ. रश्मि चतुर्वेदी	वास्तुशास्त्र	नेट	वास्तुसन्दर्भ र्प्यावरणविमर्श:
16.	विजय प्रसाद रतूडी	डॉ. फणीन्द्र चौधरी	वास्तुशास्त्र	लिखित परीक्षा	विश्वकर्मप्रकाशग्रन्थस्य समीक्षात्मकमध्ययनम्
17.	मनीष भारद्वाज	डॉ. देवेन्द्र प्रसाद मिश्र	वेद	एम. फिल	श्रीमद्वाजसनेयि-माध्यन्दिन- शुक्लजयुर्वेदस्य महीधरकरपात्रभाष्ययोस्तुलनात्मकमध्ययनम्
18.	सुधाकर मिश्र	डॉ. गोपाल प्रसाद मिश्र	वेद	एम.	कात्यायनश्रौतसूत्रभाष्याणां तुलनात्मक

				फिल	समीक्षणम्
19.	**लोकेश मण्डल**	प्रो. हरिहर त्रिवेदी	वेद	नेट	आधुनिकपरिप्रेक्ष्ये अथर्ववेदीयपृथिवीसूक्ते राष्ट्रीयचिन्तनम्
20.	**रूपलाल शर्मा**	प्रो. जयकान्त सिंह शर्मा	नव्य-व्याकरण	लिखित परीक्षा	सुब्विभक्तिविधायकसूत्रभारूश्व्याख्यानयोरुद्-द्योतनरत्नप्रकाशयोस्तुलनात्मकमध्ययनम्
21	**चक्रपाणि पोखेल**	डॉ. रामसलाही द्विवेदी	नव्य-व्याकरण	लिखित परीक्षा	व्याकरणाभिमतशब्दार्थसम्बन्धस्य दर्शनान्तरीयम्बन्धेन सह तुलनात्मकमध्ययनम्
22	**विनोद कुमार जॉगिड**	डॉ. दयाल सिंह पंवार	नव्य-व्याकरण	लिखित परीक्षा	आचार्यमलयगिरिप्रणीतशब्दानुशासनस्य समीक्षात्मकमध्ययनम्

साहित्य एवं संस्कृति संकाय

क्र. सं.	शोध-छात्र का नाम	शोध-निर्देशक का नाम	संकाय/विभाग	प्रवेश अर्हता	शोध विषय
23	**सोनम**	डॉ. अरविन्द कुमार	साहित्य	नेट	डॉ.मिथिलाप्रसादत्रिपाठिप्रणीतभार्गवीयमहाकावयस्य काव्यशास्त्रीयमध्ययनम्
24	**सन्जू शर्मा**	डॉ. सुमन कुमार झा	साहित्य	सेट	संस्कृत साहित्ये आचार्यश्रीनिवासरथस्य योगदानम्
25	**विभा गोस्वामी**	प्रो. भागीरथि नन्द	साहित्य	नेट	गीतगोविन्द-मुकुन्दविलासयो: तुलनात्मकमध्ययनम्
26	**श्रुति शर्मा**	डॉ. अरविन्द कुमार	साहित्य	नेट	कविमेधाव्रत-रमाकान्तोपाध्यायविरचितयो: दयानन्ददिग्विजय-दयानन्दचरितमहाकाव्ययोस्तुलनात्मकमध्यननम्
27	**अर्चना देवी**	डॉ. सुमन कुमार झा	साहित्य	नेट	आधुनिकसंस्कृतकाव्यशास्त्रपरम्परायामाचार्य-रेवाप्रसादद्विवेदमिहोदयस्यावदानम्
28	**सुरेश कुमार शुक्ल**	प्रो. शुकदेव भोइ	साहित्य	नेट	आचार्यप्रभुनाथद्विवेदिविरचितानां गद्यकाव्यानां समीक्षणम्
29	**धर्मेन्द्र**	प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय	साहित्य	जे.आर. एफ.	जानराजचम्पूकाव्यस्य समीक्षात्मकमध्ययनम्
30	**कुलदीप शर्मा**	डॉ. शीतला प्रसाद शुक्ला	पुराणेतिहास		शिवपुराणान्तर्गत हिमालचलप्रदेशस्य शिवशक्तितीर्थानां परिशीलनम्
31	**मुकेश कुमार**	प्रो. इच्छाराम द्विवेदी	पुराणेतिहास	जे.आर. एफ.	मत्स्यपुराणे प्रकृतिसंरक्षणोपाया: एक परिशीलनम्
32	**विष्णुप्रसाद भूसाल**	प्रो. इच्छाराम द्विवेदी	पुराणेतिहास	लिखित परीक्षा	श्रीमदभागवतशास्त्रस्य विश्वकल्याणात्मिका समन्वयदृष्टि: एक परिशीनम्

दर्शन संकाय

क्र. सं.	शोध-छात्र का नाम	शोध-निर्देशक का नाम	संकाय/विभाग	प्रवेश अर्हता	शोध विषय
33	**राहुल कुमार भारतीय**	प्रो. शुद्धानन्द पाठक	अद्वैत वेदान्त	लिखित परीक्षा	नृसिंहोत्तरतापिन्युपनिषत्प्रतिपादितानामद्वैतसिद्धान्तानां समीक्षणम्
34	**अखिलेश खण्डूड़ी**	प्रो. एस.एन. रमामणि	अद्वैत वेदान्त	लिखित परीक्षा	वेदान्तसुधाग्रन्थस्य समीक्षात्मकमध्ययनम्
35	**राकेश शर्मा**	डॉ. के.एस. सतीशा	अद्वैत	लिखित	वेदान्तसूत्रवैदिकवृत्ते: प्रथमाऽध्यायस्य

			वेदान्त	परीक्षा	समीक्षात्मकमध्ययनम्
36	**सर्वेश कुमार मिश्र**	प्रो. एस.एन. रमामणि	अद्वैत वेदान्त	लिखित परीक्षा	प्रस्थानत्रयीशंङ्करभाष्याधुनिकविज्ञानयो: व्यष्टिसमष्टिसवरूपनिरूपणम्
37	**कु. रजनी**	डॉ. सुदर्शनन् एस	विशिष्टाद्वैत - वेदान्त	नेट	माण्डूक्योपनिषद: वैष्णवटीकानां तुलनात्मकमध्ययनम्
38	**पूजा**	डॉ. संगीता खन्ना	सर्वदर्शन	नेट	गण्डवयूहसूत्रस्य सीक्षात्मकमध्ययनम्
39	**मनजीत कौर**	डॉ. प्रभाकर प्रसाद	सर्वदर्शन		केशवकाश्मीरिभट्टविरचितवेदानतकौस्तभप्रभाया: समीक्षणम्
40	**प्रदीप कुमार**	डॉ. जवाहर लाल	सर्वदर्शन	नेट	बह्मसूत्रसाधनाध्यायस्य श्रीशंकरश्रीकण्भष्ययो: तुलनात्मकमध्ययनम्
41	**विनोद कुमार**	डॉ. प्रभाकर प्रसाद	सर्वदर्शन	जे.आर. एफ.	मानमेयोदय-कारिकावलीग्रन्थयो: तुलनात्मकध्ययनम्
42	**चन्द्रकिशोर**	डॉ. संगीता खन्ना	सर्वदर्शन	लिखित परीक्षा	काश्मीरशैवदर्शनस्य सम्प्रदायपरम्परापरिशीलनम्
43	**मोहन लाल शर्मा**	डॉ. हरेराम त्रिपाठी	सर्वदर्शन	लिखित परीक्षा	यशोविजयविरचितप्रथमभागीयस्याद्वादरहस्यस्य समीक्षात्मकमध्ययनम्
44	**छविलाल न्यौपाने**	डॉ. विष्णुपद महापात्र	न्याय वैशेषिक	नेट	गदाधाविरचितविधिस्वरूपविचारसमीक्षणम्
45	**विभूति कुमार**	डॉ. रविशंकर शुक्ल	सांख्ययोग	नेट	एकादशोपनिषत्प्रतिपादितसांख्येन सह कापिलसांख्यस्य तुलनात्मकमध्ययनम्

आधुनिक ज्ञान-विज्ञान संकाय

क्र. सं.	शोध-छात्र का नाम	शोध-निर्देशक का नाम	संकाय/ विभाग	प्रवेश अर्हता	शोध विषय
46	**यासमीन अशरफ**	डॉ. अमिता पाण्डेय भारद्वाज	शिक्षाशास्त्र	लिखित परीक्षा	विद्यालयप्रशिक्षुताकार्याक्रमस्यान्तर्गतानां छात्राध्यापकानां सुस्थिजीवनशैल्या: तन्यतायाश्च सन्दर्भ समायोजनक्षमताया अध्ययनम्
47	**सूरज कुडियाल**	डॉ. विमलेश शर्मा	शिक्षाशास्त्र	लिखित परीक्षा	सेवापूर्वाध्यापकानाम् आत्मप्रत्यय: भावातमकप्रज्ञासर्जनात्मकचिन्तनस्यच सन्दर्भ सत्रीयकार्यनिष्पादनस्य तुलनात्कमध्ययनम्
48	**प्रदीप प्रसाद भट्ट**	डॉ. रजनी जोशी चौधरी	शिक्षाशास्त्र	लिखित परीक्षा	देहली-उत्तराखण्डयो: अध्यनरतानां किशोराणां व्यावसायिकरुचे: अध्ययनप्रवृत्ते: सूचनासञ्चारप्रौद्योगिक्या अभितायाश्च अध्ययनम्
49	**सतीश कुमार**	डॉ. कुसुम यदुलाल	शिक्षाशास्त्र	लिखित परीक्षा	माध्यमिकसतरीस्यसेवारताध्यापकानां व्यक्तित्वस्य अयापनक्षमताया:व्यवसायिकसन्तुष्टेश्च तुलनात्मकध्ययनम्
50	**अजय सिंह चौहान**	डॉ. अमिता पाण्डेय भारद्वाज	शिक्षाशास्त्र	लिखित परीक्षा	माध्यमिकस्तरशिक्षकाणां नियन्त्रणसंस्थिते: सामाजिक कौशलानाञ्च शिक्षणप्रभवितया सह संबन्धास्य अध्ययनम्
51	**मणि माला कुमारी**	डॉ. मीनाक्षी मिश्र	शिक्षाशास्त्र	लिखित परीक्षा	परपरागतोच्चतरमाधमिकस्तरीच्छात्राणां सम्प्रत्ययनिर्माणे संज्ञानात्मक-संज्ञानेतरयोग्यतायो: भूमिकाया अध्ययनम्
52	**पूनम त्यागी**	डॉ. मीनाक्षी मिश्र	शिक्षाशास्त्र	लिखित	बहुबुद्धिसन्दर्भे

				परीक्षा	माध्यमिकस्तरीयच्छात्राणामधिगमशैलीशैक्षिकापलब्धयां: विश्लेषणात्मकमध्ययनम्
53	**मनोज प्रसाद नौटियाल**	प्रो. भास्कर मिश्रा	शिक्षाशास्त्र	एम. फिल	सामान्यारक्षितवर्गयो: अध्यापकनामात्मप्रत्यक्षीकरणस्य कार्यसन्तुष्टे: शिक्षणाभिवृत्तेश्च: तुलनात्मकमध्ययनम्
54	**कु. हेमलता**	डॉ. सदन सिंह	शिक्षाशास्त्र	लिखित परीक्षा	वेदशिक्षणस्य सन्दर्भ आर्यसमाजे अन्यशिक्षणसंस्थासु च प्रयुक्त शिक्षणविधीनां प्रभावशीलतायाः अध्ययनम्

अनुलग्नक-२

विद्यापीठीय अध्यापकों की संगोष्ठी, कार्यशाला, पुनश्चर्या, अभिविन्यास, सम्मेलनों में सहभागिता :

क.सं.	नाम एवं पद	विभाग	शोधपत्र/लेख / संगोष्ठी/सम्मेलन/ कार्यशाला	विषय	अवधि	विश्वविद्यालय का नाम
1	प्रो. रमेश प्रसाद पाठक	शिक्षाशास्त्र	राष्ट्रीय संगोष्ठी	Teacher Education In Changing Scenario	१२/४/१५	एस.वि.एम. कालेज ऑफ एजूकेशन, चुरू राजस्थान
			राष्ट्रीय संगोष्ठी	Women Empowerment through economic development	२२/२/२०१६	महिला अध्ययन केन्द्र श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
			राष्ट्रीय संगोष्ठी	मानसिक स्वास्थ के उन्नयन में योग की भूमिका	१६/३/२०१६ जव १७६३६२०१६	शिक्षा विभाग श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
2	प्रो. नागेन्द्र झा	शिक्षाशास्त्र	राष्ट्रीय संगोष्ठी	Mental and Physical Health in the Changing Educational Scenario	१६/३/२०१६ जव १७६३६२०१६	शिक्षा विभाग श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
			राष्ट्रीय संगोष्ठी	धर्मशास्त्रीय संस्काराणां वैज्ञानिकं परिशीलनम्	३०/३/२०१६– ३१/३/२०१६	वेद वेदाङ्ग संकाय श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
3	प्रो. भास्कर मिश्र	शिक्षाशास्त्र	राष्ट्रीय संगोष्ठी	वर्तमानकाले संस्कृत शिक्षण व्यवस्था	०३/३/२०१६	राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, वेद व्यास परिसर, बलाहर (हि.प्र.)
			राष्ट्रीय संगोष्ठी	बदलते परिदृश्य में मानसिक एंव शारीरिक स्वास्थ्य	१६/३/२०१६– १७/३/२०१६	शिक्षा विभाग श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
4	प्रो. रचना वर्मा मोहन	शिक्षाशास्त्र	राष्ट्रीय संगोष्ठी	Women Empowerment Through	२२/२/२०१६– २४/२/२०१६	महिला अध्ययन केन्द्र श्री ला.ब.शा.रा.

				Economic Development		संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
			राष्ट्रीय संगोष्ठी	Mental Health in Sociological and Psychological perspective: A Critical Analysis	१६/३/२०१६–१७/३/२०१६	शिक्षा विभाग श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
5	डॉ. सदन सिंह	शिक्षाशास्त्र	राष्ट्रीय संगोष्ठी	"मानसिक स्वास्थय एवं शिक्षा"	१६/३/२०१६. १७/३/२०१६	शिक्षा विभाग श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
6	डॉ. के. भारतभूषण	शिक्षाशास्त्र	राष्ट्रीय संगोष्ठी	महाकविमाघविरचित शिशुपालवध महाकाव्यविशदपरिशीलनात्मकं राष्ट्रियसम्मेलनम्	१२/२/२०१६ – १७/३/२०१६	शिक्षा विभाग श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
			राष्ट्रीय संगोष्ठी	सामाजिकपरिवर्तने दमयन्त्या: योगदानम्	२२/२/२०१६–२४/२/२०१६	महिला अध्ययन केन्द्र श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
			राष्ट्रीय संगोष्ठी विषय विशेषज्ञ	"New Methods in Teaching Sanskrit Language"	फरवरी, २०१६	दिल्ली संस्कृत अकादमी, नव देहली
			राष्ट्रीय संगोष्ठी (शोधपत्र प्रस्तुति)	भाषादमयनं मानसिकस्वास्थ्यं च	१६/३/२०१६–१४/२/२०१६	शिक्षा विभाग श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
7	डॉ. रजनी जोशी चौधरी	शिक्षाशास्त्र	राष्ट्रीय संगोष्ठी (पत्र प्रस्तुति)	Silent Contribution of women behind the curtain	२२/२/२०१६–२४/२/२०१६	महिला अध्ययन केन्द्र श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
			राष्ट्रीय संगोष्ठी (पत्र प्रस्तुति)	सामाजिकपरिवर्तने दमयन्त्या: योगदानम्	मार्च २०१६	सी.एस.जे. विश्वविद्यालय कानपुर (उ.प्र.)
			राष्ट्रीय संगोष्ठी (पत्र प्रस्तुति)	Role of Teacher in Promoting Mental Health	१६/३/२०१६–१७/३/२०१६	दिल्ली संस्कृत अकादमी, नव देहली
8	डॉ. एम. जयकृष्णन्	शिक्षाशास्त्र	राष्ट्रीय सम्मेलन (समन्वयक)	National Conference Sisupalvadha at Multi Farious Treatire.	१२–१४/२/१६	साहित्य विभाग श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
			राष्ट्रीय सम्मेलन (समन्वयक)	"Mental and Physical Health	१६/३/२०१६–१७/३/२०१६	शिक्षा विभाग श्री ला.ब.शा.रा.

				in the Changing Educational Scenario"		संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
			राष्ट्रीय संगोष्ठी (पत्र प्रस्तुति)	'समाजोद्धारकाचार्याणां चिन्तनेषु योगः'	१६–१७/३/१६	दर्शन विभाग श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
9	डॉ. कुसुम यदुलाल	शिक्षाशास्त्र	राष्ट्रीय संगोष्ठी (पत्र प्रस्तुति)	बालको के मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य के उन्नयन में शैक्षिणक संस्थाओं की भूमिका	१६/३/२०१६–१६/३/२०१६	शिक्षा विभाग श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
			राष्ट्रीय संगोष्ठी (पत्र प्रस्तुति)	स्वतन्त्रता आन्दोलन की क्रान्तिवीर वीरांगनाएँ	२२/२/२०१६–२४/२/२०१६	
10	डॉ. विमलेश शर्मा	शिक्षाशास्त्र	राष्ट्रीय संगोष्ठी	शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य के सन्दर्भ में अष्टांग की सार्थकता	१६/३/२०१६–१७/३/२०१६	शिक्षा विभाग श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
11	डॉ. मीनाक्षी मिश्र	शिक्षाशास्त्र	राष्ट्रीय सम्मेलन (प्रतिभाग)	"The sisupalvadha of magha : A multifarious Treatise"	१२/२/२०१६–१४/२/२०१६	साहित्य विभाग श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
			राष्ट्रीय संगोष्ठी (पत्र प्रस्तुति)	Women Entrepreneurship in India: Contribution and challenges.	२२/२/२०१६–२४/२/२०१६	महिला अध्ययन केन्द्र श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
			राष्ट्रीय संगोष्ठी (प्रतिभाग)	Mental and Physical Health in the Changing Educational Scenario"	१६/३/२०१६–३१/३/२०१६	शिक्षा विभाग श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
			राष्ट्रीय संगोष्ठी	संस्कारों का महत्त्व– जैविक विज्ञान के परिप्रेक्ष्य में	३०/३/२०१६	वेद वेदाङ्ग संकाय श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
12	डॉ. अमिता पाण्डेय भारद्वाज	शिक्षाशास्त्र	राष्ट्रीय संगोष्ठी (पत्र प्रस्तुति)	Problems and issues in secondary education	३१/५/२०१५	नालवा कालेज ऑफ एजुकेशन पानीपत(हरियाणा)
			कार्यशाला	Introduction to educational evalutation and measurement	४/१२/२०१५	एडवांस इन्सटिट्यूट ऑफ एजूकेशन, पलवल, (हरियाणा)

			राष्ट्रीय संगोष्ठी (पत्र प्रस्तुति)	सुस्थित जीवन शैली: आयाम एवं युक्तियाँ	१६/३/२०१६–१७/३/२०१६	शिक्षा विभाग श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
13	श्री मनोज कुमार मीणा	शिक्षाशास्त्र	राष्ट्रीय सम्मेलन (प्रतिभाग)	"The sisupalvadha of magha :A multifarious treatise"	१२/२/२०१६–१४/२/२०१६	साहित्य विभाग श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
			राष्ट्रीय संगोष्ठी (पत्र प्रस्तुति)	Health education Programme in school	१६/३/२०१६–१७/३/२०१६	शिक्षा विभाग श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
14	डॉ. रामराज उपाध्याय	वेद-वेदांग (पौरोहित्य)	राष्ट्रीय संगोष्ठी	विश्व सांस्कृतिक महोत्सव	११–१३/३/१६	आर्ट ऑफ लिविंग
			राष्ट्रीय संगोष्ठी		१२/११/१५	भारतीय पुरातत्व विभाग (परिषद)
			राष्ट्रीय संगोष्ठी	संशययस्तद्विच्छेर वाद संगोष्ठी	७/११/१५	श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
			राष्ट्रीय संगोष्ठी	पं. मोती नाथ शास्त्री स्मारक व्याख्यान माला	२८/६/१५	भारतीय पुरातत्व परिषद
			राष्ट्रीय संगोष्ठी	द्विदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी	११/१२/१५	शंकर शिक्षायतन दिल्ली
			अन्तराष्ट्रीय संगोष्ठी	अन्तराष्ट्रीय संस्कृत सेमिनार	७–६/२/१६	सोमनाथ संस्कृत विश्वविद्यालय, गुजरात
			संगोष्ठी	त्रिदिवसीय दर्शन संगोष्ठी	८/३/१६	श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
15	डॉ. वृन्दावन दाश	वेद-वेदांग (पौरोहित्य)	राष्ट्रीय संगोष्ठी	वेदे वर्णव्यवस्था	२/४/१५	श्री ज.स. विश्वविद्यालय, पुरी
			संगोष्ठी	वेद विभाग परिषत संगोष्ठी (शब्दस्वरूपम्)	३/४/१५	श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
			संगोष्ठी	वेदवेदाङ्ग परिषत संगोष्ठी	२३/४/१५	श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६

			संगोष्ठी	धर्मशास्त्र विभागीय संगोष्ठी	२२/१/१६	श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
			संगोष्ठी	उपनिषदां कर्ममूलकता	८–१०/३/१६	श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
			संगोष्ठी	मीमांसा दिशाकर्मप्रमेय स्वरूपम्	२१–२२/३/१६	श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
			संगोष्ठी	वर्णाश्रम व्यवस्थाया, प्रासङ्गिकखम्	२७–२६/३/१६	श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
			संगोष्ठी	द्विदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी	३१/३/१६	श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
			राष्ट्रीय संगोष्ठी	शिशुपालवध महाकाव्य	१२/४/१६	श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
16	डॉ. गोपाल प्रसाद शर्मा	वेद-वेदांग (वेद)	राष्ट्रीय संगोष्ठी	श्रुति एवं सवन का विश्लेषण	११–१२/१२/१५	श्री शंकर शिक्षायतन, दिल्ली
			राष्ट्रीय संगोष्ठी	वाजसनेय संहिता में वर्णित ओषधिस्तुति	७–६/३/१६	महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रिय वेद विद्या प्रतिष्ठान, वाराणसी
			राष्ट्रीय संगोष्ठी	मानमेयोदयदिशा प्रमेय तत्त्वविमर्श:	२१–२२/३/१६	श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
17	डॉ. रामाजुन उपाध्याय	वेद-वेदांग (वेद)	राष्ट्रीय कार्यशाला	तैत्तिरीय उपनिषद में लोकधर्म	२१–२५/११/१५	जे.एन. विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
			राष्ट्रीय संगोष्ठी	धर्मशास्त्रदृष्ट्यापंचमहा यज्ञानां स्वरूपम	३०/३/१६	श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
			राष्ट्रीय संगोष्ठी	ईश्वरविषये मीमांसकानां ताटस्थ्य विचार:	२१/३/१६	श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
			राष्ट्रीय संगोष्ठी	संयोजक (सत्र)	२८–३०/३/१६	अखिल भारतीय सम्मेलन, दिल्ली संस्कृत अकादमी
			विश्व संस्कृत मेला	वेदपाठ	११–१३/३/१६	आर्ट ऑफ लिविंग, नई दिल्ली

18	डॉ. देवेन्द्र प्रसाद मिश्र	वेद-वेदांग (वेद)	राष्ट्रीय संगोष्ठी	श्रीमद्वाल्मीकीयरामायणे वर्णितविवाहसंस्कारस्य विमर्श:	३०–३१/३/१६	धर्मशास्त्र विभाग, श्री ला.बा.शा.रा. सं. विद्यापीठ, नई दिल्ली
			राष्ट्रीय संगोष्ठी	प्राकृत भाषा में वैदिक संस्कृत के तत्व	२६/३/१६	प्राकृत भाषा विभाग, श्री. ला. बा.शा.रा.सं. विद्यापीठ, नई दिल्ली
			राष्ट्रीय संगोष्ठी	वेदावतारो रामायण श्री रामचन्द्रश्च	२१–२२/३/१६	श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
			राष्ट्रीय संगोष्ठी	सामाजिक परिप्रेक्ष्य में मानसिक स्वास्थ्य का वैदिक विश्लेषण	१६–१७/३/१६	शिक्षाशास्त्र विभाग, श्री ला. बा.शा.रा.सं विद्यापीठ, नई दिल्ली
			सम्मेलन	Vedapatha World Culture Festival	११–१३/३/१६	आर्ट ऑफ लिविंग
			राष्ट्रीय संगोष्ठी	उपनिषत्सु जीवन दर्शन तत्प्रयोग-विधानञ्च	८–१०/३/१६	भारतीय दार्शनिकानुसन्धान परिषद: एवं श्री ला.बा.श.रा.सं. विद्यापीठ, नई दिल्ली
			अन्तराष्ट्रिय संस्कृत संगोष्ठी	यजुर्वेदे शिवतत्त्व विस्तृति	७–६/२/१६	श्री सोमनाथ संस्कृत विश्वविद्यालय, वेरावल, गुजरात
			कार्यशाला	योग विज्ञान प्रशिक्षण शिविर	१५–२२/३/१६	योग विज्ञान केन्द्र, श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
19	डॉ. सुन्दर नारायण झा	वेद-वेदांग (वेद)	राष्ट्रिय संगोष्ठी	मानवाधिकारे वैदिवाङ्मयस्या वदानम्	२७/६/१५	का.सि.द.स.वि.वि, दरभंगा, बिहार
			राष्ट्रिय संगोष्ठी	अन्तरिक्ष नाड़ी का अंशा. विभाग	७/११/१५	शं. शिक्षायतन न्यास, दिल्ली
			राष्ट्रिय संगोष्ठी	भविष्यपुराणोत्क सृष्टि विज्ञान	२२/११/१५	भा.पु.आ.संस्थान,

						दिल्ली
			सम्मेलन	पुराणेषु कुम्भस्थलवर्णनम्	२७–२६/११/१५	उ.सं.अका. हरिद्वार
			राष्ट्रिय संगोष्ठी	स्वरितस्वर एवं स्वरोहवणिका	११–१२/१२/१५	सं. शिक्षा न्यास, दिल्ली
			वेद महोत्सव	वेदों में सामाजिक समरसता	५–७/२/१६	अहि. समिति. इन्दौर
			सम्मेलन	वैदिक साहित्ये शिवतत्वचिन्तनम्	७–६/२/१६	श्री. सोमनाथ संस्कृत विश्वविद्यालय, गुजरात
			राष्ट्रिय संगोष्ठी	ईशावास्योपनिषद्विमर्श:	८–१०/३/१६	श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
			सम्मेलन	वेदों में विधिव्यवस्था	१६–२१/३/१६	श्री रा.कृ. वेदवि. प्रयोग
			राष्ट्रिय संगोष्ठी	पुंसवनसंसकास्म वैज्ञानिक महत्वम्	३०–३१/३/१६	श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
20	प्रो. देवी प्रसाद त्रिपाठी	वेद-वेदांग वास्तुशास्त्र	कार्यशाला	सिंहस्थ गुरु में होने वाले मांगलिक कार्य एवं गुरु के गोचरीय प्रभाव	१२/७/१५	माथुर चतुर्वेद संस्कृत महा विद्यालय, मथुरा
			कार्यशाला	दिल्लीप्रदेशे गुरुकुलानां च स्थिति: तेषामुन्नस्योपायाश्च	१७/७/१५	दिल्ली संस्कृत अकादमी, दिल्ली
			कार्यशाला	दिल्लीप्रदेशे सामान्यविद्यालयेषु संस्कृत विद्यालयेषु च संस्कृतशिक्षाया: स्थिति:	७/६/१५	दिल्ली संस्कृत अकादमी, दिल्ली
			कार्यशाला	ज्योतिष में योगों का महत्व	१३/६/१५	दिल्ली संस्कृत अकादमी, दिल्ली
			कार्यशाला	पौराणिक सृष्टिविज्ञान	२२/११/१५	भा.पु.आ.संस्थान, दिल्ली
			कार्यशाला	वास्तुविन्यास एवं शुभाशुभ विश्लेषण	२८/११/१५	रा.स.स, भोपाल परिसर, भोपाल

			कार्यशाला	सम्वत 2073 के विद्यापीठ पञ्चाङ्ग की व्रत पर्व निर्णय	२२–२४/७/१५	श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
			कार्यशाला	सम्वत 2073 के भोजराज पञ्चाङ्ग की व्रत पर्व निर्णय	३०/११/१५	रा.स.स, भोपाल परिसर, भोपाल
			रेडियो प्रोग्राम	सिंहस्थगुरोर्विचार:	१७/७/१५	आकाशवाणी, इन्द्रप्रस्थ, दिल्ली
			रेडियो प्रोग्राम	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी और समाज	५/६/१५	आकाशवाणी, इन्द्रप्रस्थ, दिल्ली
			रेडियो प्रोग्राम	गंगा की स्वच्छता एवं स्नान का महत्त्व	२२/११/१५	आकाशवाणी, इन्द्रप्रस्थ, दिल्ली
21	डॉ. यशवीर सिंह	वेद-वेदांग (धर्मशास्त्र)	कार्यशाला	धर्मशास्त्रीय संस्कारणा वैज्ञानिक परिशीलनम्	३०–३१/३/२०१६	श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
			कार्यशाला	पञ्चाङ्ग निर्माण	२२–२४/७/१५	श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
22	डॉ. सुधांशु भूषण पाण्डा	वेद-वेदांग (वेद)	कार्यशाला	पञ्चाङ्ग निर्माण	२२–२४/७/१५	श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
			कार्यशाला	ई.पी.जी. पाठशाला	८–६/८/१५	श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
			राष्ट्रिय संगोष्ठी	महति देवता ह्येषा नररूपेण तिष्ठति	१६–२१/१२/१५	राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, दिल्ली
			राष्ट्रिय संगोष्ठी	धर्मलक्षणनिर्वचने पाश्चात्यविदुषामभिमत म्	२७–२६/१/१६	राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ, तिरूपति
			राष्ट्रिय संगोष्ठी	शिशुपालवधमहाकाव्ये धर्मतत्त्वम्	१२–१४/२/१६	श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
			राष्ट्रिय संगोष्ठी	धर्मशास्त्रे दर्शनशास्त्राणां चर्चा	८–१०/३/१६	श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
			राष्ट्रिय संगोष्ठी	कर्णवेधसंस्कारस्य वैज्ञानिक समीक्षणम्	३०–३१/३/१६	श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
23	प्रो. कमला भारद्वाज	वेद-वेदांग (व्याकरण)	राष्ट्रिय संगोष्ठी	प्राचीनाचार्याणांमते स्फोटवाद:	८–१०/३/१६	श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
			राष्ट्रिय संगोष्ठी	गीताया!	२८–३०/३/१६	दिल्ली संस्कृत

				कर्मयोगस्यप्रासंगिकत्वम्		अकादमी, दिल्ली
			राष्ट्रिय संगोष्ठी	पातञ्जकमते संस्काराणां वैज्ञानिक परिशीलनम्	३०–३१/३/१६	श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
24	डॉ. सुजाता त्रिपाठी	वेद-वेदांग (व्याकरण)	राष्ट्रिय संगोष्ठी	"The sisupalvadha of magha :A multifarious treatise"	१२–१४/२/१६	श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
			राष्ट्रिय संगोष्ठी	व्याकरणदर्शने स्फोट विमर्श:	२१–२२/३/१६	श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
			राष्ट्रिय संगोष्ठी	शब्दशक्ति विमर्श:	८–१०/३/१६	श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
			राष्ट्रिय संगोष्ठी	अखिल भारतीय संस्कृत सम्मेलन	२८–३०/३/१६	दिल्ली संस्कृत अकादमी, दिल्ली
			राष्ट्रिय संगोष्ठी	पाणिनीयव्याकरणे संस्कार समन्वय:	३०–३१/३/१६	श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
			कार्यशाला	राष्ट्रीय शोध प्रविधि	२२/२/१६ – ४/३/१६	श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
25	डॉ. राम सलाही द्विवेदी	वेद-वेदांग (व्याकरण)	कार्यशाला	शोध प्रविधि	२२/२/१६– ४/३/१६	श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
			राष्ट्रिय संगोष्ठी	संस्कृतवाङ्मये शिवतत्वम्	७/६/२६१६	श्री सोमनाथ संस्कृत विश्वविद्यालय, गुजरात
			राष्ट्रिय संगोष्ठी	वर्णसमीक्षा	११–१२/१२/१५	भा.पु.आ.संस्थान, दिल्ली
			राष्ट्रिय संगोष्ठी	आगमसन्दर्भे पाणिनीयव्याकरणम्	२८–३०/३/१६	दिल्ली संस्कृत अकादमी, दिल्ली
			राष्ट्रिय संगोष्ठी	पाणिनीयव्याकरणस्य वैदिकत्वम्	१४–१५/३/१६	राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, इलाहबाद
			राष्ट्रिय संगोष्ठी	भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद		श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
			राष्ट्रिय संगोष्ठी	"The sisupalvadha of magha :A multifarious treatise"	१२–१४/२/१६	श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
			राष्ट्रिय संगोष्ठी	धर्मशास्त्र राष्ट्रीय संगोष्ठी	३०–३१/३/१६	श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ

						नई दिल्ली–१६
26	डॉ. दयाल सिंह	वेद-वेदांग (व्याकरण)	कार्यशाला	शोधविज्ञानं पाण्डुलिपिविज्ञानं च	२२/२/१६ – ४/३/१६	श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
			राष्ट्रिय संगोष्ठी	पं मोतीलाल शास्त्री स्मारक व्याख्यानमाला	२८/६/१५	श्री शंकर शिक्षायतन कॉलेज
			राष्ट्रिय संगोष्ठी	उपासनावाद	७/११/१५	श्री शंकर शिक्षायतन कॉलेज
			राष्ट्रिय संगोष्ठी	ब्रह्मवैवर्तपुराण में सृष्टिविमर्श	२२/११/१५	भा.पु.आ.संस्थान, दिल्ली
			राष्ट्रिय संगोष्ठी	वागुत्पत्तिविमर्श	११/१२/१५– १२/१२/१५	श्री शिक्षायतन कॉलेज एवं भारतीय पुरातत्त्व परिषद
			राष्ट्रिय संगोष्ठी	विकलांग महिलायें चुनौतियां और संभावनायें	२२–२४/२/१६	श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
			राष्ट्रिय संगोष्ठी	अष्टाध्याय्यां दार्शनिक-स्त्रोतांसि	२८–३०/३/१६	दिल्ली संस्कृत अकादमी, दिल्ली
			राष्ट्रिय संगोष्ठी	नामकरण-संस्कार: तद्विषये शाब्दिकानामभिमतम्	३१/३/१६	श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
27	प्रो. एस.एन. रमामणि	दर्शन (अद्वैत-वेदान्त)	राष्ट्रिय संगोष्ठी	लिंग संवेदीकरण	२५–२७/२/१६	श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
			राष्ट्रिय संगोष्ठी	राष्ट्रीय दर्शन संगोष्ठी	८–१०/३/१६	श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
			राष्ट्रिय संगोष्ठी	राष्ट्रीय दर्शन संगोष्ठी	२१–२२/३/१६	श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
			राष्ट्रिय संगोष्ठी	शंकराचार्यस्य स्तोत्रसाहित्यम्	२८–३०/३/१६	दिल्ली संस्कृत अकादमी, दिल्ली
28	प्रो. शुद्धानन्द पाठक	दर्शन (अद्वैत-वेदान्त)	राष्ट्रिय संगोष्ठी	अखिल भारतीय संस्कृत सम्मेलन	२८–३०/३/१६	दिल्ली संस्कृत अकादमी, दिल्ली
			राष्ट्रिय संगोष्ठी	राष्ट्रीय दर्शन संगोष्ठी	८–१०/३/१६	श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
			राष्ट्रिय संगोष्ठी	राष्ट्रीय दर्शन संगोष्ठी	२१–२२/३/१६	श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
29	डॉ. सतीश के. एस	दर्शन (अद्वैत-वेदान्त)	राष्ट्रिय संगोष्ठी	अद्वीतमतखण्डने विशिष्टाद्वैतमतविमर्श	८–१०/३/१६	श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
			राष्ट्रिय संगोष्ठी	पंज्जीकरणे	२१–२२/३/१६	श्री ला.ब.शा.रा.

				भामतीमतविमर्श:		संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
30	डॉ. अनेकान्त कुमार जैन	दर्शन (जैनदर्शन)	राष्ट्रिय संगोष्ठी	जैन जनसंख्या विमर्श	२–४/१०/१५	श्री दिगंबर जैन श्रमण संस्कृति संस्थान
			राष्ट्रिय संगोष्ठी	सल्लेखना और ध्यान	२३/१०/१५	श्री दिगंबर जैन श्रमण संस्कृति संस्थान
			राष्ट्रिय संगोष्ठी	सामाजिक जीवन में अहिंसा की उपयोगिता	३/३/१६	कुंदकुंद ज्ञानपीठ, इंदौर
			राष्ट्रिय संगोष्ठी	सम्यग्दर्शन	८–१०/३/१६	श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
			राष्ट्रिय संगोष्ठी	लघीयस्त्रये प्रमेयविमर्श:	२१–२३/३/१६	श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
			राष्ट्रिय संगोष्ठी	प्राकृत मुक्तक साहित्य में परमात्म प्रकाश का स्थान एवं महत्व	२६/३/१६	श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
			राष्ट्रिय संगोष्ठी	जैन संस्कारों में अष्टमूलगुणों का विकास	३०–३१/३/१६	श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
			राष्ट्रिय संगोष्ठी	जैन योग परंपरा में मनोगुप्ति	३०/३/१६	दिल्ली संस्कृत अकादमी, दिल्ली
31	डॉ. कुलदीप	दर्शन (जैनदर्शन)	कार्यशाला	योग प्रशिक्षण शिविर	१५–२२/३/१६	श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
			राष्ट्रिय संगोष्ठी	जैन साहित्य समारोह	४–७/२/१६	श्री महावीर जैन विद्यालय, सोनगढ़, गुजरात
			राष्ट्रिय संगोष्ठी	“The sisupalvadha of magha :A multifarious treatise”	१२–१४/२/१६	श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
			राष्ट्रिय संगोष्ठी	जैन संस्कृत कथा साहित्ये जीवन भूत्यानि	८–१०/३/१६	श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
			राष्ट्रिय संगोष्ठी	जैन दर्शने	२१–२२/३/१६	श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
			राष्ट्रिय संगोष्ठी	परमात्मप्रकाश में दार्शनिक अवधारणा	२६/३/१६	श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
			राष्ट्रिय संगोष्ठी	जैन दर्शने सूत्रदोष विमर्श:	२८–३०/३/१६	दिल्ली संस्कृत अकादमी, दिल्ली

			राष्ट्रिय संगोष्ठी	आधुनिक जीवन शैली समस्या एवं समाधान	१६–१७/३/१६	श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
			राष्ट्रिय संगोष्ठी	धर्मशास्त्रीय संस्कार रात्रिभोजनत्याग का वैज्ञानिक परिशीलन	३०–३१/३/१६	श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
32	प्रो. वीर सागर जैन	दर्शन (जैनदर्शन)	राष्ट्रिय संगोष्ठी	जैनदर्शन में संशय का स्वरूप	१२/६/१५	श्री शिक्षायतन कॉलेज
			राष्ट्रिय संगोष्ठी	Keynote Address	१७/१/१६	जैन विद्या शोध संस्थान, कोल्हापुर
			राष्ट्रिय संगोष्ठी	जयधवला: एक अनुशीलन	४–६/२/१६	जैन साहित्य समारोह, सोनगढ़, गुजरात
			कार्यशाला	सल्लेखना का स्वरूप व प्रासंगिका	१६/२/१६	ISJS, New Delhi
			राष्ट्रिय संगोष्ठी	Chaired	८–१०/३/१६	श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६ एवं आई.सी.पी.आर
			राष्ट्रिय संगोष्ठी	धर्म और पर्यावरण	२८–३०/३/१६	दिल्ली संस्कृत अकादमी, दिल्ली
33	प्रो. केदार प्रसाद परोहा	दर्शन (विशिष्टाद्वैत -वेदान्त)	राष्ट्रिय संगोष्ठी	विशिष्टाद्वैतसिद्धान्ते जीवविचार	८–१०/३/१६	श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
			राष्ट्रिय संगोष्ठी	विशिष्टाद्वैतसिद्धान्ते ज्ञानप्रपत्तिविचार	२१–२२/३/१६	श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
			राष्ट्रिय संगोष्ठी	भागग्रहण	४/६/१५	श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
34	डॉ. के. अनन्त	दर्शन (विशिष्टाद्वैत -वेदान्त)	राष्ट्रिय संगोष्ठी	श्रीवेदान्तदेशिकाना महत्त्वम्	८–१०/३/१६	श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
			राष्ट्रिय संगोष्ठी	विशिष्टाद्वैतनये प्रमेयनिरूपमणम्	२१–२२/३/१६	श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
			राष्ट्रिय संगोष्ठी	भागग्रहण	४/६/१५	श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
			राष्ट्रिय संगोष्ठी	योग प्रशिक्षण शिविर	१५–२२/३/१६	श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
			राष्ट्रिय संगोष्ठी	भागग्रहण एवं पत्र प्रस्तुति	२८.३०६३६१६	दिल्ली संस्कृत अकादमी, दिल्ली
			राष्ट्रिय संगोष्ठी	मानसिक एवं शारीरिक	१६–१७/३/१६	श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ

				स्वास्थ्य के उन्नयन में शैक्षिक संस्थाओं की भूमिका		नई दिल्ली–१६
			राष्ट्रिय संगोष्ठी	उपनयनसंस्कारस्य वैज्ञानिकत्वम्	३०–३१/३/१६	श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
35	डॉ. सुदर्शनन्. एस.	दर्शन (विशिष्टाद्वैत -वेदान्त)	राष्ट्रिय संगोष्ठी	रामानुजरामानन्द दर्शनयो: ध्येयज्ञेयादिभेदविचार:	८–१०/३/१६	श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
			राष्ट्रिय संगोष्ठी	विशिष्टाद्वैतदर्शने मोक्षहेतुनिरूपणम्	२१–२२/३/१६	श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
			राष्ट्रिय संगोष्ठी	भागग्रहण	४/६/१५	श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
			राष्ट्रिय संगोष्ठी	भागग्रहण एवं पत्र प्रस्तुति	२८–३०/३/१६	दिल्ली संस्कृत अकादमी, दिल्ली
			अन्तर्राष्ट्रिय संगोष्ठी	भागग्रहण-विशिष्टाद्वैतवेदान्त सम्मत प्रमाणविचार पर विशिष्ट व्याख्यान	२७–३०/१२/१५	विशिष्ट संस्कृत अध्ययन केन्द्र, जे.एन.यू, नई दिल्ली
			राष्ट्रिय संगोष्ठी	श्रीभाष्यदिशा संस्कारशब्दार्थ: उपनयनसंस्कारस्य वैज्ञानिकता च	३०–३१/३/१६	श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
36	डॉ. विष्णुपद महापात्र	दर्शन (न्याय वैशेषिक)	राष्ट्रिय संगोष्ठी	संशयतदुच्छेदवाद के आलोक में प्रत्यभाव की अवधारणा	१२/६/१५	श्री शिक्षायतन कॉलेज एवं भारतीय पुरातत्त्व परिषद
			राष्ट्रिय संगोष्ठी	वर्ण समीक्षा ग्रन्थ के सन्दर्भ में वाक्य विचार	११–१२/१२/१५	श्री शिक्षायतन कॉलेज एवं भारतीय पुरातत्त्व परिषद
			राष्ट्रिय संगोष्ठी	वर्ण व्यवस्था आधुनिक समाजश्च	२७.२६६१६१६	राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ, तिरूपति
			राष्ट्रिय संगोष्ठी	माघकाव्ये न्यायशास्त्रम्	१२–१४/२/१६	श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
			राष्ट्रिय संगोष्ठी	न्यायशास्त्रे भासर्वक्षस्य योगदान वैशिष्ट्यञ्च	८–१०/३/१६	श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६ एवं आई.सी.पी.आर, दिल्ली
			राष्ट्रिय संगोष्ठी	वेदेषु वैज्ञानिकतत्त्वचिन्तनम्	११–१३/३/१६	राजकीय संस्कृत महाविद्यालय
			राष्ट्रिय संगोष्ठी	न्यायवैशेषिकदर्शने अपवर्गप्रमेयविचार	२१–२२/३/१६	श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ

						नई दिल्ली–१६
			राष्ट्रिय संगोष्ठी	आत्मप्रमेयविचार	२८–३०/३/१६	दिल्ली संस्कृत अकादमी
			राष्ट्रिय संगोष्ठी	निवाहसंस्कारस्य वैज्ञानिकत्वम्	३०–३१/३/१६	श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
			कार्यशाला	योग प्रशिक्षण शिविर	१५–२२/३/१६	श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
37	डॉ. महानन्द झा	दर्शन (न्याय वैशेषिक)	राष्ट्रिय संगोष्ठी	प्रत्यक्षप्रमाण विमर्श-संशय तडुच्छरेवार ग्रन्थ के आलोक में	१२/६/१५	श्री शिक्षायतन कॉलेज एवं भारतीय पुरातत्त्व परिषद
			राष्ट्रिय संगोष्ठी	स्वर्गभरेनिरूपण संशय तडुच्छरेवाद के आलोक में	७/११/१५	श्री शिक्षायतन कॉलेज
			राष्ट्रिय संगोष्ठी	वर्णसमीक्षा में विज्ञान	११–१२/१२/१५	श्री शिक्षायतन कॉलेज एवं भारतीय पुरातत्त्व परिषद
			राष्ट्रिय संगोष्ठी	The concept of Nishedh Anuplabdhi and Abhava	१३/१/१६	आई.सी.पी.आर, दिल्ली
			राष्ट्रिय संगोष्ठी	अधिमिथिसं न्यायविद्या, विद्यावतारो धीरन्त	८–१०/३/१६	श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
			राष्ट्रिय संगोष्ठी	न्याय प्रमेयं मन:	२१–२२/३/१६	श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
			राष्ट्रिय संगोष्ठी	सामान्यस्वरूपविषये दार्शनिकमतचिन्तनम्	२८–३०/३/१६	दिल्ली संस्कृत अकादमी, दिल्ली
			राष्ट्रिय संगोष्ठी	मिथिलाभूमो अक्षरा म्मविधि: वैज्ञानिक त्वञ्च	३०–३१/३/१६	श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
38	डॉ. रामचन्द्र शर्मा	दर्शन (न्याय वैशेषिक)	राष्ट्रिय संगोष्ठी	ईश्वरवाद विमर्श अंशय तदुच्छेवाद के परिप्रेक्ष्य में	१२/६/१५	श्री शिक्षायतन कॉलेज एवं भारतीय पुरातत्त्व परिषद
			राष्ट्रिय संगोष्ठी	श्रीमद्भागवतपुराणे सृष्टिविमर्श	२२/११/१५	भारतीय पुरातत्त्व परिषद
			राष्ट्रिय संगोष्ठी	वर्णसमीक्षा के सन्दर्भ में वाक्य स्वरूप	११/१२/१५	श्री शिक्षायतन कॉलेज एवं भारतीय पुरातत्त्व परिषद
			राष्ट्रिय संगोष्ठी	न्यायदर्शने जयन्त भटस्थ योगदानम्	६/३/१५	श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६ एवं

						भा.पु.आ.संस्थान, दिल्ली
			राष्ट्रिय संगोष्ठी	शिक्षा उद्देश एवं विधेय एवं स्वरूप	१६/३/१५	श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
			राष्ट्रिय संगोष्ठी	न्यायवैशेषिक दर्शने प्रमेयतत्त्व विज्ञानम्	२१/३/१६	श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
			राष्ट्रिय संगोष्ठी	धर्मशास्त्रीय संस्कार वैज्ञानिकता	३०/३/१६	श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
39	डॉ. जवाहर लाल	दर्शन (सर्वदशन)	राष्ट्रिय संगोष्ठी	आचार्यमधुसूदनओझा की दृष्टि में स्यादवाद	१२/६/१६	श्री शिक्षायतन कॉलेज
			राष्ट्रिय संगोष्ठी	विष्णुपुरकाण में सृष्टि	२२/११/१५	श्री शिक्षायतन कॉलेज
			राष्ट्रिय संगोष्ठी	छत्तीसगढ के विकास में सरगुजा के आदिवासीमहिलाओं का योगदानम्	२२–२४/२/१६	श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
			राष्ट्रिय संगोष्ठी	अद्वैतवेदान्ते दृक्स्वरूपम्	२१–२२/३/१६	श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
			राष्ट्रिय संगोष्ठी	शैवविशिष्टाद्वैतदर्शने ब्रह्मस्वरूपप्रतिपादनम्	८–१०/३/१६	श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
			राष्ट्रिय संगोष्ठी	वैदिकसाहित्य और मानवाधिकार	३०–३१/३/१६	मोतीलाल नेहरू कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
			राष्ट्रिय संगोष्ठी	वैश्विकपरिप्रेक्ष्ये संस्काराणामुपादेयता	३१/३/१६	श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
40	डॉ. शीतला प्रसाद शुक्ल	साहित्य एवं संस्कृति पुराणेतिहास	राष्ट्रिय संगोष्ठी	“The sisupalvadha of magha :A multifarious treatise”	१३/२/१६	श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६
			राष्ट्रिय संगोष्ठी	वैदिक वाङमय में शिव तत्त्व		दार्शनिक अनुसंधान परिषद्
41	प्रो. जयकुमार एन. उपाध्ये	साहित्य एवं संस्कृति (प्राकृत)	राष्ट्रिय संगोष्ठी	वज्जालग्गं मुक्तकाव्य का साहित्यिक मूल्य एवं वैशिष्टय	२६/३/१६	श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली–१६

विद्यापीठ के अधिकारी

1.	कुलाधिपति	न्यायमूर्ति डॉ. मुकुन्दकाम शर्मा
2.	कुलपति	प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय कुलपति
3.	आधुनिक ज्ञान विज्ञान संकाय प्रमुख	प्रो. रमेश प्रसाद पाठक
4.	वेद-वेदांग-संकाय प्रमुख	प्रो. हरिहर त्रिवेदी
5.	दर्शन संकाय प्रमुख	प्रो. महेश प्रसाद सिलोड़ी
6.	साहित्य एवं संस्कृति संकाय प्रमुख,	प्रो. भागीरथि नन्द
7.	छात्र कल्याण अधिष्ठाता	प्रो. कमला भारद्वाल
8.	कुलसचिव	डॉ. बीके महापात्र
9.	वित्ताधिकारी	श्रीमती कल्पना सिंह
10.	कुलानुशासक	प्रो. प्रेम कुमार शर्मा

कार्यालयीय अधिकारी एवं कर्मचारी वर्ग

➢ कुलपति कार्यालय

1.	श्री प्रमोद चतुर्वेदी	-	निजी सचिव (कुलपति)
2.	श्री अमरजीत सिंह	-	स्टाफ कार चालक
3.	श्री मनीष अरोड़ा	-	कनिष्ठ लिपिक
4.	श्री मथुरा प्रसाद	-	एम. टी. एस.
5.	श्री राजकुमार	-	एम. टी. एस.
6.	श्री विरेन्द्र	-	एम. टी. एस.

➢ कुलसचिव कार्यालय

1.	श्रीमती सुषमा	-	सहायक कुलसचिव (विकास) एवं विशेष कार्याधिकारी (कुलसचिव)
2.	श्री मंजीत सिंह	-	अनुभाग अधिकारी
3.	श्री गंगाधर मुदली	-	एम. टी. एस.
4.	श्रीमती रूचिका भटनागर	-	एम. टी. एस.

➢ प्राशासनिक अनुभाग

1.	डॉ. दिनेश	-	उप-कुलसचिव (प्रशासन)
2.	डॉ. शिवदत्त त्रिपाठी	-	विशेष कार्याधिकारी (प्रशासन)
3.	श्री पी. मरियप्पन	-	सहायक कुलसचिव (प्रशासन)
4.	श्री विपिन कुमार त्रिपाठी	-	अनुभाग अधिकारी (प्रशासन)
5.	श्री अशोक कुमार	-	वरिष्ठ लिपिक

6.	श्रीमती प्रीति यावद	–	वरिष्ठ लिपिक
7.	श्री तिलक राज	–	वरिष्ठ लिपिक
8.	श्रीमती ललिता यादव	–	कनिष्ठ लिपिक
9.	श्री श्रीनाथ	–	कनिष्ठ लिपिक
10.	श्री शम्भु दत्त	–	पाचक
11.	श्री भीम कुमार	–	एम. टी. एस.
12.	श्री श्रवण कुमार	–	एम. टी. एस.
13.	श्री पंकज	–	एम. टी. एस.
14.	श्री उपराप्पली कुमार स्वामी	–	एम. टी. एस.
15.	श्री मनीष जैरथ	–	एम. टी. एस.
16.	श्री बिनोद कुमार नाथ	–	एम. टी. एस.

➢ शैक्षणिक अनुभाग

1.	श्री सुच्चा सिहं	–	सहायक कुलसचिव (शैक्षणिक)
2.	डॉ. विजय लक्ष्मी	–	अनुभाग अधिकारी (शैक्षणिक)
3.	श्री राजकुमार	–	सहायक
4.	श्रीमती वन्दना	–	सहायक
5.	श्रीमती रानी पंवार	–	सहायक
6.	श्री सुरेन्द्र नागर	–	तकनीकी सहायक
7.	श्री सुदामा राम	–	वरिष्ठ लिपिक
8.	श्री महेन्द्र सिंह	–	वरिष्ठ लिपिक
9.	श्री धर्मेन्द्र	–	वरिष्ठ लिपिक
10.	कु. प्रतिभा यादव	–	कनिष्ठ लिपिक
11.	श्री लाली सहानी	–	एम. टी. एस.
12.	श्री रमेश गहलोट	–	एम. टी. एस.
13.	श्री सुन्दर पाल	–	एम. टी. एस.
14.	श्री मुनीश चन्द बडोला	–	एम. टी. एस.

➢ वित्त विभाग एवं लेखा विभाग

1.	श्री अजय कुमार टण्डन	–	उप-कुलसचिव (लेखा)
2.	श्री बालम सिंह गुसाई	–	अनुभाग अधिकारी
3.	श्री दिनेश कुमार	–	निजी सचिव
4.	श्री राकेश कुमार काण्डपाल	–	सहायक
5.	श्री संजीव सिंह चौहान	–	वरिष्ठ लिपिक
6.	श्री रमेश कुमार	–	कनिष्ठ लिपिक
7.	श्री राम मिलन	–	एम. टी. एस.
8.	श्री दया चन्द	–	एम. टी. एस.

➢ परीक्षा-विभाग

1.	डॉ. कान्ता	–	सहायक कुलसचिव (परीक्षा)
2.	श्री विपिन कुमार त्रिपाठी	–	सांख्यिकी अधिकारी
3.	श्रीमती रजनी संजोत्रा	–	सहायक
4.	श्रीमती सावित्री	–	सहायक
5.	श्री रामकुमार	–	एम. टी. एस.
6.	श्री पिंटू बनर्जी	–	एम. टी. एस.

➢ विकास-अनुभाग

1.	श्रीमती सुषमा	–	सहायक कुलसचिव (विकास)
2.	श्रीमती ललिता	–	सहायक
3.	श्री महेश	–	वरिष्ठ लिपिक
4.	श्री दिनेश चन्द्र	–	एम. टी. एस.

➢ पुस्तकालय

1.	श्री राजेश कुमार पाण्डेय	–	सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष
2.	श्रीमती उमा नौटियाल	–	प्रोफेशनल सहायक
3.	श्रीमती अनिता जोशी	–	प्रोफेशनल सहायक
4.	श्री नवीन राजपूत	–	प्रोफेशनल सहायक
5.	श्रीमती भावना	–	सेमी प्रोफेशनल सहायक
6.	श्री सुनील कुमार मिश्र	–	सेमी प्रोफेशनल सहायक
7.	श्री शशिभूषण	–	सेमीप्रोफेशनल सहायक
8.	श्री बलराम सिंह	–	पुस्तकालय परिचर
9.	श्री राजेन्द्र सिंह	–	पुस्तकालय परिचर
10.	श्री सुनील कुमार	–	पुस्तकालय परिचर
11.	श्री महेन्द्र जंगापल्ली	–	पुस्तकालय परिचर
12.	श्री गिरीश पंत	–	एम. टी. एस.

➢ अभियान्त्रिकी अनुभाग

1.	श्री रमाकान्त उपाध्याय	–	कार्यपालक अभियन्ता
2.	श्री अंजनी कुमार	–	सहायक अभियन्ता
3.	श्री नरेन्द्र पाल	–	कनिष्ठ अभियन्ता
4.	श्री बिजेन्द्र सिंह राणा	–	पम्प आपरेटर
5.	श्री अंशुमान गुर्नियाल	–	कनिष्ठ लिपिक
6.	श्री चन्द्रभूषण तिवारी	–	एम. टी. एस.
7.	श्री ईश्वर दीन	–	एम. टी. एस.
8.	श्री दया शंकर तिवारी	–	एम. टी. एस.

9.	श्री धीरज सिंह	–	एम. टी. एस.
10.	श्री संतोष कुमार पाण्डेय	–	एम. टी. एस.
11.	श्री नरेश	–	सफाई कर्मचारी
12.	श्री सतीश	–	सफाई कर्मचारी
13.	श्री राम अवतार	–	सफाई कर्मचारी
14.	श्री नवीन मच्छल	–	सफाई कर्मचारी

➢ संगणक केन्द्र

1.	श्री बनवारी लाल वर्मा	–	सिस्टम एडमिनिस्ट्रेटर
2.	श्रीमती सीमा चौधरी	–	असिस्टेंट प्रोग्रामर
3.	श्री ज्ञानचंद शर्मा	–	असिस्टेंट प्रोग्रामर

➢ शोध एवं प्रकाशन विभाग

1.	डॉ. ज्ञानधर पाठक	–	शोध सहायक
2.	श्री रमेश चन्द्र मीणा	–	एम. टी. एस.

➢ महिला अध्ययन केन्द्र

1.	डॉ. रजनी जोशी चौधरी	–	निदेशक (प्रभारी) एवं एसोसिएट प्रोफेसर
2.	श्रीमती सविता राय	–	शोध सहायक
3.	श्री नरेन्द्र महतो	–	एम. टी. एस.

➢ अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति प्रकोष्ठ

1.	श्री पी. मरियप्पन	–	सहायक कुलसचिव
2.	श्री विपिन कुमार त्रिपाठी	–	शोध एवं सांख्यकी अधिकारी